आर.एन.आई. नं. 3653/57
डाक पंजीयन संख्या RJ/JPC/M-018/2006-08
वर्ष : 65 ★ अंक : 8 ★ मूल्य : 10 रु.
15 अगस्त, 2008 ★ श्रावण सं. 2065

हिन्दी मासिक

जिनवाणी

नमस्कार महामंत्र

णमो अरिहंताणं
णमो सिद्धाणं
णमो आयरियाणं
णमो उवज्झायाणं
णमो लोए सव्वसाहूणं ॥
एसो पंच णमोक्कारो,
सव्व-पावप्पणासणो,
मंगलाणं च सव्वेसिं,
पढमं हवइ मंगलं ।

सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल जयपुर

मंगल-मूल, धर्म की जननी,
शाश्वत सुखदा कल्याणी।
द्रोह-मोह-छल-मान-मर्दिनी,
फिर प्रगटी यह 'जिनवाणी' ॥

परस्परोपग्रहो जीवानाम्

पीयें धोवन पानी, बोलें मीठी वाणी
यही कहे जिनवाणी।

रतनलाल सी.बाफना ज्वेलर्स

सोना • चांदी — **औरंगाबाद** | **जलगाँव** — हिरे • मोती

आकाशवाणी चौक, | सुभाष चौक,

☎ ०२४०-२२४४५२०,२२ | ☎ ०२५७-२२२५९०३,३९०३

Malhar - 08

औरंगाबाद शोरुम शनिवार छुट्टी। | जहाँ विश्वास ही परंपरा है। | जलगाँव शोरुम रविवार छुट्टी।

जिनवाणी हिन्दी-मासिक

मंगल-मूल, धर्म की जननी, शाश्वत सुखदा कल्याणी।
द्रोह-मोह-छल-मान-मर्दिनी, फिर प्रगटी यह 'जिनवाणी'।।

卐 संरक्षक

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ
घोड़ों का चौक, जोधपुर (राज.), फोन नं. 2636763

卐 संस्थापक

श्री जैन रत्न विद्यालय, भोपालगढ़

卐 प्रकाशक

प्रेमचन्द जैन, मंत्री-सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल
दुकान नम्बर 182-183 के ऊपर, बापू बाजार,
जयपुर-302003 (राज.),
फोन नं. 0141-2575997, फैक्स-0141-2570753

卐 सम्पादक

प्रो. (डॉ.) धर्मचन्द जैन
3 K 24-25, कुड़ी भगतासनी हाउसिंग बोर्ड
जोधपुर- 342005, फोन नं. 0291-2730081
E-mail : jinvani@yahoo.co.in

卐 सह-सम्पादक

नौरतन मेहता, जोधपुर

卐 भारत सरकार द्वारा प्रदत्त

रजिस्ट्रेशन नं. 3653/57
डाक पंजीयन सं. RJ/JPC/M-018/2006-08

卐 सदस्यता

स्तम्भ सदस्यता-रू.11000/- संरक्षक सदस्यता-रू.5000/
वार्षिक सदस्यता- रू. 50/- त्रिवर्षीय सदस्यता- रू.120/-
आजीवन सदस्यता देश में - रू. 500/-
विदेश में- रू. 5000/-
इस अंक का मूल्य रू. 10/-

परस्परोपग्रहो जीवानाम्

असंखयं जीविय मा पमायए,
जरोवणीयस्स हु नत्थि ताणं।
एवं वियाणाहि जणे पमत्ते,
कण्णू विहिंसा अजया गहिंति ।।१।।

— उत्तराध्ययन सूत्र 4.1

छोड़ प्रमाद, जुड़े ना जीवन,
बूढ़े जन का है त्राण नहीं।
यों जान प्रमादी हिंस्र असंयत,
लेंगे किसकी शरण कहीं।।१।।

अगस्त २००८
वीर निर्वाण संवत् २५३४
श्रावण २०६५

वर्ष ६५ अंक ८

मुद्रक : दी डायमण्ड प्रिण्टिंग प्रेस, मोतीसिंह भोमियों का रास्ता, जयपुर, फोन: 2562929

ड्राफ्ट 'जिनवाणी' जयपुर के नाम बनवाकर प्रकाशक के उपर्युक्त पते पर प्रेषित किया जा सकता है।

नोट : यह आवश्यक नहीं कि लेखकों के विचारों से सम्पादक या मण्डल की सहमति हो ।

विषयानुक्रम

सम्पादकीय -	आतंकवाद	-डॉ. धर्मचन्द जैन	५
अमृत-चिन्तन-	आगम-वाणी	-संकलित	९
	विचार-वारिधि	-आचार्यप्रवर श्री हस्तीमल जी म.सा.	१०
प्रवचन-	अहिंसा बिन नहीं कोई धर्म	-श्रद्धेय श्री यशवन्त मुनि जी म.सा.	११
	आगमवाणी तारणहार	-महासती श्री मुदितप्रभा जी म.सा.	१६
चिन्तन-	मंगलाचरण : एक चिन्तन	-आचार्य श्री देवेन्द्र मुनि जी म.सा.	२१
	श्रावक धर्म की पूर्वपीठिका - एक चिन्तन	-उपाध्याय श्री रमेशमुनि जी शास्त्री	२५
	क्या तंत्र-मंत्र में शक्ति नहीं है?	-श्री उदयमुनि जी म.सा.	३१
तत्त्व-चर्चा-	उपासकदशांग सूत्र से पायें तात्त्विक बोध (१२)		३६
	आओ मिलकर ज्ञान बढ़ाएँ (४४)	- श्री धर्मचन्द जैन	३९
दर्शन-	वस्तु की सामान्य-विशेषात्मकता	- श्री चिरंजीव अनेकान्त	४२
प्रेरक-प्रसंग-	धर्म-अधर्म	- श्री प्रवीण कुमार जैन	४४
	प्राणिरक्षा	- श्री अंकुश जैन	४७
युवा-स्तम्भ-	लोभ का सच	- श्री ऋषभराज बाफना	४५
अंग्रेजी स्तम्भ-	Namskāra Sūtra	*Dr. Priyadarshana Jain*	४८
धारावाहिक-	जम्बूकुमार (५१)	-जैन दिवाकर श्री चौथमल जी म.सा.	५१
उपन्यास-	भाई-बहन (१०)	-उपाध्याय श्री केवलमुनिजी म.सा.	५६
स्वास्थ्य विज्ञान-	पैरों का सन्तुलन : क्यों और कैसे	-डॉ. चंचलमल चोरडिया	६०
जीवन-व्यवहार-	कर्त्तव्य पालन : एक साधना	-डॉ. भीकमचन्द प्रजापति	६४
नारी-स्तम्भ-	माता-पिता का हम मानें उपकार	-सुश्री दिव्या डागा	६९
संस्मरण-	कृतज्ञ हूँ उनके प्रति	- श्री प्रेमचन्द जैन	७१
बाल-स्तम्भ-	राजा उदायन की क्षमा	-श्री सुभद्र मुनि जी महाराज	७६
कविता-	आओ! प्रत्याख्यान करें	-डॉ. दिलीप धींग	२४
	तीर्थंकर के बीस बोल	-श्री जशकरण डागा	५५
	जागो जैनियों आँखे खोलो	-श्री मोहन कोठारी 'विनर'	७२
विचार-	चिन्तन-कण	-श्री प्रेमचन्द कोठारी	१५
	जिनवाणी	-श्री नितेश नागोता	३०
	नवकार मंत्र की चूलिका	-श्री नवरतनमल डोसी	८०
संवाद-	समस्या-समाधान (१४)		७३
साहित्य समीक्षा-	नूतन-साहित्य	-डॉ. धर्मचन्द जैन	७९
समाचार विविधा-	समाचार संकलन		८३

सम्पादकीय

आतङ्कवाद

❖ डॉ. धर्मचन्द जैन

जयपुर में १३ मई, बैंगलोर में २५ जुलाई तथा अहमदाबाद में २६ जुलाई २००८ को एक के बाद एक आतंकी बम विस्फोटों ने सैकड़ों निर्दोषों की जीवन-लीला समाप्त कर दी और कइयों को घायल कर दिया जो अस्पतालों में जीवन के साथ संघर्ष कर रहे हैं। इससे देश में अशान्ति एवं दहशत का माहौल बन गया। सूरत, कर्नाटक एवं त्रिपुरा में भी विस्फोटक सामग्री बरामद हुई। मारवाड़ जंक्शन में भी तीन बम मिले। इन आतंकी घटनाओं से व्यापार, पर्यटन उद्योग आदि को गहरा धक्का पहुँचा है।

आतङ्क का तात्पर्य है भय एवं त्रास। प्राचीन साहित्य में रोग को भी आतङ्क कहा गया है, क्योंकि वह व्यक्ति को पीड़ित करता है। वर्तमान में हम आतङ्क एवं आतङ्कवाद शब्द का प्रयोग Terror and terrorism के अर्थ में करते हैं। ऐसी क्रिया जो दूसरे व्यक्ति में भय उत्पन्न करे एवं साथ ही अनिष्ट को जन्म दे वह आतङ्क है। आतङ्कग्रस्त व्यक्ति अपने को भयभीत अनुभव करता है। उसे जीवन एवं सुरक्षा खतरे में दिखाई देती है। इसके लघु रूप में परिवार में भी आतङ्क की घटनाएँ दृष्टिगोचर होती हैं। कभी उपद्रवी बालकों एवं तानाशाह सदस्यों में आतङ्क का लघुरूप दृष्टिगोचर होता है।

आतङ्क तब उत्पन्न होता है जब मानव अपनी माँग सहज रूप से पूरी कराने में समर्थ नहीं होता है। फिर वह आतङ्की बनकर स्वयं मर जाने या किसी को मार देने तक की धमकियाँ देता है। परिवार एवं समाज में ऐसे व्यक्ति से सब भयभीत रहते हैं, उसकी बात को मानकर वे उसके इशारों पर चलने लगते हैं। यह आतङ्क उत्पीड़न का बृहत् रूप है। इससे परिवार में सदैव भय एवं अशान्ति का वातावरण उत्पन्न होता है। तथापि इस आतङ्क पर तो कदाचित् घर के सदस्य शनैः शनैः मुक्ति पा सकते हैं, क्योंकि उसमें आतङ्की व्यक्ति आँखों के सामने होता है। कभी उसे धीर-धीरे संवेदनशील भी बनाया जा सकता है, किन्तु उन आतङ्कवादियों से मुक्ति कठिन है जो अदृश्य रहकर अपने विध्वंसक कार्यों को अंजाम देते हैं। उनका क्या लक्ष्य है, यह भी कई बार स्पष्टतः ज्ञात नहीं होता। दूसरी बात यह है ये आतङ्कवादी संगठित

होते हैं। इनका एक व्यापक जाल होता है। ये अपने अभियान या मिशन के प्रति समर्पित होते हैं, किन्तु मानवीय संवेदनाओं से शून्य होते हैं। आतङ्कवाद से जो लोग जुड़े होते हैं उन्हें समुचित रूप से प्रशिक्षित किया जाता है तथा इस तरह से उनका मस्तिष्क प्रक्षालन (Brain Wash) कर दिया जाता है कि उनके मन में एक ही प्रकार का विचार कार्य करता है। वे दूसरों के जीवन के प्रति तो असंवेदनशील होते ही हैं, किन्तु अपने जीवन की भी उन्हें कोई परवाह नहीं होती। भीड़ भरे स्थानों में पहुँचकर वे बम-विस्फोट कर निर्दोष प्राणियों की जीवन-लीला समाप्त कर देते हैं तथा स्वयं भी अपना जीवन दे देते हैं। हाँ, इस प्रकार के लोग एकाङ्गी होते हैं, उनका व्यापक सोच नहीं होता तथा जो कार्य हाथ में दिया जाता है उसे पूर्ण निष्ठा से सम्पन्न करते हैं। जैन दर्शन की भाषा में कहें तो ये अज्ञानी होते हैं। अज्ञानी व्यक्ति ही हिंसा में इस प्रकार प्रवृत्त होता है, सच्चा ज्ञानी किसी की हिंसा नहीं करता, जैसा कि सूत्रकृताङ्ग सूत्र में कहा गया है-

एवं खु नाणिणो सारं जं न हिंसइ किंचण।

ज्ञान उत्पन्न हो जाए, भीतर से चेतना जागृत हो जाए तो वह उसके प्रकाश से अपना एवं दूसरों का जीवन आलोकित करता है। अज्ञानी व्यक्ति किधर बह जाए, कुछ कहा नहीं जा सकता।

भारत एवं विश्व में कोई भी महान् विचारक हिंसा का समर्थन नहीं करता तथा निर्दोष मनुष्यों को मौत के घाट उतारना तो कथमपि एवं किसी भी स्तर पर उचित नहीं कहा जा सकता। पूरे विश्व में इस हिंसा का कहीं भी वैचारिक पोषण नहीं है। प्रत्येक मनुष्य का जीवन मूल्यवान है। प्राण लेना आसान है, किन्तु प्राण प्रदान करना अत्यन्त कठिन। तीर्थङ्कर महावीर तो मनुष्य के ही नहीं, प्राणिमात्र के हितचिन्तक थे। उन्होंने मनुष्य को प्राणिमात्र के प्रति संवेदनशील बनने की प्रेरणा की। उनका कथन है- **सव्वे वि जीवा इच्छंति जीविउं, न मरिज्जिउं।** (दशवैकालिक सूत्र) सभी जीव जीना चाहते हैं, मरना कोई नहीं चाहता। हम सबके प्रति संवेदनशील बनें तथा सबको अपने समान समझें। प्रभु महावीर मात्र प्राण-हनन को ही हिंसा नहीं कहते। उनके अनुसार किसी भी प्राण, भूत, जीव एवं सत्त्व का न तो हनन किया जाना चाहिए, न उन पर बलात् शासन किया जाना चाहिए, न उन्हें गुलाम बनाना चाहिए, न उन्हें उत्पीड़ित किया जाना चाहिए और न ही उन्हें अशान्त बनाया जाना चाहिए। (**सव्वे सत्ता ण हंतव्वा, ण अज्जावेतव्वा, ण परिघेतव्वा, ण परितावेयव्वा, ण उद्देवेयव्वा** । -आचारांग सूत्र) यह कितना

उच्च संदेश है जिसमें सबको सम्मानपूर्वक एवं निर्भयता पूर्वक जीने का अधिकार दिया गया है तथा यह समझ दी गई है कि दूसरों को भी अपनी भांति जीने दें। आतङ्कवादी व्यक्ति भगवान के इस संदेश एवं उपदेश को नहीं जानता, उसे न जानने का अवसर मिला है और न ही वह जानने के लिए उत्सुक है। वह तो विवश बना हुआ है एक सीमित सोच के साथ दूषित वातावरण में जीने के लिए। आतङ्कवाद के जो प्रमुख संचालक होते हैं उनके पास मस्तिष्क है, सोच है, किन्तु वे अपने उद्देश्यों की पूर्ति के लिए मानवीय-संवेदनाओं से शून्य होते हैं। उनका उद्देश्य प्रचारित नहीं होता। वे गोपनीयरीति से कार्य करते हैं। निर्दोष मनुष्यों की हत्या करना एवं अशान्ति उत्पन्न करना उनका अपना उद्देश्य होता है। इस प्रकार के आतङ्कवाद को समाप्त करना सरल नहीं है, क्योंकि ये लोग पकड़ में कम ही आते हैं तथा ये दण्डित किए जाने पर भी अपनी शृंखला को प्रकट नहीं करते हैं। ये जान देने के लिए तैयार हैं, किन्तु अपने सूत्रों को व्यक्त करने के लिए कथमपि तत्पर नहीं होते हैं इनके पीछे राजनीतिक एवं विदेशी शक्तियों का भी हाथ होता है। जो आतंकवादी संगठन सम्मुख आ जाते हैं, तो फिर वे भी आतङ्कित हो जाते हैं। उन्हें पकड़े जाने एवं मारे जाने का भय होता है। इसलिए वे प्रायः अपने को प्रकट किए बिना कार्य करते हैं।

इस आतङ्कवाद को समाप्त करने के दो ही तरीके हैं- (१) एक हिंसक विधि और (२) अहिंसक विधि। हिंसक विधि तो प्रायः सभी देशों द्वारा अपनायी जाती है एवं इस विधि से अधिकतर लोग सहमत हैं। यदि आतङ्कियों को मारा नहीं गया तो गिरफ्तार कर बंदी बना लिया जाता है। बंदी बनाने के बाद कभी कोई आतङ्की दल वायुयान का अपहरण करता है तथा शर्त लगाता है कि हमारे आतङ्की साथियों को कारागार से रिहा किए जाने पर ही वे विमान यात्रियों को सुरक्षित छोड़ेंगे, अन्यथा उनके प्राण ले लेंगे। इस तरह उनकी धमकियों से जनता का हृदय पसीज जाता है तथा वह विमान यात्रियों को रिहा करने के लिए सरकार पर दबाब डालती है। आतङ्की साथियों के रिहा होते ही आतङ्कवादी संगठन पुनः सशक्त हो जाते हैं एवं उनसे मुकाबला फिर अधिक कठिन हो जाता है।

अहिंसक विधि यह हो सकती है कि आतङ्कवादियों को गिरफ्तार करने के पश्चात् उनके मनों को बदलने हेतु प्रयास किया जाए। उसके लिए उन्हें ऐसी फिल्में दिखाई जाए जिनमें किसी आतङ्कवादी ने उस मार्ग को छोड़कर सामान्य संवेदनशील जीवन अपनाना स्वीकार किया हो। यदि ऐसी फिल्में न हों तो उनका निर्माण किया जाए। ऐसे कैसेट्स सुनाए जाएं जिनको सुनकर उनके मन में मानव मात्र के प्रति

संवेदनशीलता जागृत हो। मानव-जीवन का लक्ष्य क्या हो? उसे कैसे तय किया जाए- इस प्रकार का वातावरण उन्हें निरन्तर प्राप्त हो तथा उन्हें आतङ्की लोगों से सर्वथा दूर रखा जाए। इससे उनका पुनः मस्तिष्क-प्रलाक्षन (ड्रीरळप थरीव) होगा और पुराने संस्कार मिटकर नये संस्कार स्थापित हो सकते हैं। आतङ्कियों का सुधार आसान कार्य तो नहीं, किन्तु प्रयत्न करने पर कुछ अंशों में सफलता मिल सकती है। सरकार के द्वारा तो सुरक्षा-व्यवस्था को पुख्ता किया जाना आवश्यक है ही तथा पुलिस की भी ऐसी व्यवस्था की जानी चाहिए कि आतङ्कियों की हिम्मत आहत हो जाए।

आतङ्की व्यक्ति के प्रति द्वेष न हो, यही उसके प्रति क्षमाभाव है, किन्तु उसके द्वारा निरन्तर प्राणहनन एवं अशान्ति कारक घटनाएँ होती रहें एवं हम चुपचाप रहें, तथा अपने को क्षमाशील समझते रहें तो यह बहुत बड़ा भ्रम है। ऐसी क्षमाशीलता साधु-साध्वियों की मर्यादा में तो शक्य है, किन्तु गृहस्थों के लिए यह शोभाजनक नहीं। उहें इसके निराकरण का मार्ग सोचना ही चाहिए। देश एवं विश्व का आतङ्कवाद कैसे दूर हो, यह सबके चिन्तन का विषय है। इसके लिए क्या अहिंसक समाधान हो सकते हैं, इस पर पाठकगण से भी विचार आमन्त्रित हैं।

आत्मनिरीक्षण का पर्व पर्युषण आ रहा है। हम अपने मन को भी टटोलें कि क्या हम भी कहीं किसी के मन में आतङ्क उत्पन्न करते हैं, किसी को भय एवं पीड़ा में निमग्न करते हैं? हमारे अपने व्यवहार का आलोडन करने पर कहीं कोई भूल पकड़ में आती है तो उसका संशोधन करें। स्वयं का शोधन होने पर पर-शोधन का मार्ग प्रशस्त होगा। हम आतङ्कियों से द्वेष न करें, किन्तु आतङ्कवाद को रोकने का उपाय सोचें।

आतङ्क का उद्भव मन में होता है, फिर वह आदत में आ जाता है। प्रतिशोध की भावना भी व्यक्ति में आतङ्क को जन्म देती है। विद्रोह का भाव भी आतङ्क का रूप ले सकता है। मनुष्य जब अपने इन भावों का शोधन कर मन, वचन एवं काया से ऋजु होकर अहिंसा को अपनाता है तभी वह पूर्ण अहिंसक बनता है, फिर उसके मन में सबके प्रति मैत्री एवं करुणा की अजस्र धारा बहती है। अतः हम सबका यह प्रथम कर्तव्य है कि हम हमारे मन में आतङ्कवाद उत्पन्न न करें, हम स्वयं आतङ्की न बनें। प्रेम एवं सौहार्द से परिवार एवं समाज का संचालन करें। यदि कोई आतङ्क उत्पन्न करता है तो उसके बढ़ते प्रभाव एवं हिम्मत का उदात्तीकरण किसी रचनात्मक कार्य की ओर करने का विनम्र प्रयत्न करें।

अमृत-चिन्तन

आगम-वाणी

(ईर्या एवं भाषा समिति)

आलंबणेण कालेण मग्गेण जयणाइ य।
चउकारण-परिसुद्धं, संजए इरियं रिए ॥४॥
तत्थ आलंबणं नाणं, दंसणं चरणं तहा।
काले य दिवसे वुत्ते, मग्गे उप्पहवज्जिए ॥५॥
दव्वओ खेत्तओ चेव, कालओ भावओ तहा।
जयणा चउव्विहा वुत्ता, तं मे कित्तयओ सुण ॥६॥
दव्वओ चक्खुसा पेहे, जुगमित्तं च खेत्तओ।
कालओ जाव रीएज्जा, उवउत्ते य भावओ ॥७॥
इंदियत्थे विवज्जित्ता, सज्झायं चेव पंचहा।
तम्मुत्ती तप्पुरक्कारे, उवउत्ते इरियं रिए ॥८॥
कोहे माणे य मायाए, लोभे य उवउत्तया।
हासे भए मोहरिए, विगहासु तहेव य ॥९॥
एयाइं अट्ठ ठाणाइं, परिवज्जित्तु संजए।
असावज्जं मियं काले, भासं भासिज्ज पन्नवं ॥१०॥

-उत्तराध्ययन सूत्र भाग ३, अध्ययन २४, गाथा ४-१०

आलम्बन, काल, मार्ग, यतना, का मुनि ईर्या में ध्यान करें।
इन चार कारणों से विशुद्ध, संयत ईर्या में गमन करे ॥४॥
चारित्र, ज्ञान, दर्शन तीनों, ईर्या का आलम्बन मानो।
है दिवस काल में मार्ग कहा, उत्पथ तजकर सत्पथ जानो ॥५॥
है द्रव्य, क्षेत्र और काल भाव से, चार प्रकार कही यतना।
कह रहा अभी मैं भेदों को, दे ध्यान-योग उनको सुनना ॥६॥
आँखों से जीव द्रव्य देखे और क्षेत्र धनुष परिमित जानो।
चलने तक देखे काल यही, है भाव एकचित्त को मानो ॥७॥
इन्द्रियगण के शब्दादि-विषय, स्वाध्याय पंचविध कर वर्जन।
ईर्या में तन्मय हो मुनिजन, यतना से जग में करें भ्रमण ॥८॥
भाषा समिति का भाव सुनो, है क्रोध-मान-माया मन में।
फिर लोभ हास्य भय मुखरवचन, विकथा प्रसाद है जनजन में ॥९॥
संयमी आठ इन स्थानों का, परिवर्जन निज मन से करते।
फिर यथा समय निर्दोष और, परिमित भाषा मुख से कहते ॥१०॥

अमृत-चिन्तन

विचार-वारिधि

आचार्यप्रवर श्री हस्तीमल जी म.सा.

- एक-एक व्यक्ति अपने एक-एक साथी को प्रेरणा देकर स्वाध्याय के लिये तैयार करे, तो कितना काम हो जाय?
- भय, लोभ, महिमा की चाह और राग का लुभावना आकर्षण-इन चार बातों से साधक साधना-मार्ग में कमजोरी से पैर इधर-इधर रखने लगता है। इन समस्याओं को हल करने के लिये उसको गुरु के मार्गदर्शन की आवश्यकता होती है।
- दुःख दूर करने की कुंजी है-कामना को दूर करना। तन की भूख मिटाना आसान है, लेकिन मन की भूख मिटाना मुश्किल है। तन की भूख कोई दूसरा भी मिटा सकता है, लेकिन मन की भूख व्यक्ति स्वयं ही मिटा सकता है।
- यदि द्वेष को जड़ से काट दिया और राग की जड़ को हटा दिया तो संसार में रहता हुआ भी जीव सुखी हो जायेगा।
- यदि कामनाओं को वश में कर लोगे तो दुःख सदा के लिये नष्ट हुआ समझो।
- त्यागी को चाहिये कि जिस वस्तु को उसने छोड़ दिया उसे वापस लेने की इच्छा भी नहीं करे।
- धर्म का मूल सिद्धान्त है अपनी कमजोरियों पर विजय प्राप्त करना।
- आत्मा के भीतर अनन्त शक्ति और सामर्थ्य है, अनन्त ज्योति है। उसे पहचानिये। उसको पहचानने का माध्यम है स्वाध्याय। इसलिये कहा गया है कि बिना स्वाध्याय के ज्ञान नहीं होता। ज्ञान की ज्योति जगाने के लिये, आत्मा की ज्योति जगाने के लिये, स्वाध्याय एक अच्छा माध्यम है।
- जैन धर्म किसी जाति-विशेष के बन्धन में बंधा हुआ नहीं है। उसमें ब्राह्मण है, क्षत्रिय है, वैश्य है, शूद्र हैं और किसान भी है तो व्यवसायी भी है।
- हमारा आहार बिगड़ गया तो स्वास्थ्य भी बिगड़ गया।
- यदि जीवन में धर्म को व्याप्त करना चाहते हो तो आहार शुद्धि पहली चीज है।

-'नमो पुरिसवरगंधहत्थीणं' ग्रन्थ से साभार

प्रवचन

अहिंसा बिन नहीं कोई धर्म

श्रद्धेय श्री यशवन्त मुनि जी म.सा.

श्रद्धेय श्री यशवन्त मुनि जी म.सा के द्वारा महावीर वाटिका, देवनगर, जोधपुर में ९ अप्रेल, २००८ को फरमाए गए इस प्रवचन का आशुलेखन जिनवाणी के सह-सम्पादक श्री नौरतन मेहता द्वारा किया गया है। -**सम्पादक**

धर्मजिज्ञासु बन्धुओं!

समझ के सम्यक् होने पर ही साधना का शुभारम्भ होता है। साधना-मार्ग में आगे बढ़ने वाले इच्छुक साधक को सबसे पहले अपनी समझ को सम्यक् बनाना होता है, क्योंकि सारी साधना समझ के ऊपर ही निर्भर करती है। अगर एक मटकी सुलटी रखी हुई है तो उस पर रखी जाने वाली अन्य मटकियाँ सुलटी ही रखी जायेंगी। उल्टी रखी मटकी है तो उस पर उल्टी मटकियाँ रखी जायेंगी।

बारह महापापों को लेकर वर्णन चल रहा है। सातवां महापाप है-हिंसा में धर्म बताने वाला महापापी। हिंसा घोर अधर्म है। हिंसा में धर्म की प्ररूपणा करने वाला व्यक्ति महापापी होता है। हिंसा तीन काल में कभी धर्म नहीं हो सकती। हिंसा, हिंसा है, हिंसा रहेगी और हिंसा में अधर्म है, अधर्म रहेगा। जिनशासन में पाँच सिद्धान्त हैं, अहिंसा, सत्य, अचौर्य, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह। ये सिद्धान्त अन्त तक सिद्ध हैं। सिद्धान्त कहते उसी को हैं जो अन्त तक सिद्ध हो। सिद्धान्त हमेशा अकाट्य होता है। सिद्धान्त सार्वभौमिक, सार्वदेशीय, सार्वकालिक होता है। सिद्धान्त की पूरे लोक में मान्यता होती है। सिद्धान्त त्रिकाल रहने वाला है। भूतकाल में अहिंसा में धर्म माना जाता था, भविष्य में माना जायेगा और वर्तमान में भी अहिंसा में धर्म माना जाता है। जो तीन काल में मान्य होता है वही सिद्धान्त है। जो अन्त तक सिद्ध होता है वह है सिद्धान्त। कोई भी प्रभावशाली व्यक्ति उसको गलत सिद्ध नहीं कर सकता। प्राणियों को मारना-काटना कोई अच्छा नहीं बता सकता। जैसे खून से सना वस्त्र खून से साफ नहीं हो सकता। खून से सने वस्त्र को साफ करने के लिए जल की, क्षार की जरूरत है। कोई आग को आग से बुझाना

चाहे तो वह आग बुझ नहीं सकती। कोई व्यक्ति पसीने से तर-ब-तर है वह यदि धूप में खड़ा हो जाय तो क्या पसीना सूखेगा?

हिंसा को उपशान्त करने के लिए अहिंसा की जरूरत है। बहुत से लोग कहते हैं - लातों के देव बातों से नहीं मानते। यह धारणा उचित नहीं है। अहिंसा के प्रयोग से अधर्म पर काबू पा सकते हैं, धर्म की विजय-पताका फहरा सकते हैं। धर्म के दो भेद हैं-

धम्मे दुविहे पण्णत्ते आगार धम्मे चेव अणगार धम्मे चेव

एक है आगार धर्म, दूसरा है अणगार धर्म। हिंसा से पूर्णरूप से निवृत्त तो संत होते हैं। गृहस्थ पूर्ण रूप से हिंसा का त्यागी नहीं हो सकता। गृहस्थ को हिंसा करनी पड़ती है। गृहस्थ को देशविरति नाम दिया। गृहस्थ जितने-जितने स्थावर और त्रस जीवों की हिंसा करता है उतना-उतना वह अधर्मी है और जितनी-जितनी हिंसा से स्वयं को बचाता है उतनी-उतनी मात्रा में वह धर्मी है। गृहस्थ पूर्णधर्मी नहीं हो सकता। उसे नहीं चाहते हुए भी हिंसा करनी पड़ती है। कभी-कभी लोग कहते हैं कि गृहस्थ जीवन से झूझना सरल नहीं है। कुछ तो हैं जो कहते हैं साधु धर्म से गृहस्थ धर्म ऊँचा है। ऐसा कहना अज्ञानता का द्योतक है। कर्त्तव्य अलग है, धर्म अलग है। कर्त्तव्य को धर्म बताना अज्ञानता है। श्रावक चाहे साधु धर्म स्वीकार न भी करे तो भी उसकी भावना रहनी चाहिये कि साधु धर्म ऊँचा है। क्यों, तो गृहस्थ में हिंसा है, अधर्म है, पाप है।

धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष ये चार पुरुषार्थ मिलते हैं। मूल में पुरुषार्थ दो हैं। एक साधन है, दूसरा साध्य है। साधक धर्म पुरुषार्थ से मोक्ष की साधना करता है। गृहस्थ में अर्थ साधन है, काम साध्य। संसार में भोगों की सामग्री पैसों से मिलती है इसीलिए अर्थ से काम मिलता है। साधु जीवन में वह इष्ट नहीं है। मोक्ष की प्रेरणा रूप से धर्म की परिपालना है तो वह है सम्यक् पुरुषार्थ। अर्थ द्वारा काम का पुरुषार्थ असम्यक् पुरुषार्थ है। हमारी मान्यता सम्यक् होनी चाहिये। यदि धारणा सम्यक् होगी तो गहरे गर्त में नहीं गिरेंगे तथा मौका मिलने पर कीचड़ से निकलने का प्रयास करेगा।

बन्धुओं! अहिंसा सिद्धान्त को पूरा विश्व मानता है। न्यूनाधिकता हो सकती है। जहाँ तक अन्य धर्मावलम्बियों की जानकारी है, ज्ञान है, वे उतने रूप में

अहिंसा को मानते हैं। अहिंसा की पूर्णता जिनशासन में है इसीलिए एक इन्द्रिय से पंचेन्द्रिय तक की हिंसा बताई गई है। ईसाई मनुष्य को बचाने में जानवर की हिंसा को हिंसा नहीं मानते। वैष्णव धर्म में भी दया को धर्म का मूल कहा है।

दया धर्म का मूल है, पाप मूल अभिमान।
तुलसी दया न छोड़िये, जब तक घट में प्राण।।

मुस्लिम समाज में भी 'रहम' को बड़ा धर्म बताया है। वहाँ भी अहिंसा का पूरा स्वरूप नहीं है। जैन धर्म में सौ प्रतिशत अहिंसा की बात सही है। हमारे यहाँ तो मन में भी हिंसा का भाव आ जाय तो उसे भी हिंसा में शुमार माना है। जैन धर्म के अनुसार त्रिकरण-त्रियोग से अहिंसा की परिपालना संभव है।

धर्म अहिंसा में है। हिंसा में धर्म मानना पाप है और हिंसा में धर्म बताने वाला महापापी है।

न सा दीक्षा न सा भिक्षा न तद् दानं न तत् तपः।
न तद् ज्ञानं, न तद् ध्यानं दया यत्र न विद्यते।।

संयमी जीवन अंगीकार कर लिया, परन्तु अहिंसा धर्म की सम्यक् परिपालना नहीं है तो वह दीक्षा किस काम की? अहिंसा की पूर्ण पालना नहीं तो वह भिक्षा, भिक्षा नहीं है। अहिंसा-धर्म का महत्त्व जीवन में व्याप्त नहीं है तो वह दान, दान नहीं चाहे वह हजारों-लाखों का दान दे रहा है। कोई पंचाग्नि तप तपता है, ऊपर से सूर्य का ताप है तो भी वह तप, तप नहीं है।

एक व्यक्ति मासखमण तप करता है। पारणे में कुश के अग्रभाग पर आए उतना खाना लेता है ऐसा कठोर तप करने वाले के लिए भी ज्ञानीजन ने कह दिया कि वह भी मुक्ति का कारण नहीं है यदि उसमें अहिंसा की पालना नहीं हो। एक व्यक्ति 'शाकाहार उत्तम आहार' पर घंटों विद्वत्ता पूर्ण प्रवचन करता है, प्रवचन करते-करते उसे पसीना आ गया। पसीना पोंछने के लिए वह जेब से रूमाल निकालता है, रूमाल के साथ अण्डा जो जेब में रहा हुआ था, बाहर गिर जाता है, वह चाहे कितना ही विद्वान् है, ज्ञानी है, उसे श्रेयकारी नहीं कहा। वह ज्ञान, 'ज्ञान' नहीं, वह ध्यान, 'ध्यान' नहीं, वह तप, 'तप' नहीं जहाँ अहिंसा की सम्यक् पालना नहीं। जहाँ दया नहीं वहाँ सामायिक नहीं। दया आने पर सामायिक हो सकती है, जप हो सकता है तप हो सकता है। भगवान् महावीर ने सूत्रकृतांग सूत्र में कहा-

एवं खु नाणिणो सारं जं न हिंसइ किंचणं।
अहिंसा समयं चेव एयावतं वियाणिया।।

किसी प्राणी की हिंसा नहीं करना ज्ञान का सार है। कोई ज्ञानी है तो वह प्राणिमात्र को बचाने का काम करेगा। आवश्यक है दया का भाव भीतर में आए। करुणा जगानी जरुरी है। प्राणिमात्र पर अनुकम्पा का भाव होना चाहिये। ज्ञानीजन कहते हैं-

उपकारी जगतः तात विश्वस्य जननी दया।

जो उपकारी हैं वे जगत के तात हैं। उपकारी को जगत्-पिता बता दिया। दया की कितनी महत्ता रही है। जैन धर्म में तो दया की जबरदस्त महिमा बताई गई है। आप व्याख्यान के बाद 'दया सुखां री बेलड़ी' बोलते हैं। दया को सुख की बेल और हिंसा को दुःख की खान बता दिया। कहने का आशय कि है दयाधर्म की जबरदस्त महिमा बताई गई है। हम उस जीवन में स्थान देकर चलेंगे तो हमारा जीवन मंगलमय बन सकेगा।

ज्ञानीजनों ने कुछ माताएँ बताई। अरिहन्त भगवन्तों की माता है 'करुणा'। संसार की माता है 'निगोद'। साधुओं की 'अष्टप्रवचन' माता। धर्म की माता 'अहिंसा'। अधर्म की माता 'हिंसा'। भगवान के रोम-रोम में करुणा का गुण व्याप्त होता है उनका वश चले तो सब जीवों को मोक्ष में पहुँचा दें। तीर्थंकर नाम-कर्म गोत्र का कारण यही है। संसार की माता है 'निगोद'। यह जीव अनादिकाल से निगोद में रहा है। शास्त्रीय भाषा में प्रत्येक जीव निगोद से आया है।

साधुओं की अष्ट प्रवचन माता में पाँच समिति और तीन गुप्ति बताई गई है। प्रत्येक कार्य समिति पूर्वक करें। शरीर की क्रिया करनी पड़ती है तो सम्यक् शब्द लगा दिया। एक साधु अगर जीवों की यतना का ध्यान नहीं रखता तो ज्ञानीजन कहते हैं वह भयंकर पाप-कर्म का बंध करता है। साधु चल रहा है रास्ते में एक जीव भी नहीं मरता, परन्तु वह यतना से नहीं चलता तो पाप-कर्म का बंध करता है और यदि यतना से चलते हुए कभी जीव का घात भी हो जाय तो वह पाप का भागी नहीं बनता। तत्त्वार्थ सूत्र में कहा है-

प्रमत्तयोगात् प्राणव्यपरोपणं हिंसा।

प्रमत्त योग से प्राणी की हिंसा होती है। यह भावों की प्रधानता से कथन

है। साधु की अष्ट प्रवचन माता कही गई है। धर्म की माता 'अहिंसा' है, अधर्म की 'हिंसा'। जीवन में हिंसा खतरनाक है। हिंसा के कारण जीव को बार-बार जन्म लेना पड़ता है।

मानव जीवन में दया का महत्त्व है। कभी-कभी बच्चा चलते-चलते गिर जाता है तो माँ कहती है- देख, कीड़ी मर गई। माता-पिता सन्तान में दया धर्म के संस्कार देते ही रहते हैं। आपको कोई कहे- तुम इस कीड़ी को मार दो, मैं तुम्हें एक लाख रूपये देता हूँ तो क्या आप कीड़ी को मार देंगे? संकल्प पूर्वक कीड़ी को मारना इष्ट नहीं है। पहले के जमाने में दीपक होता था। दीपक बुझाना होता तो घर के बुजुर्ग फूंक मार कर न दीपक बुझाते, न किसी को बुझाने देते। वे हाथ से दीपक बुझाने का प्रयत्न करते। गृहस्थ अवस्था में एक सूत्र है " लीस्ट किलिंग इज दी बेस्ट लिविंग।" अर्थात् अल्पतम हिंसा से जीवन जीना सीखो इसी में धर्म रहा हुआ है। सब धर्मों का सार है 'अहिंसा'। प्रश्न आत्मशान्ति का हो या विश्व शान्ति का, सभी समस्याओं का समाधान है 'अहिंसा'। हमें जीवन में अहिंसा को प्रधानता देकर चलना है। हिंसा नहीं करने की झूठी प्ररूपणा भी नहीं करना है। गलत प्ररूपणा करेंगे तो खुद भी डूबेंगे और दूसरों को भी डूबायेंगे।

कुछ हैं जो कहते हैं- महाराज का काम कहने का है, हमारा काम सुनने का है। यह सब तो यूँ ही चलता है, अगर ऐसा पाप मन में आ गया तो वह महापाप है, दुर्गति में ले जाने वाला है। हमें यह जीवन मिला है, जिनवचन सुनने को मिल रहे हैं तो हमें हितकारी वचनों को जीवन में उतारना होगा। जो भी जीवन में हितशिक्षा उतारेगा, उसका कल्याण हो सकेगा।

चिन्तन-कण

श्री प्रेमचन्द कोठारी, बूँदी

१. संयोग ही सुख-दुःख का कारण है, आत्मा का शरीर के साथ संयोग होने पर शरीर सुखी-दुःखी होता है। आत्मा निकल जाने पर शरीर को न दुःख होता है, न सुख होता है।

२. आत्मा से कार्मण शरीर छूट जाने पर आत्मा सदानंदी, चिंदानंदी, अखंडानंदी हो जाता है। अर्थात् साधक को कर्म रहित होने हेतु प्रत्येक क्षण, प्रत्येक श्वास में पुरुषार्थ करते रहना चाहिये।

प्रवचन

आगमवाणी तारणहार

महासती श्री मुदितप्रभा जी म.सा.

महासती श्री मुदितप्रभा जी म.सा के द्वारा शास्त्रीनगर, जोधपुर में १९ जुलाई, २००८ को फरमाए गए इस प्रवचन का आशुलेखन जिनवाणी के सह-सम्पादक श्री नौरतन मेहता द्वारा किया गया है। **-सम्पादक**

धर्मानुरागी बन्धुओं! माताओं-बहिनों!

आत्मा स्वभावतः शान्त है। शान्त ही नहीं बल्कि परम शान्त है। आधि-व्याधि-उपाधि से मुक्त आत्मा शान्त-अक्लान्त है। आत्मा स्वभावतः निर्भय है। उसके भीतर में किसी प्रकार के भय की गुंजाइश नहीं, फिर भी आश्चर्य, घोर आश्चर्य है कि आत्मा अशान्त क्यों है? आत्मा आधि-व्याधि-उपाधि से ग्रस्त क्यों है? चिंता से ग्रस्त क्यों है?

इसका एक मौलिक कारण है कि जीव अपने स्वभाव से विभाव में चला गया। जीव को जीव का बोध है। आत्मा को आत्मा का ज्ञान है। चेतन को चैतन्यता का अनुभव है। जो आत्मा बहिर्मुखी बन गई उसको अन्तर्मुखी बनाने के लिए वीतराग वाणी का स्वाध्याय चल रहा है। प्रभु ने इसी मंगलमय भावना से हमको उपदेश दिया। प्रभु की वाणी के पीछे प्रभु की कोई कामना नहीं। उन्हें न पुत्र को चलाने का मोह था न शिष्य को चलाने की चाह। उन्हें न पूजा की चाहना थी, न प्रतिष्ठा की। मन में किसी भी कामना की चाहना नहीं थी। प्रभु की वाणी के पीछे एक उद्देश्य था कि हर आत्मा के भीतर में करुणा की भावना बहे, जन कल्याण की भावना साकार हो। भगवान् ने जन कल्याण की भावना से वाणी की प्ररूपणा की। हर व्यक्ति की आत्मा जागृत हो।

भगवान् की वाणी को हम आगमवाणी भी कह सकते हैं, जिनवचन भी कहे जाते हैं, उन्हें सूत्र भी कह सकते हैं। सूत्र क्या? एक-एक शब्द पर विचार करके चलें तो उद्देश्य हमारे सामने होगा। आगम शब्द भीतर में चिन्तन पैदा करेगा।

आगम शब्द के लिए कहा- ''आप्तवचनादाविर्भूतमर्थसंवेदनमागमः।''

आप्त पुरुषों के वचनों से अर्थ रूपी वाणी सुनने के साथ भीतर में स्पन्दन करे। आप्त पुरुषों के वचन अर्थात् तीर्थंकरों के वचन। जिनवचनों को सुनकर भीतर में संवेदन हो वह है आगम वचन। आगम कई हैं। सारे आगम हमारे भीतर में संवेदना उत्पन्न नहीं करते। आगम के शब्द एक तरह से जुड़े हैं। वे सब वचन भीतर में संवेदना उत्पन्न करें यह आवश्यक नहीं। पर आप्त पुरुषों के वचन सुषुप्ति दूर हटायें। आगम सुनते-सुनते भीतर में चेतना जागृत नहीं हो तो वह उतनी फलदायक नहीं।

संवेदना दो प्रकार की है। एक जानने के अर्थ में है तो दूसरी सेंशेसन के रूप में। प्रभु की वाणी पूरी परीषद् ने सुनी, लेकिन प्रभु की वाणी सुनते ही जम्बूकुमार की संवेदना जागृत हो गई। भगवान् की वाणी सभी सुन रहे थे। जीवन पुष्प है तो शील उसका पराग है। जीवन मोती है, शील उसका आब है। जम्बूकुमार ने सुना, अर्थ का संवेदन हुआ। सुनने के साथ रुचि जागृत हुई। मैं भी इस वृत्ति को स्वीकार करूँ। मुझे भी शीलव्रत की आराधना करनी है।

पूज्य श्री जयमल जी महाराज प्रवचन सुन रहे थे। शील की महिमा चल रही थी। शील की महिमा सुनते-सुनते उनके लिए सूत्र बन गया। सुनने से जीवन की परिपाटी बदलती है तो आगम सुनना सार्थक है। आगम-वचन भीतर का अनुबंध जागृत कर दे। आगम चारों ओर से आता है। चारों ओर से वस्तु तत्त्व का ज्ञान लेकर आए वह आगम है। चारों ओर से जड़ और जीव की पहचान कराये वह आगम कहलाता है।

आपने कई बार आगम सुन लिया, पर भीतर में कितनी बार संवेदना जगी? आपको कितनी बार यह अहसास हुआ कि मैं काया के कारागार में क्यों बंधा हुआ हूँ। घर में नई-नई बहू आई। पाँच-चार दिन निकल गये उसके मन में आई, मुझे तो कोई घुमाने तक नहीं ले गया। उसे एक जगह पर घुटन-सी हो जाती है। यह जीव अनादि काल से काया में बंधा हुआ है उसकी कोई चिंता नहीं। कारागार से मुक्त होने की तैयारी किनकी है? जब तक आपको व्याकुलता महसूस नहीं होगी, कारागार से जीव मुक्त नहीं हो सकता। लक्ष्य की प्राप्ति के लिए पथ की व्याकुलता जगनी चाहिये। चलने की व्याकुलता का अहसास होना चाहिये। जब तक भाव नहीं जगेगा लक्ष्य को प्राप्त करना संभव नहीं होगा।

आगम को सूत्र भी कहा जाता है। सूत्र धागे को भी कहते हैं। धागा जोड़ता है। आप कपड़ा सीते हैं, उसमें धागा काम आता है। धागा कभी टूट जाय तो जोड़ा जा सकता है। लकड़ी टूट जाय तो भी जोड़ी जा सकती है। कागज को गोंद से जोड़ देते हैं। धातु को धातु से जोड़ दिया जाता है। कागज, कपड़ा, लकड़ी, धातु सभी जुड़ते हैं, जोड़े जा सकते पर खुद को खुद से जोड़ना हो तो........?

खुद को खुद से जोड़ने के लिए आगमवाणी है। सूत्र खुद को खुद से जोड़ता है। सूत्र जोड़ता है। आत्मा को आत्मा के साथ जोड़ने के लिए सूत्र है। पदार्थों को जोड़ने के लिए पदार्थों की आवश्यकता है। आत्मा स्वयं आत्मा के साथ जुड़ने वाली है। आप सूत्र के माध्यम से खुद को खुद से जोड़ सकते हैं। ज्ञान के अभाव में कई प्रकार के दोष लगते हैं। अज्ञान सारे दोषों का कारण है। अज्ञान की अवस्था में सभी दुःख संभव होते हैं। ज्ञानी दुःखों से दुःखी नहीं होते और न सुखों से वे सुखी ही होते हैं। ज्ञान की पटरी से जब गाड़ी नीचे उतर जाती है तो इतिहास साक्षी है, अज्ञान किस प्रकार खेल करता है।

अज्ञानी व्यक्ति के साथ तीन प्रकार का दुष्परिणाम सामने आ जाता है। वह उपकारी से टकराने लग जाता है। जिन्होंने दीक्षित किया, शिक्षित किया और जिन्हें गुरुबुद्धि से गुरु स्वीकार किया, अज्ञानता से वे गुरु को गुरु नहीं मानते और गुरु को घेरने में तत्पर हो जाते हैं। उन्हें फिर उपकारी से टकराते देर नहीं लगती। आपने सुना होगा कि गोशालक ने प्रभु महावीर पर तेजो लेश्या का प्रयोग कर दिया। गोशालक ने भगवान् महावीर से संयम स्वीकार किया, लेकिन अज्ञान के कारण उपकारी के उपकारों को भुलाकर तेजोलेश्या तक का प्रहार कर दिया। कई बार ऐसे प्रसंग देखे जाते हैं जिससे व्यक्ति उपकारी के साथ टकराता है। कारण क्या? वहाँ अज्ञानता बोल रही है।

अज्ञान का दूसरा दुष्परिणाम है कि वह दोषों के जंगल में भटक जाता है। गुणों को गौण करके वह दोषों की ओर आकर्षित होता है। हम संतों के लिए तो भगवान् ने पल-पल जागृत रहने की बात फरमाई है। संत तो यहाँ तक कहते हैं जिनको आत्म-उत्थान करना है उन्हें किसी काम में रुचि नहीं होती, करना पड़ता है वह बात अलग है। किसी के घर पर कोई कच्ची मौत हो जाय तो उसमें चलने को तो

सारी क्रियाएँ चलती हैं लेकिन क्रिया करते हुए भी वहाँ रुचि नहीं होती। मात्र कर्त्तव्य पूर्ति के लिए घर-गृहस्थी के काम किए जाते हैं। साधक सभी क्रियाएँ करते हुए किंचित् मात्र भी रागवृत्ति नहीं रखे। उस घर में जहाँ कच्ची मौत हो गई है, वहाँ घर वाले लज्जा निवारण के लिए वस्त्र पहनते हैं। रंग-बिरंगी और शान-शौकत के वस्त्र नहीं पहने जाते। उस घर के सदस्यों से बातचीत भी करनी पड़े तो वे जोर-जोर से नहीं; धीरे बोलते हैं। साधक के लिए यही बात है वह भीतर में तल्लीन रहे। बाहर की क्रियाएँ करते हुए भी उसमें रस न ले। भीतर में अज्ञान भाग जाता है तो दोषों के प्रति ग्लानि का भाव कम हो जाता है।

अज्ञान का तीसरा दुष्परिणाम है पतन में गिरना। आचार्य भगवन्त फरमाते हैं- ''आज व्यक्ति को जितना दूसरों पर विश्वास है, अपने-आप पर उतना नहीं।'' आपको नाई पर विश्वास है। आप उसके आगे दाढ़ी-मूंछ कर देते हैं, आपको पता है कि वह उस्तरे से लगायेगा नहीं। आपको ड्राइवर पर विश्वास है। आप ड्राइवर पर विश्वास करके कार में बैठते हैं। आपको पता है वह ब्रेक की जगह एक्सीलेटर पर पाँव नहीं रखेगा। आपका डॉक्टर पर विश्वास है इसलिए डॉक्टर जो भी दवा देता है आप उसे ले लेते हैं, दवा पर कोई शंका नहीं। डॉक्टर तो डॉक्टर है किसी मेडिकल स्टोर पर चले गये आपको उस पर विश्वास है इसलिए वह जो भी दवा देता है उसे ले लेते हैं। मान लो आप किसी रास्ते से निकल रहे हैं। आप सामाजिक भोज में बैठे हैं जिस व्यक्ति को आप जानते तक नहीं वह यदि कह दे कि यह भोजन विषाक्त है तो क्या आप वह भोजन करेंगे? पड़ौस में कोई भोजन करके बैठा है वह कहे कि मैंने भोजन किया है, भोजन में कोई खराबी नहीं तो भी यदि शंका है तो वह खाना नहीं खायेगा। आप कितने जागृत बनकर चलते हैं? रास्ते में चलते-चलते किसी ने कह दिया- आगे रास्ता ठीक नहीं, खतरा है, सड़क सही नहीं तो आप तुरन्त रास्ता बदल कर चल देते हैं। आप पाप के मार्ग में चल रहे हैं, नरक-निगोद में जाना पड़ेगा, इस स्थिति में प्रभु हमें सावधान करते हैं। जड़ के प्रति आपका लगाव है, यह आपकी जड़ता है। प्रभु कह रहे हैं- संसार सागर में आग लगी है। संसार रूपी अटवी की आग से, उष्णता से, तपन से यदि बचना है तो वीतराग वाणी की शरण ग्रहण करो। एक तरफ आप बोलते हैं- वाणी तो घणेरी पण, वीतराग.......... ।

आप स्वयं अपना निरीक्षण करें कि प्रभु की वाणी पर कितना विश्वास है?

प्रभु-वाणी के आप कितने नजदीक रहते हैं? सूत्र व्यक्ति को जोड़ता है। सूत्र की कई परिभाषाएँ हैं। स्रवते इति सूत्रं। जो झरता है उसे सूत्र कह रहे हैं। एक चन्द्रकान्त मणि आती है। चाँदनी की शिथिलता में चन्द्र की किरणें झरती हैं। जब किरणें झरती हैं उस समय कुछ रसायन मिलाकर स्वर्ण बनाया जाता है। इसी तरह सूत्र से अर्थ झरता है। भाव रूपी रसायन मिला दें तो आत्म-कल्याण रूपी स्वर्ण प्राप्त हो सकता है। जो भी सूत्र के अर्थ को हृदयंगम कर लेते हैं उनके लिए वह सोने से बढ़कर है।

चातुर्मास में आगम वाणी का स्वाध्याय किया जाता है। कई लोग कहते हैं कि आगम सिद्धान्त कई बार समझ में नहीं आते। बात ठीक है। आगम सिद्धान्तों को समझने के लिए थोकड़ों का ज्ञान जरूरी है जिससे आगम का ज्ञान सरल हो जाय। आगमों के शब्दों को समझने के लिए थोकड़ों का ज्ञान होगा तो आगमों के एक-एक सूत्र के कई-कई अर्थ निकलते हैं, उनमें आप उलझेंगे नहीं। थोकड़े आगम की कुंजी हैं। आगम सागर है। थोकड़े सागर को गागर में भर देते हैं। पच्चीस बोल का थोकड़ा सारे बोलों की कुंजी है। एक-एक बोल में शास्त्रों का गहरा ज्ञान समाया हुआ है। आगम वाणी के अक्षर-अक्षर में ज्ञान भरा हुआ एवं पद-पद में वैराग्य रहा हुआ है। पूर्वाचार्यों ने कुछ ऐसे थोकड़े बनाये जिनके माध्यम से हमें कई प्रकार का लाभ होता है। कभी-कभी लोग कहते हैं कि हमें आगम में रुचि नहीं होती है। हो सकता है शुरुआत में आगम नीरस लगें। आप सोने-चांदी-हीरे-इकट्ठे करते हैं। हीरे की एक डली मुँह में रख दें वह कैसी लगेगी? आप हीरे के बजाय पीपरमेंट की डली मुँह में रखें तो मुँह में मिठास आयेगी। हीरे से मुँह मीठा नहीं होता इसलिए हीरा अच्छा नहीं। पीपरमेंट की गोली से मुँह मीठा होता है। पर वह किस काम का? हीरे का मोल अनमोल होता है। एक हीरे से पीपरमेंट की बोरियों की बोरियाँ आ सकती हैं। आपको चाहे तत्त्वज्ञान में रस आयेगा या नहीं पर हीरा, हीरा रहेगा।

आपका बच्चा शुरु-शुरु में स्कूल पढ़ने जाता है उस समय वह कोई आमदनी नहीं करता। बच्चा जब तक पढ़ाई करता है उससे कोई लाभ नहीं मिलता। पर बच्चे का सीखा ज्ञान बाद में फायदा पहुँचाता है। यही बात आगमवाणी के लिए हैं। आप आगम वाणी सुनें-पढ़ें-समझें तो धीरे-धीरे आपके जीवन में परिवर्तन का अनुभव होगा।

चिन्तन

मंगलाचरण : एक चिन्तन

आचार्य श्री देवेन्द्रमुनि जी म.सा.

मंगलाचरण आगमयुग में नहीं था। आगमकार अपने अभिधेय के साथ ही आगम का प्रारम्भ करते थे। आगम स्वयं मंगलस्वरूप होने के कारण उसमें मंगलवाक्य अनिवार्य नहीं माना गया। आचार्य वीरसेन और आचार्य जिनसेन ने कषायपाहुड की जयधवला टीका में लिखा है- आगम में मंगलवाक्य का नियम नहीं है, क्योंकि परमागम में ध्यान को केन्द्रित करने से नियम से मंगल का फल सम्प्राप्त हो जाता है।[१] यही कारण है कि आचार्य गुणधर ने अपने कषायपाहुड ग्रन्थ में मंगलाचरण नहीं किया।[२]

द्वादशांगी में केवल भगवती सूत्र को छोड़कर अन्य किसी भी आगम के प्रारम्भ में मंगलवाक्य नहीं है। वैसे ही उपांग में प्रज्ञापना के प्रारम्भ में मंगलगाथाएँ आई हैं। उन गाथाओं में सर्वप्रथम सिद्ध को नमस्कार किया गया है। उसके पश्चात् श्रमण भगवान् महावीर को नमस्कार किया है। प्रज्ञापना की प्राचीनतम जितनी भी हस्तलिखित प्रतियाँ उपलब्ध हुई हैं, उन सभी प्रतियों में पंचनमस्कार महामंत्र उट्टंकित है। प्रज्ञापना के टीकाकार आचार्य हरिभद्र और आचार्य मलयगिरि ने पंचनमस्कार महामंत्र की व्याख्या नहीं की है। इस कारण आगमप्रभावक पुण्यविजयजी म., पं. दलसुखभाई मालवणिया आदि का अभिमत है कि प्रज्ञापना के निर्माण के समय नमस्कारमहामंत्र उसमें नहीं था, किन्तु सम्भवतः लिपिकर्त्ताओं ने प्रारम्भ में उसे संस्थापित किया हो। षट्खण्डागम में भी आचार्य वीरसेन के अभिमतानुसार पंचनमस्कार महामंत्र का निर्देश है।

प्रज्ञापना में प्रथम सिद्ध को नमस्कार कर उसके पश्चात् अरिहंत को नमस्कार किया है, जबकि पंचनमस्कार महामंत्र में प्रथम अरिहंत को नमस्कार है और उसके पश्चात् सिद्ध को। उत्तराध्ययन आदि आगम-साहित्य में यह स्पष्ट उल्लेख है कि तीर्थंकर दीक्षा ग्रहण करते समय सिद्धों को नमस्कार करते हैं। इस दृष्टि से जैनपरम्परा में प्रथम सिद्धों को नमस्कार करने की परम्परा प्रारम्भ हुई।

तीर्थंकर अर्थात् अरिहन्त प्रत्यक्ष उपकारी होने से पंचनमस्कार महामंत्र में उन्हें प्रथम स्थान दिया गया है। ई. पूर्व महाराज खारवेल, जो कलिंगाधिपति थे, उन्होंने जो शिलालेख उट्टंकित करवाये, उनमें प्रथम अरिहन्त को नमस्कार किया गया है और उसके बाद सिद्ध को।

मूर्धन्य मनीषियों का यह अभिमत है कि जब तक तीर्थ की संस्थापना नहीं हो जाती, तब तक सिद्धों को प्रथम नमस्कार किया जाता है और जब तीर्थ की स्थापना हो जाती है, तब सन्निकट के उपकारी होने से प्रथम अरिहन्त को और उसके पश्चात् सिद्धों को नमस्कार करने की प्रथा प्रारम्भ हुई होगी। प्राचीनतम ग्रन्थों में मंगलाचरण की यह पद्धति प्राप्त होती है। इसका यह अर्थ नहीं कि निश्चित रूप से ऐसा ही क्रम रहा हो। वन्दन का जहाँ तक प्रश्न है, वह साधक की भावना पर अवलम्बित है। तीर्थंकरों के अभाव में तीर्थंकर-परम्परा का प्रबल प्रतिनिधित्व करने वाले आचार्य और उपाध्याय हैं, अतः वे भी वन्दनीय माने गये और आचार्य, उपाध्याय पद के अधिकारी साधु हैं, इसलिए वे भी पांचवें पद में नमस्कार के रूप में स्वीकृत हुए हों।

पंचपरमेष्ठीनमस्कार महामंत्र का निर्माण किसने किया? यह प्रश्न सर्वप्रथम आवश्यकनिर्युक्ति में समुपस्थित किया गया है। उत्तर में निर्युक्तिकार भद्रबाहु ने यह समाधान किया है कि पंचपरमेष्ठीनमस्कार महामंत्र सामायिक का ही एक अंग है। अतः सर्वप्रथम पंचपरमेष्ठियों को नमस्कार कर सामायिक करना चाहिए।[3] नमस्कार महामंत्र उतना ही पुराना है, जितना सामायिकसूत्र। सामायिक के अर्थकर्ता तीर्थंकर हैं और सूत्रकर्ता गणधर हैं।[4] इसलिए नमस्कारमहामंत्र के भी अर्थकर्ता तीर्थंकर हैं और उसके सूत्रकर्ता गणधर हैं।

द्वितीय प्रश्न यह है कि पंचनमस्कार यह आवश्यक का ही एक अंश है या यह अंश दूसरे स्थान से इसमें स्थापित किया गया है? इस प्रश्न का उत्तर भी जिनभद्रगणि क्षमाश्रमण ने विशेषावश्यकभाष्य में स्पष्ट रूप से दिया है कि आचार्य देववाचक ने नन्दीसूत्र में पंचनमस्कार महामंत्र को पृथक् श्रुतस्कंध के रूप में नहीं गिना है। तथापि यह स्पष्ट है कि यह सूत्र है और प्रथम मंगल भी है, इसीलिए नमस्कारमहामंत्र केवल आवश्यकसूत्र का ही अंश नहीं, किन्तु सर्वश्रुत का आदिमंगल रूप भी है। किसी भी श्रुत का पाठ ग्रहण करते समय नमस्कार करना

आवश्यक है। आचार्य भद्रबाहु ने नमस्कारमहामंत्र की उत्पत्ति, अनुत्पत्ति की गहराई से चर्चा विविध नयों की दृष्टि से की है।[५] आचार्य जिनभद्र ने तो अपने विस्तृत भाष्य में दार्शनिक दृष्टि से शब्द की नित्यता-अनित्यता की चर्चा कर नयदृष्टि से उस पर चिन्तन किया है। इस महामंत्र के रचयिता अज्ञात हैं। एक प्राचीन आचार्य ने तो स्पष्ट रूप से लिखा है-

"आगे चौबीसी हुई अनन्ती, होसी बार अनन्त!
नवकार तणी को[illegible]दि न जाने, यूँ भाख्यो भगवन्त"!!

महानिशीथ [illegible] जसके [illegible] आचार्य हरिभद्र माने जाते हैं, उसमें महामंत्र के उद्धारक आर्य वज्र[illegible]वामी [illegible] मे समर्थ[illegible] आचार्य हरिभद्र के बाद होने वाले धवला टीकाकार वीरसेन आचार्य की दृष्टि से नमस्कार के कर्त्ता आचार्य पुष्पदन्त हैं।[६] आचार्य पुष्पदन्त का अस्तित्वकाल वीरनिर्वाण की सातवीं शताब्दी (ई. पहली शताब्दी) है। हम पूर्व ही बता चुके हैं कि खारवेल के शिलालेख जो ई. पूर्व १५२ के हैं, उसमें "नमो अरहंताणं, नमो सव्वसिद्धाणं," ये पद प्राप्त होते हैं। इससे यह स्पष्ट है कि नमस्कार महामंत्र का अस्तित्व आचार्य पुष्पदन्त से बहुत पहले था। श्वेताम्बर-परम्परा की दृष्टि से नमस्कारमहामंत्र के रचयिता तीर्थंकर और गणधर हैं, जैसा कि आवश्यकनिर्युक्ति से स्पष्ट है।

सन्दर्भ :-

१. एत्थ पुण णियमो णत्थि, परमागमुवजोगम्मि णियमेण मंगलफलोवलंभादो।
-कसायपाहुड, भाग १, गाथा १, पृष्ठ ९

२. एदस्थ अत्थविसेसस्स जाणावणट्ठंगुणहरभट्टारएण गंथस्सादीए ण मंगलं कयं।
-कसायपाहुड, भाग १, गाथा १, पृष्ठ ९

३. कयपंचनमोक्कारो करेइ सामाइयंति सोऽभिहितो।
सामाइयंगमेव य जं सो सेसं अतो वोच्छं।। -आवश्यकनिर्युक्ति, गाथा १०२७

४. (क) विशेषावश्यकभाष्य, गाथा १५४४
(ख) आवश्यकनिर्युक्ति, गाथा ८९,९०

५. (क) आवश्यकनिर्युक्ति, गाथा ६४४ से ६४६
(ख) विशेषावश्यकभाष्य, गाथा ३३३५ से ३३३८ तक

६. षट्खण्डागम, धवला टीका, भाग १ पृष्ठ ४१ तथा भाग २, प्रस्तावना पृष्ठ ३३ से ४१

-(प्रज्ञापनासूत्र की प्रस्तावना से उद्धृत)

आओ! प्रत्याख्यान करें

डॉ. दिलीप धींग

उजड़ा-उजड़ा जीवन जंगल,
सुरभित नव उद्यान करें।
व्रत नियमों के फूल उगाएँ,
आओ! प्रत्याख्यान करें।

प्रचुर पुण्य से जीवन पाया।
कुछ करने का अवसर आया।
ये स्वर्णिम पल चले न जाएँ,
पल-पल का सम्मान करें।
आओ! प्रत्याख्यान करें।

समता, क्षमता, इच्छाशक्ति।
त्याग-तपस्या से अनुरक्ति।
और विरक्ति छल-प्रपंच से,
जीवन ऐसा निर्माण करें।
आओ! प्रत्याख्यान करें।

खाना-पीना कब क्या कैसे?
जी रहे बस जैसे-तैसे!
संकल्प का शंख बजाकर,
मर्यादा का मान करें।
आओं! प्रत्याख्यान करें।

असंयम के कष्ट अकथ है।
भोगों से जीवन लथपथ है।
दलदली बीहड़ राहों को,
सुगम सरल आसान करें।
आओ! प्रत्याख्यान करें।

संयम योगी का सच्चा धन।
इसका स्वस्थ समर्थ रहते तन-मन।
संयममय जीवन ही जीवन,
फिर से यह ऐलान करें।
आओ! प्रत्याख्यान करें।

जो जीवन व्रत-नियमहीन है।
दिशाहीन वह लक्ष्यहीन है।
व्रत से हुए प्रशस्त पथ पर,
लें पाथेय प्रयाण करें।
आओ! प्रत्याख्यान करें।

बढ़ती पुण्य सम्पदा भारी।
संवर की दृढ़ चारदीवारी।
कर्म-निर्जरा की शक्ति से,
आत्म-तत्त्व पहिचान करें।
आओ! प्रत्याख्यान करें।

मन के हारे मन के अनुचर।
भय-संकट हैं कदम-कदम पर।
अहा! हम स्वतन्त्र बन्दी।
सच्ची मुक्ति का गान करें।
आओ! प्रत्याख्यान करें।

(अ.भा.श्री जैन रत्न युवक परिषद् के 'आओ ! प्रत्याख्यान करें' अभियान के लिए रचित)

-५३, डोरे नगर, उदयपुर-०२(राज.)

चिन्तन

श्रावक धर्म की पूर्व पीठिका - एक चिन्तन

उपाध्याय श्री रमेश मुनि जी शास्त्री
(उपाध्याय श्री पुष्कर मुनि जी के शिष्य)

'श्रावक' एक ऐसा विशिष्ट शब्द है, जो अनन्त अन्तरिक्ष से व्यापक, विराट् और अगाध-अपार महासागर से भी गहन है, जो गम्भीर अर्थ रखता है। जो व्रतों का निर्दोषतः आचरण करता है, शील धर्म के प्रति निष्ठावान् है, गुण-गण से पूर्णतः सम्पन्न है, व्यवहार की दृष्टि से सुमधुर है, सहज-सरल है, गुरुजनों के प्रति सर्वात्मना-समर्पित है, जैन धर्म और ज़ैन दर्शन के मौलिक तत्त्वों एवं मार्मिक सिद्धान्तों के रहस्यों का विशेषज्ञ है, अविचल श्रद्धावान् है उसी को 'श्रावक' किं वा भाव श्रावक, श्रमणोपासक एवं नैष्ठिक व्रती कहते हैं।

उपर्युक्त विचारणा के परिपार्श्व में 'श्रावक' के लिये 'शीलवान्' विशेषण संप्रयुक्त है। उसका अभिप्राय यह है कि जो धार्मिक व्यक्तियों के संग में रहता है, आवश्यक क्रियाओं के निर्वाह में सर्वथा निरत रहता है, अनुचित-परिधान का उपयोग नहीं करता है, सप्तविध दुर्व्यसनों से सर्वदा सुदूर रहता है, इसके अतिरिक्त मधु सी मधुर नीति से अपना प्रत्येक सत्कार्य भी सम्पादित कर लेता है, वह शीलवान श्रावक है।

एक कृषक खेत में बीज बोने के लिये सर्वप्रथम खेत को जोतता है, मिट्टी को मुलायम करता है, कचरा-कंकड़ और कण्टक भी हटाता है। इस प्रकार वह क्षेत्र-शुद्धि करने के अनन्तर बीज बोता है। जब वह इतना नहीं कर पाता है, तब खेत में बीज बोने का उसका एकनिष्ठ परिश्रम व्यर्थ हो जाता है, शून्य हो जाता है। इसी प्रकार जीवन में सर्वप्रथम श्रावक के व्रत अंगीकृत करने से पूर्व जीवन की वसुधा अर्थात् भूमि को व्यसन त्याग कर विशुद्ध बनाना अनिवार्य है। श्रावक व्रत वस्तुतः उच्च भूमिका है, किन्तु उसके पूर्व क्षेत्र-शुद्धि की भांति आचार और विचार की विशुद्ध-नीति तथा जीवन को धर्म-धारण का पात्र बनाना, आदर्श लोक़-नीति का पालन करना आवश्यक ही नहीं, अपितु अनिवार्य है। किं बहुना, सुरम्य-प्रासाद निर्मित करने के लिये नींव सुदृढ़ बनाना सुतरां अपेक्षित है। अस्थिर नींव पर

विशाल भवन बनाया नहीं जा सकता। श्रावक जीवन में धर्म रूपी भवन खड़ा करने के लिये सद्विचार, सद् आचार की नींव अविचल होना अनिवार्य है। स्थिर-नींव पर श्रावक धर्म रूपी भव्य भवन चिरस्थायी रह सकता है। इसलिये श्रावक-जीवन की पृष्ठभूमि विशुद्ध एवं सुदृढ़ बनाने के लिये अनेक प्रकार के सद्गुणों का सद्भाव होना अपरिहार्य है।

यह एक महत्त्वपूर्ण तथ्य है कि जीवन एक अखण्ड वस्तु है। लोक-व्यवहार एवं धर्म-क्षेत्र ये दोनों पृथक्-पृथक् भी नहीं हो सकते। दुरंगा जीवन धर्म के लिये आधार कदापि नहीं बन पाता है, व्यवहार की शुद्धि ही धर्मतत्त्व की आधार भूमिका बनती है। व्यवहार की शुद्धि के लिये सर्वप्रथम सप्तविध दुर्व्यसनों के परित्याग की भूमिका बनती है। दुर्व्यसनों से ग्रस्त व्यक्ति धार्मिक नहीं हो सकता है। जीवन को धर्ममय बनाने के लिये सर्वप्रथम व्यसन-विमुक्त जीवन का सत्संकल्प करना होगा। व्यसन का शाब्दिक-आशय है 'वि' और 'असन' अर्थात् जो प्रवृत्ति जीवन के लिये विपत्ति रूप होती है। जीवन की विघातक है, वह व्यसन है।

इसी सन्दर्भ में यह ज्ञातव्य है कि धर्म के मूलतः उभय अंग हैं। प्रथम विचार है और द्वितीय आचार है। विचार सैद्धान्तिक रूप है, जबकि आचार व्यावहारिक रूप है। विचार जब भी आचरण में उतर जाते हैं, तब वे मूर्तिमान् हो पाते हैं। उनका प्रभाव चिर-स्थायी होता है। जैनधर्म का सैद्धान्तिक रूप श्रावक एवं श्रमण के आचरण में परिलक्षित होता है। श्रावक का जैन शासन में महनीय स्थान है। श्रावक की आचार-संहिता एक प्रकार से श्रमण के आचार की पृष्ठभूमि है। श्रावक के लिये इक्कीस आदर्श सद्गुणों का वर्णन -विवरण सम्प्राप्त होता है। संक्षेप में उन गुणों का निर्देश इस रूप में है - गम्भीर, रूपवान्, प्रकृति - सौम्य, लोकप्रिय, अक्रूर, पापभीरू, छल नहीं करने वाला, धर्म-कार्य में दूसरों की सहायता करने वाला, लज्जावान्, दयालु, राग-द्वेष से रहित अर्थात् मध्यस्थ भाव में रहने वाला, सौम्य दृष्टि वाला, गुण-रागी, सत्य कथन में रुचि रखने वाला, नैतिक - प्रामाणिक परिवार वाला, सुदीर्घ दर्शी, विशेषज्ञ, वृद्ध महापुरुषों के पीछे पथ का अनुगमन करने वाला, विनयशील, किये हुए उपकार को समझने वाला, परहित करने वाला, जिसे लक्ष्य की प्राप्ति हो गई हो, ये सर्वगुण वास्तव में श्रावक-

जीवन की पृष्ठभूमि के निर्माता हैं।

श्रावक के पैंतीस आदर्श गुणों का वर्णन भी उपलब्ध होता है। आशय यह है कि श्रावक धर्म के मार्ग पर चलने के लिये सर्वप्रथम इतनी अधिक योग्यता, पात्रता एवं श्रेष्ठता प्राप्त करनी चाहिये, जिससे धर्म-मार्ग पर अविचल रूप से अग्रसर हुआ जा सके। गृहस्थ धर्म को पालन करने का पात्र अर्थात् श्रावक वह होता है, जिसमें ये ३५ विशेषताएँ पाई जाती हैं- वह न्याय-नीति से धन उपार्जन करे, शिष्ट पुरुषों के आचार की प्रशंसा करे, अपने (यदि विवाह करना हो तो)कुल एवं शील में ही किन्तु भिन्न गोत्र वालों के साथ विवाह-सम्बन्ध करे, पापों से डरने वाला हो, प्रसिद्ध देशाचार का पालन करे, किसी की तथा विशेष रूप से राजा आदि की निन्दा न करे, ऐसे उचित स्थान पर घर बनाए जो न अधिक खुला हो और न अधिक गुप्त हो, घर में बाहर निकलने के द्वार अनेक न हों। सदाचारी पुरुषों की संगति करता हो, माता-पिता की सेवा-भक्ति करे, लड़ाई - झगड़े पैदा करने वाले स्थान से दूर रहे, चित्त में क्षोभ उत्पन्न करने वाले स्थान में न रहे। किसी भी निन्दनीय कार्य में प्रवृत्ति न करे। आय के अनुसार व्यय करे, अपनी आर्थिक स्थिति के अनुसार वस्त्र पहने। बुद्धि के अष्टविध गुणों से युक्त होकर धर्म-श्रवण करे। अजीर्ण होने पर भोजन न करे। नियत समय पर शान्ति और संतोष के साथ भोजन करे। धर्म के साथ अर्थ-पुरुषार्थ, काम-पुरुषार्थ और मोक्ष-पुरुषार्थ का इस प्रकार सेवन करे कि कोई किसी का बाधक न हो। अतिथि, साधु और दीन जनों का यथायोग्य सत्कार करे। कभी भी दुराग्रह के वशीभूत न हो। गुणों का पक्षपाती हो, जहाँ कहीं सद्गुण दिखाई दें, उन्हें ग्रहण भी करे, और गुणियों की प्रशंसा अवश्य करे। देश-काल के प्रतिकूल आचरण न करे। अपनी शक्ति एवं अशक्ति को समझे। अपने सामर्थ्य का विचार करके ही किसी सत्कार्य को सम्पन्न करे। सामर्थ्य न होने पर हाथ नहीं डाले। सदाचारी पुरुषों की तथा अपने से अधिक ज्ञानी पुरुषों की विनय भक्ति अवश्य करे। जिनके पालन-पोषण करने का उत्तरदायित्व अपने ऊपर हो, उनका उचित रूप से पालन-पोषण करे। दीर्घदर्शी हो अर्थात् पूर्व-पश्चात् का विचार पूर्वक कार्य करे। अपने हित एवं अहित को भी समझे, भलाई-बुराई को समझे। लोकप्रिय हो, अर्थात् अपने सदाचार और सेवा-कार्य द्वारा जनता-जनार्दन का स्नेह-सद्भाव सम्पादित करे। कृतज्ञ हो, अर्थात् अपने प्रति

किये हुए उपकार को नम्रता पूर्वक स्वीकार करे। लज्जाशील हो अर्थात् अनुचित कार्य करने में लज्जा का अनुभव करे। दयावान् हो, हृदय से कोमल हो, सौम्य हो, मुख पर शान्ति एवं प्रसन्नता झलकती हो। परोपकार करने में तत्पर हो। अन्य जनों की सेवा करने का अवसर हो, तब पीछे न हटे। काम-क्रोध आदि आन्तरिक छह शत्रुओं को त्यागने में समुद्यत रहे। इन्द्रियों को अपने वश में रखे। इस प्रकार श्रावक के पैंतीस गुणों के विषय में विस्तार के साथ वर्णन-विवेचन प्राप्त होता है।

इसी परिपार्श्व में यह भी ज्ञातव्य है कि श्रावक का वर्गीकरण चार प्रकार से भी किया गया है, जो इस रूप में है-(१) **नाम श्रावक**- जो केवल नामधारी श्रावक है।(२) **स्थापना श्रावक**- केवल श्रावक के रूप में जिसकी स्थापना कर दी गई है। (३) **द्रव्य श्रावक**- जिसने श्रावक के बारह व्रत आदि ग्रहण नहीं किये हैं, किन्तु श्रावक-जीवन की पृष्ठभूमि के रूप में सद्गुणों का आचरण करता है। (४) **भाव श्रावक**- इस के त्रिविध भेद हैं - (अ) **दर्शन श्रावक**-जिसने विशुद्ध सम्यक्त्व धारण की है, किन्तु श्रावक व्रत धारण नहीं किये हैं। (ब) **व्रती श्रावक**-केवल पाँच अणुव्रतों को धारण करने वाला है। (स) **उत्तरगुण श्रावक**- बारह व्रतों का पालन निर्दोष रूप से करने वाला है। इस प्रकार श्रावक की उच्च भूमिका पर पहुँचने के लिये इन आदर्शों पर चिन्तन करके उन्हें जीवन में अंगीकार करना चाहिये।

'**श्रावक**' शब्द के दो अर्थ हैं - प्रथम '**श्रु**' धातु से निष्पन्न है, जिसका वाच्य अर्थ- सुनना है। जो श्रमणों से श्रद्धापूर्वक निर्ग्रन्थ-प्रवचन को सुनता है, श्रवण करता है तथा तदनुसार यथाशक्ति उस पर आचरण करने का प्रयास करता है, पुरुषार्थ करता है वह श्रावक है। श्रावक शब्द से प्रायः यही अर्थ ग्रहण किया जाता है। '**श्रावक**' शब्द का अन्य अर्थ '**श्रा पाके**' नामक धातु के आधार से किया जाता है। प्रस्तुत '**धातु**' से संस्कृत रूप '**श्रावक**' निर्मित होता है। प्राकृत में इसे सावग कहते हैं। ऐसा संभव है कि '**श्रावक**' शब्द से यह अभिप्रेत रहा हो कि जो भोजन पकाता है अर्थात् गृहस्थ होता है वह श्रावक है। श्रमण भिक्षा से अपना जीवन-निर्वाह करते हैं, किन्तु श्रावक भोजनादि बनाने सहित आरम्भ-समारम्भ के कार्य भी करता है।

'**श्रावक**' शब्द के त्रिविध-अक्षरों पर भी विचार चिन्तन किया जा

सकता है। ये तीनों अक्षर श्रावक के पृथक्-पृथक् कर्तव्य का बोध कराते हैं- प्रथम **'श्रा'** अक्षर से यह अर्थ ध्वनित होता है कि जो जिन-प्रवचन पर दृढ श्रद्धा रखता है, और **'श्रा'** का द्वितीय अर्थ यह भी है कि जो श्रद्धा के साथ तीर्थंकर महाप्रभु की देशना पर अविचल श्रद्धा-भाव रखता है। श्रावक मनोरंजन की दृष्टि से अथवा दोष की दृष्टि से उत्प्रेरित होकर आगमों का श्रवण नहीं करता है। विवेक पूर्वक जिज्ञासा-बुद्धि से तर्क भी कर लेता है। उन सभी के पीछे श्रद्धा प्रधान रूपेण रहती है।**'श्रावक'** शब्द में द्वितीय अक्षर **'व'** है। **'व'** से यह अर्थ द्योतित होता है कि श्रावक सुपात्र, अनुकम्पा पात्र, मध्यम पात्र सर्व को बिना विलम्ब किये दान देता है। किसी भी पुण्यकार्य एवं धर्म-कार्य का पावन-प्रसंग उपस्थित होने पर वह इधर-उधर बगलें नहीं झांकता है। वह स्वयं कष्ट सहन करके भी दूसरों को दान देने में संकोच नहीं करता है। इस तरह **'व'** अक्षर से सत्कार्य का **'वपन'** अर्थ प्रगट होता है। **'व'** अक्षर से अन्य अर्थ **'वरण'** भी है। श्रावक हठाग्रही भी नहीं होता है। जो तथ्य धर्म, समाज और आत्मा के हित के लिये है, उसी को वह वरण करता है। **'व'** का अन्य अर्थ विवेक भी है। श्रावक की समस्त-क्रियाएँ विवेक पूर्वक होती हैं। वह विवेक की तुला पर तौल कर ही कोई आचरण करता है। उसका कोई भी कार्य अविवेक के साथ नहीं होता है। **'श्रावक'** शब्द का तृतीय अक्षर **'क'** है। उसके दो अर्थ अभिव्यक्त होते हैं। प्रथम अर्थ के अनुसार वह पाप को काटता है। श्रावक पापपूर्ण कार्यों में प्रवृत्त नहीं होता है। परिस्थिति विशेष से यदि पाप-कार्य में फंस जाता है तब वह अपनी विवेक-बुद्धि से अपने आपको उन से बचा लेता है। वह पूर्वकृत पाप कृत्यों को काटने के लिये, दान, शील, तप और भाव की विशेषतः आराधना करता है। **'क'** का अन्य अर्थ यह भी है कि वह अपनी आवश्यकताओं को शनैःशनैः कम करता है। उसकी प्रत्येक-प्रवृत्ति में संयम एवं संवर की ज्योति जगमगाती रहती है।

इसी परिप्रेक्ष्य में एक सप्राण-जिज्ञासा उपस्थित होती है कि श्रावक को श्रमणोपासक क्यों कहा? उसे अरिहन्तोपासक कहना चाहिये। श्रमण में संभवतः कतिपय दोष भी हो सकते हैं, परन्तु अरिहन्त सर्वथा निर्दोष होते हैं। उनकी सहज पहचान भी हो सकती है। प्रस्तुत जिज्ञासा का सहज समाधान यह है कि उपासना तभी पूर्ण हो पाती है जब उपास्य भी समक्ष हो। यदि उपास्य हमारे सन्मुख विद्यमान

न हो तब उपासक उपासना किस रूप में कर पायेगा? अरिहन्त काल-चक्र में स्वल्प होते हैं, वे किसी विशिष्ट काल में ही विद्यमान होते हैं, किन्तु श्रमण प्रलम्ब-समय तक विद्यमान रहते हैं। जिस समय श्रमणोपासक होता है उस समय श्रमण होता ही है। बिना श्रमणोपासक के श्रमण नहीं रह सकता। एक विवक्षा के आधार पर विचार करते हैं। अरिहन्त भी श्रमण ही हैं। यह सत्य है कि वे वीतराग श्रमण हैं। सामान्य श्रमण छद्मस्थ हैं। परन्तु सामान्य छद्मस्थ श्रमण की साधना भी श्रमणोपासक की साधना से कई गुणी उच्च कोटि की होती है। श्रमण का साक्षात् उपासक होने से वह श्रमणोपासक कहलाता है। सम्यग्दर्शन रूपी दिव्य रत्न स्वीकार करते समय व्यवहार की दृष्टि से श्रमण ही उसका गुरु होता है।

सारपूर्ण भाषा में यही कहा जा सकता है कि गृहस्थ श्रावक भी आर्य है। उनका मार्ग भी मोक्ष का मार्ग है। श्रमण के सदृश श्रावक भी आर्य की भूमिका पर संप्रतिष्ठित है और वह कर्म-पुद्गलों को शनैः-शनैः विनष्ट करने का सत्प्रयास भी करता है। एक श्रावक की जो भूमिका है वह वस्तुतः सामान्य स्तरीय नहीं है, अपितु विशिष्ट है।

जिनवाणी

-प्राणिमित्र नितेश नागौता जैन (कर सलाहकार)

हेय-ज्ञेय-उपादेय का सच्चा स्वरूप, हमें बताती है जिनवाणी।
सत्य, अहिंसा, मानवता की, सजग प्रहरी है जिनवाणी।।
परस्परोपग्रहो जीवानाम् का, प्रेरक संदेश सदा देती है जिनवाणी।
निज पर शासन, फिर अनुशासन, का आह्वान करती है जिनवाणी।।
स्वयं से स्वयं की मुलाकात, सदा कराती है जिनवाणी।
जीवन जीने की सर्वोत्कृष्ट जीवन शैली, सभी को देती है जिनवाणी,
समता, सादगी, विनय, विवेक का, झरना बहाती है जिनवाणी।
जग में अनुपम, पावन, प्रेरक, अद्वितीय है, सर्वकल्याणी जिनवाणी...

-ए.के. जैन एण्ड कम्पनी, १७५, जैन बोर्डिंग हाउस, भवानीमंडी (राज.)

चिन्तन

क्या तंत्र-मंत्र में शक्ति नहीं है?

श्री उदयमुनि जी म.सा.

चार-पाँच कॉलोनियों-गाँवों में भाइयों ने जो प्रश्न किए उन्हें संवाद रूप में यहाँ प्रस्तुत किया जा रहा है:-

प्रश्न : क्या तंत्र-मंत्र में शक्ति नहीं है? अब व्यक्ति ही नहीं जैन साधु-साध्वी भी तंत्र-मंत्र बताते हैं, क्या इन्होंने कोई सिद्धि प्राप्त कर रखी है? जनता के वांछित इच्छित काम भी होते देखे जाते हैं, जिससे उन पर श्रद्धा भी बढ़ती है। हम तो गृहस्थ हैं यदि हमारे काम सिद्ध होते हैं तो तंत्र-मंत्र और तांत्रिक-मांत्रिक पर श्रद्धा करने में क्या दोष है?

उत्तर- तंत्र-मंत्र में शक्ति हो सकती है। यह तंत्र-मंत्र के बीजाक्षरों और उनके समन्वय तथा तांत्रिक-मांत्रिक की साधना पर निर्भर है। तंत्र-मंत्र पौद्गलिक हैं। विशेषतः मंत्रों के विशिष्ट स्वर-व्यंजनों का एक लयबद्ध समन्वय होता है और उसे किसी निश्चित प्रक्रिया से, अमुक तपस्या करके, अमुक समय-स्थान पर, अमुक आसन या मुद्रा में मौन या सस्वर उच्चारण से उसमें एक ऊर्जाशक्ति उत्पन्न हो सकती है। पीड़ित एवं रोगी की पीड़ा व रोग मिट सकता है।

प्रश्न : आप 'सकता है' ऐसा क्यों कहते हैं, होता है, यह कहो।

उत्तर- यदि तंत्र-मंत्र से सारे रोग-शोक, दुःख दारिद्र्य मिट जाते हों, भूतप्रेत सब भाग जाते हों, विष उतर जाते हों तो फिर तंत्र-मंत्र ही साधते रहो, कुछ अन्य पुरुषार्थ मत करो। यदि सारे दुःख-दारिद्र्य मिट जाते हों तो सारे व्यापार-व्यवसायादि बंद कर दो। यदि सभी के भूत-प्रेत भाग जाते हों तो सभी मनोरोग चिकित्सालय(पागलखाने) बंद कर दो और सभी रोग मिट जाते हैं तो देश के सभी चिकित्सकों की छुट्टी कर दो, सभी अस्पताल बंद कर दो। बताओ क्या ऐसा होता है? क्या ऐसा हो सकता है? नहीं।

प्रश्न : यह तो श्रद्धा का प्रश्न है। शास्त्रों में आता है कि नवकारमंत्र और ओली तप से श्रीपाल की कोढ मिट गई। सुदर्शन सेठ के शूली का सिंहासन बन गया। यह तो प्रमाणित उदाहरण है, इनसे आप कैसे इंकार करते हैं?

उत्तर– पहले मूल प्रश्न समझ लें तो ये भी समझ में आ जायेंगे। मूल में दो बातें आपने उठाई हैं– (१) जैन साधु–साध्वी भी तंत्र–मंत्र साधते हैं, बताते हैं और (२) इनकी सिद्धि चमत्कार से हमारे कार्य सिद्ध हो जाते हैं तो क्या दोष है? मूल विषय से मत हटो। भगवान् महावीर द्वारा बताए मोक्षमार्ग का साधक निर्ग्रंथ(साधु या साध्वी) तंत्र–मंत्र नहीं साध सकता । यदि साधता है तो वह साधु ही नहीं है, आगमों में उसे स्पष्टतः पापश्रमण कहा है– ''निमित्त विद्या का आश्रय लेकर जो 'व्यवहार' चलाता है वह पापश्रमण है।''(उत्तरा. १७वां अध्ययन) शुभाशुभ लक्षण सूचक, स्वप्न फल विद्या, अंग स्फुरण विद्या का जो प्रयोग करते हैं, वे श्रमण कहलाने योग्य नहीं हैं। (उत्तरा.८/१३) घरपरिवार के सारे जंजाल छोड़कर आत्मशुद्धि हेतु वीतरागता की साधना करने वाला साधक यदि गृहस्थों के इन जंजालों के निवारण में अटक गया तो समझो लक्ष्य से ही भटक गया। इसी भटकन से बचाने एवं लक्ष्य पर ही स्थिर रहने हेतु आगमों में स्पष्टतः निषेध किया कि निर्ग्रंथ आत्मविद्या और आत्मसाधना के अतिरिक्त अन्य किसी भी तंत्र–मंत्र विद्या और उसकी साधना में न लगें। यदि आत्मसाधना करते हुए कोई सिद्धि–लब्धि बाह्य में प्राप्त हो जाए तो उसे प्रकट नहीं करें, उपयोग नहीं करें।

आचार्य स्थूलिभद्र ने पूर्वों का ज्ञान ग्रहण करते हुए ऐसी बाह्य लब्धि प्राप्त कर ली तो संयमी बहिनों को चमत्कृत करने के लिए सिंह का रूप बनाकर बैठ गए। वे चमक गई तो अपने रूप में आ गए। गुरु, आचार्य भद्रबाहुस्वामी को ज्ञात हुआ तो उन्होंने वाचनी देना बंद कर दी कि यह पूर्वों का ज्ञान पाने योग्य नहीं है। संघ की विनति और शिष्य द्वारा भारी दण्ड–प्रायश्चित्त लेने के बाद भी शेष चार पूर्वों की शब्दी वाचना दी। अर्थ नहीं समझाया।

प्रश्न : परन्तु भद्रबाहु आचार्य ने ही रोग–शोक–उपसर्गहरण हेतु उवसग्गहर स्तोत्र बनाया। क्या वे पापश्रमण हैं?

उत्तर– उवसग्गहर स्तोत्र आचार्य भद्रबाहु द्वितीय ने बनाया। समस्त जैनियों पर कुपित होकर किसी वाणव्यंतर देव ने उन्हें रोगग्रस्त बना दिया था। पूरे धर्म संघ या भगवान् के तीर्थ पर ही घोर संकट आ गया, तब उसके निवारण हेतु यह स्तोत्र बनाया था। वह एक अपवाद है।

प्रश्न : परन्तु यह तो एक सर्वमान्य स्तोत्र है और साधु–साध्वी भी रोग–शोक निवारणार्थ इसका जाप बताते हैं। लाभ भी होता देखा जाता है। इसमें तो

कोई दोष नहीं है ?

उत्तर– चाहे उद्भट विद्वान् और आचार्य ने बनाया, चाहे आज इसके उपयोग को बताया भी जाता हो, लाभ ही होता है यह कहते हों, किन्तु भगवान् महावीर के अटल वैज्ञानिक सिद्धान्त से मेल नहीं खाता। सूत्रकृतांग सूत्र में आया है- स्वकृत कर्मपरिणाम को कोई सुर या असुर अन्यथा नहीं कर सकता। (शीलांकवृत्ति, पृ. २८९) सिद्धान्त है कि कोई भी रोग शोक-दुःख दारिद्र्य अपने ही पूर्वोपार्जित असातावेदनीय कर्म का फल है। उसे भोगे बिना छुटकारा नहीं है। समभाव से सहन करके, धर्मध्यान या आत्मध्यान में लीन होकर उसकी दुःखानुभूति से परे होकर उस कर्म की निर्जरा हो जाती है।

प्रश्न : यदि मंत्र जाप से वह मिट जाता है तो ऐसा करने में क्या दोष है?

उत्तर– मंत्र जाप से नहीं, उसके असातावेदनीय कर्म की स्थिति पूरी हो जाने से, साता वेदनीय कर्म के उदय से ही ऐसा होता है। यदि तंत्र-मंत्र या तांत्रिक-मांत्रिक को इसमें कर्त्ता माना तो भगवान् का अटल सिद्धान्त अमान्य करना जैसा है। किसी के मिट भी जाए तो किसी के नहीं। अन्ततः मानना तो कर्मसिद्धान्त ही पड़ेगा।

प्रश्न : यह तो श्रद्धा का प्रश्न है। जो श्रद्धा रखेगा, उसका मिटता है।

उत्तर– ऐसी अंध श्रद्धाएँ मत पालो। भगवान् के कर्म सिद्धान्त पर दृढ़श्रद्धा रखो।

प्रश्न : क्या मंत्र में शक्ति मानें ही नहीं? हम तो गृहस्थ हैं। किसी अन्य तांत्रिक-मांत्रिक के चक्कर में न पड़कर यदि अपने ही साधु-साध्वियों का आशीर्वाद लेकर, मंत्र जपकर क्यों नहीं मिटाएँ। जैसे चिकित्सक के पास जाकर औषधि लेकर मिटाते हैं, आप चिकित्सकों से मंत्ररूप औषधि ले लेते हैं। क्या बुराई हैं?

उत्तर– तंत्र-मंत्र की शक्ति पौद्गलिक शक्ति है। मंत्र के वे अक्षर-शब्द पुद्गल हैं। उनकी पौद्गलिक ऊर्जा इस पुद्गलरूप शरीर पर प्रभाव डाल सकती है। इसके लिए पुरुषार्थ करने से दृष्टि इन पुद्गलों पर ही रही। आत्मदृष्टि, आत्मशक्ति, आत्म-साधना करके उसे अनन्त आत्मिक-शक्ति(ऊर्जा) को तो भूल गए। जब तक पुद्गल की मान्यता है कि यही मैं और मेरा है तब तक मिथ्यादृष्टि है। उसी के ज्ञान में शक्ति लगाई तो वह हुआ अज्ञान। उसी की प्राप्ति हेतु पुरुषार्थ किया तो वह मिथ्यामोहादि रूप कुचारित्र है। मत कहो कि हम तो गृहस्थ हैं। गर्व से कहो कि हम भगवान् महावीर के सम्यक् दृष्टि साधक हैं, श्रावक या

संयमी हैं। इनकी दृष्टि पुद्गल और पौद्गलिक शक्ति पर नहीं आत्मा पर, परमात्मा पर है और लक्ष्य होता है एक मात्र मोक्ष।

प्रश्न : आप तो सीधे चरम-परम की बात करते हैं, शरीर में रोग हो, आजीविका नहीं चलती हो, परिवार में कोई दुःख हो तो आत्मसाधना ही कैसे कर पाएँगे?

उत्तर- मैंने जिस लक्ष्य से घर-परिवार-वैभवादि छोड़कर दीक्षा ली तो मैं तो उसी हेतु पुरुषार्थ करता हूँ और आपको भी उसी हेतु बोध ओर प्रेरणा दे सकता हूँ। आपने जो ये प्रश्न किए उनके उत्तर भी सुन लो- शरीर में तीव्र रोग होते हुए भी सनतकुमार चक्रवर्ती ने उत्कृष्ट धर्मध्यान में लीनता की थी, फिर मोक्ष गए। तीव्र नहीं, तीव्रतम वेदना होते हुए भी हमारे परम आराध्य ध्यान में अडोल-अकम्पित रहे यथा- गजसुकुमाल मुनि, मेतार्य मुनि, खंदक ऋषि। एक स्कंदक मुनि के पाँच सौ शिष्यों ने शरीर ही नष्ट हो रहा था ऐसी वेदना से दृष्टि हटाकर पुद्गल-शरीर से परे होकर शुक्लध्यान की साधना कर कैवल्य पाया था। ऐसी वेदना में भी चंडकौशिक सर्प (श्रावक), उपासकदशांग के सात श्रावकों ने धर्मध्यान की उत्कृष्ट साधना की और वे एक भव करके मोक्ष जायेंगे। भयंकर आजीविका संकट में भी पूणिया श्रावक ने ऐसी साधना की कि वे एक भव और करके मोक्ष जायेंगे। आत्मा की साधना आत्मा के ही गुण प्रकट करने पर होगी, उसमें इस शरीर या शरीर के रोग, परिवार के दुःख-द्रारिद्र्य को बाधक मत मानो।

प्रश्न : आप तो ऊँची-ऊँची बातें करते हो। इतने साधु-साध्वी तंत्र-मंत्र बताकर हजारों लोगों का भला कर रहे हैं। कई 'पुड़िया' देते हैं, भीड़ लगी रहती है। आपके पास कोई आता ही नहीं। प्रत्यक्ष उदाहरण देखा-अमुक परिवार कभी स्थानक आता नहीं था, किन्तु आज एक महाराज की भक्ति में बैठा है। मैंने महाराज से पूछा। वे बोले, बेटी की शादी नहीं हो रही थी, किसी व्रत के साथ जाप बताया, काम हो गया। भक्त कहते हैं- महाराज जी! हमें तो बेटा भी चाहिए, वे हो जाएँ तो उन्हें अच्छे पद-धन मिल जाएँ, उनकी शादी हो जाए, व्यापार में बरकत नहीं हो, छापा पड़ जाए तो ऐसे में आप गुरुओं का आशीर्वाद लेने आ जाते हैं, आप तो आशीर्वाद दो। आपके भक्तों की समस्या नहीं निपटाओगे तो हम कहाँ जाएँ? आप ही हमारा एक मात्र सहारा हो।

उत्तर- साधुवेष ऐसा 'भला' करने के लिए नहीं लिया है। मैं किसी की निंदा-बुराई करने नहीं आया हूँ, परन्तु आप लोग यदि साधु-साध्वियों से उक्तवर्णित या

ऐसी ही कई अपेक्षाएँ लेकर उनके पास जाते हों और इन कार्यों के लिए आशीर्वाद चाहते हों तो समझो अभी मिथ्यात्व और अज्ञान के अंधेरे में ही हो और चतुर्गतिरूप संसार में ही गोते खाते रहोगे। आगमों में श्रावक-श्राविकाओं को साधु-साध्वियों के माता-पिता की उपमा दी है। भगवान् ने आपके ऊपर एक आध्यात्मिक दायित्व डाला है कि यदि कोई साधु-साध्वी रत्नत्रय की आराधना से कभी भटक जाए तो उसे पुनः संयमसाधना में सुस्थिर करो। सांसारिक इच्छाओं की पूर्ति हेतु यदि आप इनका उपयोग करते हैं तो आप भी भटके और प्रतिपल स्मरणीय-वंदनीय इन पाँचवें (साधु) पदधारियों को भी मार्गभ्रष्ट करके घोर कर्म-बांध रहे हो तथा मोक्षपथिकों को संसार में भटकाते हो।

✡

वीतराग ध्यान-शिविर

श्रीमती विमला लोढ़ा

ध्यान आभ्यन्तर तप है। ध्यान ऐसा तप है जिसका संबंध आत्मा के भावों से है। चित्त को एकाग्र करना ध्यान है। यह अनुकूल के प्रति राग एवं प्रतिकूल के प्रति द्वेष न करने के अभ्यास से ही संभव है। पाँच इन्द्रियों के २३ विषयों के भोगों से हटकर ही वीतराग ध्यान का रसपान किया जा सकता है।

१५ जून २००८ से २२ जून २००८ तक आयोजित 'वीतराग ध्यान- शिविर' मेरे लिए स्वर्णिम अवसर था। शाही बाग, जोधपुर में सुश्रावक गुरुजी श्री कन्हैयालाल जी लोढ़ा साहब एवं श्री संजय जी अग्रवाल के सान्निध्य में मैंने ध्यान का अभ्यास किया। सर्वप्रथम मन के द्वारा आती-जाती श्वास को देखना था। श्वास में शब्द, रूप, गंध, रस नहीं होते हैं जिससे मन का विषयों में भटकना रुक जाता है। मन के एकाग्र होने से भूत-भविष्य में जाना रुक जाता है। शरीर के भीतर जगने वाली संवेदना का अनुभव होने लगता है। ध्यान में राग-द्वेष न करके समताभाव में रह सकते हैं और समता भाव ही सामायिक है। साथ ही साथ अनेक रोगों से छुटकारा पाने का साधन भी ध्यान है।

ऐसी ही अनुभूति मुझे ध्यान शिविर में भाग लेने से संभव हुई। शहद को चखकर ही उसकी मधुरता का स्वाद ज्ञात होता है। यदि आपको भी इसका रसपान करना हो तो ध्यान-साधना शिविर में भाग लीजिए तथा राग-द्वेष से परे वीतरागता को पाना सार्थक सिद्ध कीजिए।

-२ च १४, प्रतापनगर, जोधपुर

विशिष्ट प्रश्नोत्तर

उपासकदशांग सूत्र से पायें तात्त्विक बोध (१२)

प्रश्न२०– 'धम्मपण्णत्ति' का क्या अभिप्राय है ?

उत्तर– **'धम्मपण्णति'** का शाब्दिक अर्थ है, धर्म की विशेष जानकारी। दशवैकालिक सूत्र के चौथे अध्ययन में **'धम्मपण्णत्ति'** शब्द धर्म को जीवन में उतारने की प्रतिज्ञा रूप में आया है। जानकारी और प्रतिज्ञा, दोनों का आशय भिन्न-भिन्न है। धर्म की प्रतिज्ञा, धर्म की जानकारी के बाद की क्रिया है। अतः वह **'धम्मपण्णति'** शब्द से कैसे ग्राह्य हो सकती है? वस्तुतः प्रभु महावीर के समय **'धम्मपण्णति'** शब्द धर्म के अभ्यास के रूप में प्रचलित रहा हो,ऐसा लगता है। उपासकदशांग सूत्र का कुण्डकौलिक अध्ययन इस बात का समर्थन करता है। शास्त्रों में विवेचन मिलता है- **'तए णं से कुण्डकोलिए...... अंतिए धम्मपण्णत्तिं उवसंपज्जित्ताणं विहरइ'** अर्थात् किसी समय की बात है कि दोपहर के समय अशोक वन में पृथ्वी शिला पट्टक की ओर कुंडकौलिक श्रावक आया, आकर उसने अपने नाम की अँगूठी और उत्तरासन-वस्त्र उतारकर शिला पर रखा, रखकर श्रमण भगवान् महावीर की धर्मप्रज्ञप्ति स्वीकार कर विचरने लगा-अर्थात् श्रमण भगवान् महावीर स्वामी से उच्च जीवन जीने की धर्म शिक्षा, धर्म प्रतिज्ञा कर विचरने लगा। धम्मपण्णत्ति का एक अर्थ धर्म शिक्षा भी होता है, आगमों में शिक्षा दो प्रकार की बताई है- **(१) ग्रहण शिक्षा(२)आसेवना शिक्षा।**

(१) ग्रहण शिक्षा– अर्थात् गुरु मुख से, गुरु से अधिगत ज्ञान, गुरु की ही कृपा से प्राप्त करना।

(२) आसेवना शिक्षा– चिंतन-मनन निदिध्यासन द्वारा ज्ञान प्राप्त करना। अनुभव से प्राप्त ज्ञान आसेवना शिक्षा है अथवा प्रतिलेखना, भिक्षाविधि आदि संयमी जीवन के आवश्यक कार्यों की शिक्षा आसेवना शिक्षा है।

उपासकदशांग में धम्मपण्णत्ति शब्द ग्रहणशिक्षा, आसेवना शिक्षा के रूप में प्रयुक्त हुआ है। प्रभु महावीर के श्रीमुख से दसों ही

श्रावकों ने धर्म शिक्षा सुनी और उसे जीवन में उतारने की प्रतिज्ञा लेकर विचरने लगे।

प्रश्न२१– 'पग्गहिएणं' शब्द का क्या आशय है?

उत्तर– **'पग्गहिएणं'** प्रगृहीतेन–उत्कृष्ट भावतः स्वीकृतेन। अर्थात् उत्साहपूर्वक ग्रहण की हुई । जैन दर्शन भाव प्रधान है। **''यस्मात् क्रियाः प्रतिफलन्ति न भाव शून्याः''** यहाँ पर भावविहीन क्रिया का महत्त्व नहीं है। जबरदस्ती से किया जाने वाला कार्य फलदायी नहीं होता है। यद्यपि धार्मिक अनुष्ठानों में फल की इच्छा रखना उचित नहीं है, किन्तु यहाँ फलदायी का अर्थ सफलता से लेना है। जो कार्य, जितने अधिक उत्साह–उंमग से आंतरिक लगन से किया जाता है, भावना की श्रेष्ठता से किया जाता है, वह उतना ही अधिक आत्मिक आनन्द देने वाला और कर्म–निर्जरा का कारण बनता है। जिनशासन में प्रत्येक कार्य भावों से जुड़कर ही किया जाता है। क्योंकि इच्छा के बिना भावों से जुड़ना संभव नहीं है। यहाँ धर्म ही आत्म–साक्षी से होता है तो इच्छामि पडिक्कमिउं, इच्छामि खमासमणो, इच्छामि ठामि काउस्सगं तो वंदना, प्रतिक्रमण और कायोत्सर्ग आदि प्रत्येक आवश्यक भी स्वेच्छा एवं आन्तर उत्साह से ही किये जाते हैं। छोटे से छोटा और बड़े से बड़ा व्रत फिर वह चाहे कोई तप हो, प्रतिमा अंगीकार करना हो अथवा संलेखना संथारा ही क्यों न हो, पूर्ण उत्साह उमंग–उल्लास से ही ग्रहण किया जाता है, तभी तो यहाँ मृत्यु भी महोत्सव बन जाती है। प्रस्तुत शास्त्र में श्रमणोपासक आनंदजी के संलेखना संथारा ग्रहण करने के वर्णन में **'पग्गहिएणं'** शब्द प्रयुक्त हुआ है, जिसका अर्थ है–आनंदजी ने उत्साह पूर्वक संथारा ग्रहण किया।

प्रश्न२२– 'मायी मिच्छदिट्ठी' का आशय क्या है?

उत्तर– उपासकदशांग सूत्र में कामदेवजी को उपसर्ग देने आये हुए देव के लिए विशेषण के रूप में यह शब्द प्रयुक्त हुआ है। शास्त्रों में बताया– **'स्ववीर्यनिगूहनं माया'** अर्थात् आत्मलक्ष्यी कार्यों में अपने वीर्य को छुपाना माया है। दशवैकालिक अध्ययन–५, उद्देशक–२, गाथा–४६ में कहा **'तवतेणे,वयतेणे.......** । तप करने का सामर्थ्य होते हुए भी जो तप नहीं करता है वह तप का चोर है, मायी एवं दम्भी है। और ऐसा तप

चोर मायावी साधक काल करके किल्विषी देवों में उत्पन्न होता है, जो कि एकान्त मिथ्या दृष्टि होते हैं। धर्म-कार्य में की हुई माया ने साधक को मिथ्यादृष्टि बना दिया। माया-मिथ्यात्व को जन्म देने वाली होने से मायी को मिथ्यादृष्टि कहा गया हो ऐसा प्रतीत होता है। माया के एक नहीं अनेक रूप हैं। जैसे- (१) **छल**-ठगने की वृत्ति (२) **कपट**- अन्य की समझ को कुंठित करने की वृत्ति (३) **जाल**- किसी को फँसाने की वृत्ति (४) **वृतमोहन**-भ्रम-उत्पादक आचरण (५) **वक्रता**-किसी के ठगने के लिए नहीं बल्कि यों ही उलटे चलना, वक्रता अर्थात् विपरीत क्रिया (६) **विपरीत मति**- उलटा चिन्तन। कथनी-करनी में एकता का अभाव वक्रता है। मोक्ष-मार्ग से विपरीत चलना वक्रता है। अथवा अपनी लघुता न हो जाय इस दृष्टि से दूसरों से उलटा व्यवहार करना वक्रता है। विपरीत मति अर्थात् उलटी बुद्धि। इसका कुछ आशय वक्रता में गर्भित हो जाता है। किन्तु इन दोनों को अलग-अलग इसलिए कहा गया, क्योंकि वक्रता में कदाचित् समझ सही हो सकती है, किन्तु विपरीत मति में नहीं। उलटी बुद्धि वाला प्रत्येक बात उलटी ही सोचता है। वह यथार्थ को पकड़ नहीं पाता। इसी आशय से संभवतः मायी को मिथ्या दृष्टि कहा गया है। क्योंकि वह विपरीत बुद्धि वाला है। सत्य को मिथ्या और मिथ्या को सत्य अथवा संसार एवं संसार के कारणों को यथार्थ और मोक्ष एवं मोक्ष के कारणों को अयथार्थ समझता है, जो कि मिथ्यात्व का भेद एवं कारण है। आगमों में बताया है-

''जो वयसा जहत्थत्तं, मिच्छाभावं च दंसइ।
माइं तु मिच्छादिट्ठी हिं बेइ पहू जिनेश्वरो।।''

अर्थात् जो वचन से यथार्थ कहता है, किन्तु क्रिया में मिथ्या भाव दिखाता है उसे मायी को जिनेश्वर प्रभु ने मिथ्यादृष्टि कहा है। जो वास्तव में है माया उसका गोपन करती है और जो नहीं है, उसे दर्शाती है, इसलिए माया मिथ्यात्व का प्रवेशद्वार है। मायावी मिथ्यादृष्टि और अमायी सम्यग्दृष्टि होता है। क्योंकि माया, सरलता को आने नहीं देती। अनुभवियों का कहना है, धर्म बिना जीवन भोग-प्रधान होता है और भोगों में जीवनबुद्धि मिथ्यात्व है। इस तरह माया-मिथ्यादृष्टि का सम्बन्ध घनिष्ठ है। और यही माया मिथ्यात्व में आबद्ध कर जन्म-मरण कराती है।

तत्त्वज्ञान प्रश्नोत्तरी (क्रमशः ४४)

आओ मिलकर ज्ञान बढ़ाएँ

(काय स्थिति - अनन्त प्रदेशी स्कन्ध)

श्री धर्मचन्द जैन

प्र.३०० अनन्त प्रदेशी स्कन्ध किसे कहते हैं?

उत्तर अनन्त परमाणुओं के मिलने से जो स्कन्ध बनता है, उसे अनन्त प्रदेशी स्कन्ध कहते हैं।

प्र.३०१ अनन्त प्रदेशी स्कन्ध के मुख्य भेद कौन-कौन से हैं?

उत्तर अनन्त प्रदेशी स्कन्ध के मुख्य दो भेद हैं- १. चतुःस्पर्शी अनन्त प्रदेशी स्कन्ध, २. अष्टस्पर्शी अनन्त प्रदेशी स्कन्ध।

प्र.३०२ चतुःस्पर्शी अनन्त प्रदेशी स्कन्ध की क्या-क्या विशेषताएँ होती हैं?

उत्तर चतुःस्पर्शी अनन्त प्रदेशी स्कन्ध की मुख्य विशेषताएँ निम्नांकित हैं-

१. यह कम से कम एक आकाश प्रदेश पर तथा अधिक से अधिक सम्पूर्ण लोक में रहे हुए असंख्यात आकाश प्रदेशों पर स्थित रह सकता है।

२. इस स्कन्ध में स्पर्श के ८ भेदों में से शीत-उष्ण, स्निग्ध-रुक्ष ये चार स्पर्श ही पाये जाते हैं। शेष चार स्पर्श नहीं पाये जाते।

३. यह स्कन्ध उत्कृष्ट अवगाहना वाला हो जाने पर अचित्त महास्कन्ध कहलाता है।

४. यह स्कन्ध सूक्ष्म भाव में परिणत रहने के कारण चर्म चक्षुओं से देखा नहीं जा सकता।

५. अनन्त प्रदेशी चतुःस्पर्शी अनन्त स्कन्ध भी एक आकाश प्रदेश पर स्थित रहे हुए हैं, रह सकते हैं।

प्र.३०३ अष्टस्पर्शी अनन्त प्रदेशी स्कन्ध की क्या-क्या विशेषताएँ हैं?

उत्तर अष्टस्पर्शी अनन्त प्रदेशी स्कन्ध की मुख्य विशेषताएँ इस प्रकार हैं-

१. यह स्कन्ध कम से कम असंख्यात आकाश प्रदेशों पर स्थित रहता है, एक आकाश प्रदेश पर नहीं रह सकता।

२. यह स्कन्ध कम से कम अंगुल के असंख्यातवें भाग क्षेत्र में तथा अधिक से अधिक लोक के असंख्यातवें भाग क्षेत्र में स्थित रहता है।

३. यह स्कन्ध यदि सूक्ष्म भाव में परिणत है तो चर्म-चक्षुओं से नहीं देखा जा सकता। किन्तु यदि स्थूल भाव में बादर परिणाम में परिणत है तो चर्म चक्षुओं से भी देखा जा सकता है।

४. इस स्कन्ध में स्पर्श के आठों भेद पाये जाते हैं।

५. यह स्कन्ध लोकव्यापी नहीं हो पाने के कारण अचित्त महास्कन्ध नहीं बन पाता है।

प्र.३०४ महास्कन्ध किसे कहते हैं?

उत्तर उत्कृष्ट अवगाहना वाले स्कन्धों को महास्कन्ध कहते हैं। यह दो प्रकार का है- १ अचित्त महास्कन्ध, २. सचित्त महास्कन्ध।

अचित्त महास्कन्ध अनन्त प्रदेशी चतुःस्पर्शी स्कन्धों में अपने-आप (स्वाभाविक परिणमन द्वारा) बनते व बिखरते रहते हैं। इनके बनने व बिखरने में केवली समुद्घात के समान आठ समय लगते हैं। प्रथम समय में दण्डाकार, दूसरे समय में कपाटाकार, तीसरे समय में मन्थानाकार, चौथे समय में लोकपूरित, पाँचवें समय में मन्थानाकार, छठे समय में कपाटाकार, सातवें समय में दण्डाकार तथा आठवें समय में अपने मूल रूप में आ जाता है। अचित महास्कन्ध समय-समय पर बनते-बिखरते रहते हैं। इन्हें कोई व्यक्ति नहीं बनाता, ये अपने आप बनते-बिखरते रहते हैं। एक साथ एक से अधिक भी अचित्त महास्कन्ध बन सकते हैं।

सचित्त महास्कन्ध केवली समुद्घात के समय बनता है। जब कोई केवली भगवान केवली समुद्घात करते हैं तब उसमें पूर्व वर्णित क्रमानुसार आठ समय लगते हैं। केवली भगवान् के आत्मप्रदेश चौथे समय में सम्पूर्ण लोक व्यापी हो जाने से तथा आत्म-प्रदेशों की मुख्यता होने से इसे सचित्त महास्कन्ध कहते हैं।

प्र.३०५ अनन्त के कितने भेद होते हैं?

उत्तर अनन्त के अनन्त भेद हो सकते हैं। जैसाकि पूर्व अंकों में उल्लेख

किया जा चुका है कि- संख्यात के संख्यात भेद, असंख्यात के असंख्यात भेद तथा अनन्त के अनन्त भेद हो सकते हैं।

प्र.३०६ कायस्थिति के थोकड़े में अनन्त के मुख्य कितने भेद वर्णित हैं?

उत्तर कायस्थिति के थोकड़े में अनन्त के मुख्य तीन भेद वर्णित हैं - १. अर्ध पुद्गल परावर्तन काल, २. अढाई पुद्गल परावर्तन काल, ३. असंख्यात पुद्गल परावर्तन काल।

पुद्गल परावर्तन अनन्त काल को मापने की इकाई है। अनन्त अवसर्पिणी, अनन्त उत्सर्पिणी काल व्यतीत होने पर अर्ध पुद्गल परावर्तन होता है। अर्धपुद्गल परावर्तन से पाँच गुना अढ़ाई पुद्गल परावर्तन काल होता है।

अर्ध पुद्गल परावर्तन में भी अनन्त पल्योपम अनन्त सागरोपम काल लग जाता है तो असंख्यात पुद्गल परावर्तन काल का तो कहना ही क्या?

प्र.३०७ हमारे जीव ने कितने पुद्गल परावर्तन व्यतीत कर लिये?

उत्तर भगवती सूत्र, प्रज्ञापना सूत्र आदि में वर्णन है कि प्रत्येक जीव ने प्रायः अनेक/अनन्त पुद्गल परावर्तन काल व्यतीत कर लिये हैं। जब तक सम्यग्दर्शन युक्त ज्ञान व चारित्र से हमारा जीवन सम्पूरित नहीं बनता है तब तक जन्म-मरण का ओर-छोर आने वाला नहीं है। मानव जीवन की दुर्लभता सम्यक् चारित्र के परिपालन के कारण है। इस दुर्लभता को सुलभ करने में हमारा प्रयास या पुरुषार्थ जगना चाहिये। **(क्रमशः)**

-रजिस्ट्रार, अ.भा. श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर

उत्तराध्ययन सूत्र पर प्रतियोगिता आयोजित

अ.भा. श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल शाखा जयपुर द्वारा सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल से प्रकाशित 'उत्तराध्ययन सूत्र भाग-१,२,३' पर खुली किताब परीक्षा का आयोजन किया जा रहा है। प्रतियोगिता प्रारम्भ होने की तिथि १६ सितम्बर २००८ है। विस्तृत जानकारी जिनवाणी के आगामी अंक में प्रकाशित की जाएगी।

- उर्मिला बोथरा, अध्यक्ष, मो. ९३१४५०१८५६

दर्शन

वस्तु की सामान्य-विशेषात्मकता

श्री चिरंजीव अनेकान्त

अस्तित्व की जिज्ञासा के साथ दर्शन का जन्म होता है। जैन दर्शन वस्तु को द्रव्यपर्यायात्मक, नित्यानित्यात्मक, एकानेकात्मक अथवा सामान्य विशेषात्मक अंगीकार करता है।

भारतीय दर्शनों में वस्तु के सम्बन्ध में पृथक्-पृथक् मान्यताएँ हैं। कूटस्थ द्रव्यवाद के समर्थक वेदान्ती हैं। उनके अनुसार द्रव्य (ब्रह्म) ही सत्य है। वह कूटस्थ है, एक है। संसार की विविधता (पर्याय) अवास्तविक या मिथ्या है। इसी प्रकार से सांख्य एवं योग ने प्रकृति और पुरुष इन दो तत्त्वों को स्वीकार किया है। उनका 'पुरुष' भी वेदान्त की तरह कूटस्थ नित्य है। वह अपरिणामी है, जबकि प्रकृति परिणामधर्मा है। 'पुरुष' के लिए ही वह प्रवृत्ति करती है। अनात्मवाद के प्रबल समर्थक बौद्धों के अनुसार क्षणिकवाद या परिवर्तन ही सत्य है। अर्थात् जैनदर्शन की भाषा में इनका 'द्रव्य' जैसी किसी सत्ता में विश्वास नहीं है, केवल पर्याय को ही सत्य मानते हैं। इसी तरह से न्याय, वैशेषिक दर्शनों में यद्यपि वस्तु को सामान्य और विशेष माना गया है, परन्तु वे दोनों को निरपेक्ष मानते हैं। जबकि जैनदर्शन वस्तु को कथंचित् सामान्यविशेषात्मक मानता है। इस दर्शन में द्रव्य और पर्याय की व्याख्या अनेकांत के आधार पर की गई है। यह द्रव्य एवं पर्याय दोनों को समान रूप में स्वीकार करता है।

अनेकान्तवाद के आधार पर यूं तो द्रव्य में अनंत विरोधी युगल होते हैं, पर यहाँ संकेत के रूप में चार विरोधी युगल दिये जा रहे हैं-

१. शाश्वत और परिवर्तन (नित्य और अनित्य)

२. अस्तित्व और नास्तित्व (सत्-असत्)

३. सामान्य और विशेष

४. वाच्य और अवाच्य

सत्य-अभिव्यक्ति की त्रिपुटी है- शब्द, अर्थ और ज्ञान। विभिन्न दार्शनिकों ने उसे भिन्न-भिन्न दृष्टिकोणों से देखा। वेदान्त ने उसके तीन रूपों की व्याख्या की-पारमार्थिक सत्य, व्यावहारिक सत्य और प्रातिभासिक सत्य। ब्रह्म

पारमार्थिक सत्य है, इन्द्रिय जगत् व्यावहारिक और मृगमरीचिका ज्ञान स्वप्नज्ञान आदि प्रातिभासिक सत्य है। इसी प्रकार से बौद्धों ने सत्य को द्विरूप माना है - परमार्थ सत्य और संवृति सत्य। वस्तु का स्वलक्षण (क्षणिकता) परमार्थ सत्य है जबकि वस्तु का सामान्य लक्षण 'अपोह' जनित होने के कारण संवृति सत्य (काल्पनिक सत्य) माना गया है।

दार्शनिक मत वैभिन्य की दो आधार शिलाएँ हैं- निर्विकल्प अनुभूति और सविकल्प ज्ञान। निर्विकल्प अनुभूति से ज्ञेय का साक्षात्कार होता है, अतः तद्विषयक बोध भिन्न नहीं होता, जबकि ऐन्द्रियक स्तर पर होने वाले सविकल्प ज्ञान में ज्ञेय का साक्षात्कार नहीं होने के कारण उसका बोध नाना प्रकार से होता है। वेदान्त दर्शन में द्रव्य को पारमार्थिक सत्य मान कर पर्याय को काल्पनिक मान लिया गया। बौद्धों ने पर्याय को पारमार्थिक मानकर द्रव्य को काल्पनिक मान लिया जबकि जैनदर्शन के अनुसार द्रव्य और पर्याय दोनों पारमार्थिक सत्य हैं। कभी पर्याय प्रधान और द्रव्य गौण तो कभी इसका विपरीत होता है। हमारा विकल्प जब संश्लेषणात्मक होता है तब द्रव्य उपस्थित होता है, पर्याय खो जाते हैं यह द्रव्य प्रधान गौण पयार्यावस्था कहलाती है। दूसरी तरफ जब हमारा विकल्प विश्लेषणात्मक होता है तब पर्याय उपस्थित होता है, द्रव्य खो जाता है। अनेकान्त व्यवस्था के युग में कुछ अविनाभाव के नियम निर्धारित किये गये। यह इस युग(संभवतः आचार्य उमास्वाति या तत्सदृश अन्य आचार्यों के द्वारा जब जैन वाङ्मय में संस्कृत भाषा का प्रयोग शुरु किया तब से ही इस परिवर्तनकारी युग के लक्षण शुरु हो गये)की महत्त्वपूर्ण निष्पत्ति है।

अनेकांत का नियम है सामान्य और विशेष का अविनाभाव। इसका फलित यह है कि द्रव्य रहित पर्याय और पर्याय रहित द्रव्य सत्य नहीं है। पंचास्तिकाय की गाथा १२ में इसी आशय की पुष्टि की गई है जो इस प्रकार है :-

दोण्हं अणण्णभूदं भावं समणा परूविंति ।।

सत्य और मिथ्या के बीच यही दूरी होती है कि सामान्य विशेष से और विशेष सामान्य से जब निरपेक्ष होते हैं तब वे दोनों विकल्प मिथ्या हो जाते हैं और जब सामान्य और विशेष एक-दूसरे के प्रति सापेक्ष होते हैं तब सत्य कहलाते हैं। दोनों एक-दूसरे का नियमन करते हैं तो वे मिथ्या हो जाते हैं और दोनों अपने विषय का प्रतिपादन करते हैं तब वे सत्य होते हैं।

तादात्म्य की अपेक्षा से ही सामान्य और विशेष में भेद किया जाता है या इनमें भिन्नता का समर्थन किया जाता है। जैन दर्शन में यह बोध एक स्वतंत्र दृष्टि के रूप में मान्य है न कि प्रमाण रूप में। इस दृष्टि (नय) का नाम है नैगम नय। यह उभयग्राही दृष्टि है। सामान्य और विशेष दोनों इसके विषय हैं। इससे सामान्य विशेषात्मक वस्तु के एक अंश का ही बोध होता है।

'सामान्य और विशेष स्वतंत्र पदार्थ हैं' इस कणाद दृष्टि को जैनदर्शन स्वीकार नहीं करता। कारण यह है कि सामान्य रहित विशेष व विशेष रहित सामान्य की प्रतीति सम्भव नहीं होती। ये दोनों ही पदार्थ के धर्म (गुण) हैं। एक पदार्थ की दूसरे पदार्थ, देश और काल में अनुवृत्ति होती है। वह सामान्य अंश और है जो व्यावृत्ति होती है, वह विशेष अंश कहलाता है। केवल अनुवृत्ति रूप या व्यावृत्ति रूप कोई पदार्थ नहीं हो सकता। जिस पदार्थ की जिस समय दूसरों से अनुवृत्ति मिलती है उसकी उसी समय दूसरों से व्यावृत्ति भी मिलती है। सामान्य विशेषात्मक पदार्थ ही प्रमाण का विषय है। (सामान्यविशेषात्मा तदर्थो विषयः)।

सामण्ण अह विसेसे दव्वे णाणं हवेइ अविरोहो।
साहइ तं सम्मत्तं पहु पुण तं तस्स विवरीयं।।

नयनचक्र की इस गाथा का यह अर्थ है कि सामान्य और विशेष रूप द्रव्य में जो विरोध रहित ज्ञान होता है वह सम्यक्त्व का साधक है तथा जो उससे विपरीत होता है, वह नहीं।

-International Law Center, 244, NSC Bose Road, CHENNAI - 600001

प्रेरक-प्रसंग

धर्म-अधर्म

प्रवीण कुमार जैन

एक समय की बात है। धर्म के विषय में चर्चा करते हुए आश्रम के छात्रों के दो दल हो गए। सभी छात्र अपने-अपने दल की तरफ से धर्म के संबंध में अलग-अलग तर्क रख रहे थे। इससे विवाद की स्थिति उत्पन्न हो गई। विवाद इतना बढ़ गया कि आवेश उबल पड़ा और हाथापाई हो गई। इस स्थिति में गुरु आए और हस्तक्षेप करते हुए उन्होंने कहा- धर्म साधना का कोई भी पक्ष युक्ति युक्त क्यों न हो, किसी भी पक्ष में स्वभाव की विकृति के लिए कोई स्थान नहीं है। क्रोध व आवेगपूर्वक जो कुछ भी कहा जाएगा, वह धर्म होते हुए भी अधर्म बन जाएगा। यह सुनकर छात्रों के तमतमाते हुए चेहरे ठण्डे पड़ गए। उन्हें वास्तविक ज्ञान मिल गया।

-७ ए, जेल के पीछे, विराट नगर, बजरिया, सवाईमाधोपुर-३२२००१

युवा-स्तम्भ

लोभ का सच

श्री ऋषभराज बाफना

कदाचित् सोने और चाँदी के कैलाश के समान असंख्य पर्वत हो जायें तो भी लोभी मनुष्य को तृप्ति नहीं होती, क्योंकि इच्छाएँ आकाश के समान अनन्त हैं।

लोभ के गणित को समझो। जो तुम्हारे पास है लोभ उसको नहीं देखता। जो तुमसे दूर है उसी को देखता है।

एक बहुत मोटा आदमी था। डॉक्टर ने उसको सलाह दी कि अगर तुम कुछ व्यायाम आदि नहीं करोगे तो शीघ्र मर जाओगे। कम से कम ऐसा करो गोल्फ खेलना शुरू कर दो। वह डॉक्टर के पास वापस सात दिन बाद आया और बोला। बड़ी कठिनाई हो गई है। अगर गेंद को पास रखता हूँ तो वह दिखाई नहीं देती। तोंद बड़ी होने की वजह से वह आगे आ जाती है। अगर गेंद दूर रखता हूँ तो चोट नहीं मार सकता अब करूँ क्या?

लोभ की तोंद बड़ी है। जो पास होता है वह दिखाई नहीं देता। जो दूर होता है वही दिखाई देता है। जैसे-जैसे पास आया, तोंद के नीचे ढँक गया। तुम्हारे पास दस हजार हैं तो दिखाई नहीं पड़ते। लाख दिखाई पड़ते हैं। लाख हो गए, वे नहीं दिखाई पड़ते, वे तोंद के नीचे आ गए। अब दस लाख दिखाई पड़ते हैं। जो तुम्हारे पास है वह दिखाई नहीं पड़ेगा।

जो इस बात को समझ लेगा वह इस बात को भी समझ लेगा कि लोभ से तृप्त होने का कोई उपाय नहीं है। तुम यह मत समझना कि गरीब आदमी का मन तृप्त नहीं होता, अमीर का हो जाता होगा। किसी का मन तृप्त नहीं होता। अमीर गरीब से भी ज्यादा गरीब हो जाता है। जितना होता जाता है उतनी ही मुश्किल होती जाती है। इतना हो गया, फिर भी बेचैनी बढ़ती जाती है। गरीब को तो एक आशा रहती है कि जब पर्याप्त धन हो जायेगा, तो सब ठीक हो जायेगा, लेकिन अमीर की तो वह आशा भी छिन जाती है। इतना हो गया और कुछ भी नहीं हुआ।

इच्छा आकाश की तरह अनन्त है। वह दिखाई पड़ता है कि छू रहा है, पृथ्वी को कोई दस-पाँच मील दूर। पहुँचो तो कभी पृथ्वी से मिलता नहीं। तुम

जितने बढते हो क्षितिज उतना दूर होता जाता है। तुम्हारे पास क्या है, इससे कुछ अन्तर नहीं पड़ता। तुम्हारे और तुम्हारे लोभ का अन्तर समान रहता है। गरीब और उसकी उपलब्धि में तथा अमीर और उसकी उपलब्धि में उतना ही अन्तर होता है।

ए शेख खुल्द की तारीफ नहीं है।
मैं इसका तलबगार कभी हो नहीं सकता।।

कवि ने कहा कि अगर तुम्हारे स्वर्ग की यही प्रशंसा है कि वहाँ सोने के पेड़ हैं, हीरे जवाहरात मणि माणक के फूल हैं और वहाँ सुन्दर स्त्रियाँ हैं जिनका रूप कभी ढलता नहीं और वहाँ शराब के चश्मे हैं तो कवि कहता है कि तेरे स्वर्ग की यह तारीफ नहीं है। यही प्रशंसा है तो मैं इसका तलबगार हो नहीं सकता। मैं इसकी आकांक्षा नहीं कर सकता, क्योंकि यह तो वही मूढता है जो संसार की है। इसमें तो कुछ भेद न हुआ। यहाँ थोड़े-थोड़े ढेर थे, वहाँ सोने-चाँदी के कैलाश जैसे पर्वत होंगे। यहाँ सुन्दर स्त्रियाँ थीं उनका रूप ढल जाता था। वहाँ सुन्दर स्त्रियाँ होंगी जिनका रूप न ढलेगा। अन्तर परिमाणात्मक है 'गुणात्मक नहीं है' अन्तर मात्र **Quantity** का है **Quality** का नहीं। जिसने जीवन में लोभ की प्रक्रिया को समझ लिया, वह स्वर्ग की माँग नहीं करेगा। अगर तुम अभी भी स्वर्ग की माँग कर रहे हो तो तुम समझना कि तुम संसार को ही बार-बार भोगे जा रहे हो। तुम्हारा स्वर्ग तुम्हारे संसार का ही फैलाव है। इसका ही विस्तार है।

जिससे लोभ व्यर्थ हो जाए ऐसे समाधान का नाम समाधि है। अब लोभ यहाँ का नहीं और स्वर्ग का भी नहीं। लोभ मात्र व्यर्थ हो गया। अब लोभ की कोई आकांक्षा बाकी न रही। लोभ का सार पकड़ लिया कि लोभ कभी तृप्त नहीं हो सकता, इसलिए अब लोभ छोड़ दिया। संसार का लोभ नहीं , लोभ ही छोड़ दिया- क्योंकि लोभ जब तक है संसार बनाए चला जाता है, लोभ संसार का सूत्र है। गिद्धों को देखा है जहाँ लाश पड़ी है वहीं मंडराते हैं इसी प्रकार लोभ भी गिद्ध की भाँति व्यर्थ पर, असार पर अर्थात् मुर्दे पर मंडराता रहता है और जीवन व्यर्थ हो जाता है।

जिसने समझा लोभ के सत्य को वह लोभ से मुक्त हुआ। लोभ से जो आनन्द निचोड़ने की कोशिश करेगा बस उलझ गया। कोशिश जारी रहेगी। हाथ कभी कुछ न लगेगा, तृप्ति नहीं होगी, क्योंकि इच्छा आकाश के समान अनन्त है। तुम लोभ की दौड़ में गँवा रहे हो, मिलता तो कुछ है नहीं। आत्मा को बेचते जाओगे टुकड़े-टुकड़े करके, क्योंकि बिना अपने को बेचे धन इकट्ठा नहीं होगा। बिना अपने

को बेचे तुम लोभ की दौड़ में न लग पाओगे। हर कदम लोभ की दिशा में उठाया हुआ आत्मघात है। यह जिस दिन जीवन का दिया बुझने लगेगा उस दिन पछताओगे, उस दिन रोओगे, लेकिन तब बहुत देर हो चुकी होगी।

तूफाने दर्दे गम से न गुल हो सकी मगर।
शमा हयात सांस के झोंके से बुझ गई।।
बड़े-बड़े तूफान दुःखदर्द भी जिसे नहीं बुझा पाते।
वह जिन्दगी बस श्वास के जरा से झोंके से बुझ जाती है।।

-(संकलित) सुदर्शन पल्सेज, एच-२, M.I.D.C., जलगांव (महा.)

प्रेरक प्रसंग

प्राणिरक्षा

श्री अंकुश जैन

समाट् अकबर के दरबार में एक महाकवि बनारसीदास थे। अपनी सत्य-भाषण प्रियता के लिए वे काफी प्रसिद्ध थे। एक दिन अकबर ने महाकवि की परीक्षा लेनी चाही। उन्होंने पूछा- 'महाकवि, मेरी मुट्ठी में पक्षी है, बताओ, यह पक्षी जीवित है अथवा मृत?'

प्रश्न सुनने के बाद महाकवि विचार-मग्न हो गए। उन्होंने विचार किया, यदि मैं कहता हूँ कि पक्षी जीवित है तो अकबर मुट्ठी दबाकर क्षण भर में उस पक्षी को मार देंगे और यदि मैं कहता हूँ कि पक्षी मरा हुआ है तो सम्राट् मुट्ठी खोलकर पक्षी को आकाश में उड़ा देंगे। मैं दोनों ही स्थितियों में झूठा सिद्ध होऊँगा। काफी सोच विचारने के बाद महाकवि ने जवाब दिया- 'सम्राट्, यह पक्षी तो मरा हुआ है?'

अकबर ने मुट्ठी खोली, पक्षी आकाश में उड़ गया। अकबर ने ठहाके लगाते हुए कहा- 'महाकवि बनारसीदास, तुम तो झूठ बोलते हो।'

महाकवि ने शांत भाव से जवाब देते हुए कहा- "महाराज! जिस सत्य को बोलने से किसी को हानि होती हो, वह सत्य नहीं होता है। सत्य तो वह है जो किसी को राहत पहुँचाये। यदि मैं यह कहता कि पक्षी जीवित है तो आप निश्चित रूप से मुट्ठी दबा कर क्षण भर में उस निर्दोष पक्षी को मार देते। मेरे सत्य कहने से उसकी हत्या हो जाती। अतः मैंने जानबूझ कर ही कहा कि यह पक्षी मृत है।"

अकबर महाकवि का यह तर्क सुनकर काफी प्रभावित हुए और उन्होंने भरी सभा में उनकी सराहना की।

-जैनसन वाला स्टेशनर्स, पचपहाड़ रोड, भवानीमण्डी, पिन-३२६५०२ (राज.)

Tattva bodha

NAMASKĀRA SŪTRA

Dr. Priyadarshana Jain

TEXT	*TRANSLATION*
Namo Arihantāṇaṃ	*-Obeisance to Arihantas*
Namo Siddhāṇaṃ	*-Obeisance to Siddhas*
Namo Āyariyāṇaṃ	*-Obeisance to Acharyas*
Namo Uvajjhāyāṇaṃ	*-Obeisance to Upādhyayas*
Namo Loe Savva Sahuṇaṃ	*-Obeisance to all the Ascetics*
Eso Panca Namukkāro	*-This five fold obeisance*
Savva Pāvappaṇāṣaṇo	*-Is the destroyer of all sins*
Maṇgalāṇaṃ Ca Savvesiṃ	*-Of all that is auspicious*
Paḍhamaṃ Havai Maṇgalaṃ	*-This is foremost.*

Meaning

I offer my obeisance to ***arihantas,*** the perfect embodied souls, to ***siddhas,*** the perfect souls in ***nirvāṇa,*** to ***acāryas,*** the masters of adepts, the ***upadhyāyas,*** the scholarly ascetics and to all the ***sādhus,*** the ascetics devoted to the contemplation of the self. This five-fold obeisance is the destroyer of all sins and is foremost among all that is auspicious.

Explanation

Jaina religion and culture occupies a unique place in Indian culture and ***namaskāra sūtra*** or popularly known as the ***namaskāra mantra,*** is the heart of ***jaina*** faith, religion and culture. ***jainism*** is out and out a spiritual faith and more than a religion it is a way of life. It is not based on any dogma or blind faith. Hence this ***namaskāra sūtra*** too is a spiritual ***mantra. jaina*** beliefs and practices resonate through this great ***mantra.*** For the ***jains,*** nothing is greater than this ***mantra.*** Unlike other ***mantras,*** this ***mantra*** offers salutation to worthy souls, and not to one particular deity. Instead of personal worship, personality worship is given prime

importance. It is also called ***parameṣṭhi pantra.*** All the saints who have become pure and perfect are supreme i.e ***parameṣṭhis.***

There are nine ***padas*** in the ***mantra*** of which the first five are the ***mūla padas*** i.e the important ones and the next four reveal the fruit of chanting the first five ***padas.*** Through the first five ***padas Jains*** offer their salutation or obeisance to the gods i.e. ***arhats*** and Siddhas and to the Gurus i.e. ***ācāryas, upādhyayas*** and ***sādhus.*** The incantation of this Mantra can metamorphose the wicked into virtuous, the cruel into kind-hearted, the dishonest into honest, the disloyal into loyal, the impure into pure and the bondaged into liberated. Numerous aspirants, sages, and saints have purified and perfected themselves through the chanting of this great ***mantra.*** Since all the sacred, righteous, virtuous and the holy souls of the past, present and future are included in this ***mahāmantra,*** it is automatically proved that by chanting this ***mantra,*** unique spiritual energy is generated and it multiplies all the merits and annihilates all the demerits. This ***mantra*** is the cream of all the ***mantras*** unequalled in three worlds. It is capable of destroying all sins and annihilating all ***karmas.*** It is the powerful means to attain omniscience. It is the treasure house of providing all favorable conditions through which one can transgress the transient world of births and deaths. It is the most excellent of all the excellent things, the most auspicious of all that is auspicious. It is the essence of the knowledge preached by the ***jinas*** i.e. conquerors. This ***mantra*** has the potential to free one from all mental and physical ailments; it begets honour and fame and terminates the worldly-sojourn besides bringing abundant prosperity, not only in this world but also in one's future births.

The ***namaskāra mahāmantra*** consists of sixty-eight letters, and these letters are like ***tīrthas*** and is the essence of all knowledge i.e. fourteen purvas. The ***namaskāra sūtra***

appears in the ***bhagavatī sūtra, kalpa sūtra*** besides the ***āvaşyaka sūtra***. According to the ***jains*** it is an eternal ***mantra***. It is a ***mantra,*** which effects spiritual upliftment through self-realization, which is a pre-requisite for emancipation. The soul wanders in the world endlessly due to attachment, hatred, delusion and passions like anger, pride, deceit and greed. This ***mahāmantra*** enables one to conquer the above and experience spiritual bliss and peace here and now. It awakens the soul and all the desires and wishes come to a stand still due to the chanting of this ***mantra***. We have many ***mantras*** to fulfill one worldly desire or another, but this ***mantra*** enables one to conquer all desires, which is the most difficult task for mundane souls, caught in the web of transnsmigration. Although one may reap mundane benefits through this ***mantra*** just as a farmer gets weeds and husk alongwith the grains, the purpose of this ***mantra*** is to seek self- realization, purification, and perfection. This ***mantra*** enables one to enhance one's will power and to lead a life of self-realization by which one can manifest the unconditioned pure self. Right understanding of this ***mantra*** enables one to conquer the senses and to transcend the mind, which is the purpose of all ***sādhanā***. Besides it enables one to bear all afflictions and difficulties with a positive attitude. It enhances ones concentration and powers of the mind by which one can endure the impossible.

As ***Jainism*** believes that all souls are potentially divine, this ***mantra*** enables one to manifest the divinity that is latent in each one of us. The inherent powers of the soul are veiled by a set of ***karmas*** and invocation of the pure souls through the ***mantra*** enables one to realize one's pure soul, there upon one endures to remove the veils of ***karmas*** through Right- Understanding, Right-Faith and Right-Endurance.

(Continue in the next issue)

-Lecturer : Dept. of Jainology, University of Madras, Chennai

धारावाहिक (क्रमशः५१)

जम्बूकुमार

जैनदिवाकर श्री चौथमल जी म.सा.

पूर्ववृत्तः- जम्बूकुमार ने तीन मित्रों के दृष्टान्त से पहले मित्र को शरीर के समान, दूसरे मित्र को कुटुम्बी जन के समान और तीसरे मित्र को सद्गुरु के समान बतलाया। राजकुमार के तीसरे मित्र की तरह सद्गुरु ही सच्चे मित्र होते हैं जो आत्मस्वरूप को बतलाकर संसार सागर से तैरने का उपदेश देते हैं। किन्तु संसार में आसक्त जीव पदार्थों को जुटाने में, सम्बन्धी-जनों के साथ मोहयुक्त होने में सुख मानता है। अब आगे......

मोहयुक्त अविवेकी जीव कर्मों के उदय से प्राप्त चेतना या अचेतन पदार्थों को अपना समझता है। वह मानो कर्ज ली हुई सम्पत्ति को अपनी मानता है। ज्ञानीजन अपनी आत्मिक ज्ञान-दर्शन-सुख-वीर्य रूपी सम्पत्ति के अतिरिक्त शरीर, धन, धाम, स्त्री, पुत्र, परिवार आदि सांसारिक वस्तु को अपनी नहीं समझते हैं। तत्त्वज्ञानी मुमुक्षु को यही भावना सदैव अपने हृदय में रखनी चाहिए। इससे संयोग, वियोग और मृत्यु के प्रसंग उपस्थित होने पर आर्त्तध्यान नहीं होता है। इतना ही नहीं, बल्कि समताभाव शनैःशनैः विस्तृत करना चाहिए। यदि कोई व्यक्ति अपना शत्रु बन कर प्राण लेना चाहता है या किसी अन्य के प्राण का अनिष्ट करना चाहता है तो वह उस समय क्रोध रूपी पिशाच के वश होकर पागल बन जाता है। अथवा वह तीव्र नशा कर लेने वाले किसी उन्मत्त के समान हो जाता है। पागल की चेष्टा का बुरा मानना एक प्रकार की मूर्खता है। तत्त्वज्ञानी सोचता है कि किसी ने यदि मेरे शरीर का नाश भी कर दिया तो इसमें मेरी क्या हानि है? शरीर जड़ है, स्वयं विनाशशील है। शरीर के साथ मेरा क्या सम्बन्ध है? मैं उस पर ममताभाव रखकर क्यों अपना अहित करूँ? यह तो मेरे रहने का मात्र घर है। घर के नष्ट हो जाने या भस्म हो जाने से घर में रहने वाला नष्ट नहीं हो जाता। मैं चेतनमय आत्मा हूँ। चेतना अमूर्तिक और अविनाशी है। मेरा अपने स्व-स्वरूप से इतना प्रगाढ़ तादात्म्य

सम्बन्ध है कि उसे कोई छुड़ा नहीं सकता। मेरी आत्मा का विनाश करने की किसी में शक्ति नहीं है। जब मेरी आत्मा का कोई न बिगाड़ कर सकता है और न सुधार कर सकता है तब मैं किससे राग करूँ और किससे द्वेष करूँ? मेरे लिए जगत् के समस्त प्राणी समान हैं। अतएव राग-द्वेष रूप विकारों का त्याग करके समताभाव के स्वयंभूरमण सागर में रमण करना ही मेरे लिए उचित है।

यदि शरीर का दासपना करोगे तो आत्मा का अकल्याण होगा और यदि आत्म-कल्याण में तत्पर हो जाओगे तो शरीर का दासभाव स्वतः छूट जाएगा। वस्तुतः जो मनुष्य, धन, धाम आदि भौतिक सम्पत्ति में मोहित हो जाते हैं अथवा आत्मा के अन्दर कर्मोदय के कारण उत्पन्न होने वाले राग-द्वेष आदि विकारों में मग्न रहते हैं, वे रात-दिन भोगोपभोग की सामग्री संग्रह करने में उसका रक्षण करने में और रक्षण न होने पर पश्चात्ताप करने में व्याकुल रहते हैं। वे शरीर की चाकरी में ही अपना समस्त जीवन व्यतीत कर देते हैं। जो विवेकशील महापुरुष हैं वे देह को धर्म-साधना में लगाते हैं, जप, तप, शील-संयम पालते हैं, धर्म-ध्यान करते हैं, आत्मा के हित करने वाले अनुष्ठान करते हैं तथा आत्मा को मुक्ति के मार्ग पर ले जाते हैं।

आत्मा को मोक्ष के प्रति सन्निकट लाने में शरीर को काबू में करना पड़ता है और इस कारण शरीर कृश भी हो जाता है। यही नहीं, मोक्ष के साधन जितने भी कार्य हैं वे एक प्रकार से शरीर का सर्वदा के लिए नाश करने वाले हैं। इन साधनों का जब परिपूर्ण विकास हो जाएगा तब आत्मा के साथ शरीर का बिल्कुल सम्बन्ध नहीं रहेगा। ऐसी अवस्था में ज्ञानीजनों का यही कर्त्तव्य है कि वे आत्मा से भिन्न पर-पदार्थ रूप इस शरीर पर ममता न रखें और शरीर के खातिर आत्मा का अहित न करें।

किसी तत्त्वज्ञानी ने कहा हैः-

आत्मा ज्ञानी परममंगलं ज्ञानमासेव्यमानः।
कायोऽज्ञानी वितरति पुनर्घोरमज्ञानमेव ।।
सर्वमेतद् जगति विदितं दीयते विद्यमानम्।
कश्चित् त्यागी न हि खकुसुमं क्वापि कस्यापि दत्ते।।

अर्थात् आत्मा ज्ञान स्वरूप है इसलिए उसकी आराधना करने से ज्ञान की प्राप्ति होती है। शरीर जड़- अज्ञानमय है अतएव उसकी आराधना से

घोरतर अज्ञान ही प्राप्त हो सकता है। संसार में यह बात प्रसिद्ध है कि जो चीज जिसके पास होती है वह उसी चीज़ को दे सकता है,क्योंकि कभी कोई त्यागी किसी को आकाश-कुसुम देने में समर्थ नहीं हो सकता है।

बड़े ही सरल शब्दों में यहाँ पर बताया गया है कि जो पूर्ण ज्ञान और पूर्ण सुख की प्राप्ति करना चाहते हैं उन्हें आत्मा का ही सेवन करना चाहिए, क्योंकि आत्मा स्वयं ज्ञान-आनन्दमयी है। जो शरीर का सेवन करेंगे उनमें जड़ता आएगी, क्योंकि शरीर जड़ रूप है। अतएव-

गौरो रूपधरो वृढः परिवृढः स्थूलः कृशः कर्कशः,
गीर्वाणो मनुजः पशुर्नरकभूमः षंढः पुमानङ्गना।
मिथ्यात्व बिदासि कल्पनमिदं मूढो विबुध्यात्मनो,
नित्यं ज्ञानमयस्वभावममलं सर्वव्यपायच्युतम्॥

अर्थात् मैं गोरा हूँ, सुन्दर हूँ, श्रीमान् हूँ,मोटा हूँ, दुबला हूँ, कठोर हूँ, देव हूँ, मनुष्य हूँ, पशु हूँ, नारकी हूँ, नपुंसक हूँ, पुरुष हूँ इन कल्पनाओं का त्याग करके तू अपनी आत्मा के अविनाशी, निर्मल और सब प्रकार के दुःखों से रहित सुख स्वरूप तथा ज्ञानमय स्वरूप का विचार कर। तात्पर्य यह है कि यह सब कर्मजन्य पर्यायें हैं और आत्मा सब कर्मजन्य पर्यायों से विलक्षण शुद्ध द्रव्य रूप है। शुद्ध द्रव्य रूप आत्मा का विचार करने से ही आत्मा में शुद्धता का आविर्भाव होता है।

श्री गुरु महाराज इस प्रकार भेद-विज्ञान का उपदेश देकर युवराज रूप जीव से कहते हैं- "भाई, यदि तुम मेरे कहे हुए पथ पर चलोगे तो कालरूपी महीपति का हुक्म सदा के लिए रद्द हो जाएगा। तुम एक ऐसे स्थान पर जा पहुँचोगे जहाँ काल की पहुँच नहीं है।" गुरु महाराज द्वारा इस प्रकार सान्त्वना मिलने पर जीव को कुछ शान्ति मिली।

प्रिये! देखो, जब संसार का कोई भी व्यक्ति काम न आया तो अन्त में गुरु महाराज ही आड़े आए। कुटुम्ब ने भी कोई सहायता न की। रूपश्री! अब तुम ही कहो तुम्हारी बात मानूँ या गुरु महाराज का आदेश पालन करूँ? तुम्हारा कहा मानता हूँ तो चौरासी का चक्कर तैयार है और गुरु का आदेश मानता हूँ तो अनन्त आनन्दमय, अनन्त ज्ञानमय, अव्याबाध मुक्तिपद प्राप्त होता है।

जम्बूकुमार का यह विस्तृत विवेचन सुन कर सातवीं पत्नी रूपश्री भी अन्य प्रतिबोध पाई हुई स्त्रियों में जाकर शामिल हो गई।

अब सिर्फ आठवीं स्त्री जेतश्री शेष रही थी। सात स्त्रियों के साथ जम्बूकुमार का जो वार्तालाप हुआ था, उसे जेतश्री ने कान लगाकर, बड़े ध्यान से सुना था। जम्बूकुमार ने सबकी युक्तियों को, सबके आग्रह को और सबके अनुनय-विनय को, जिस कौशल के साथ काट दी थी, उसे वह भलीभाँति जान चुकी थी। यह सब जानकर उसे अपनी सफलता पर तनिक भी विश्वास न था, फिर भी प्रयत्न करने में कुछ शेष नहीं रखना चाहिए ऐसा सोच कर वह जम्बूकुमार के सामने आई। अत्यन्त नम्रता के साथ वह कहने लगी-

जेतश्री-प्राणनाथ! हम ऐरी-गेरी बालिकाएँ नहीं हैं। रास्ते चलते आपके पीछे नहीं पड़ गई हैं। हम सब कुलीन हैं और समाज की साक्षी से आप पाणि-ग्रहण करके हमें लाए हैं। आपने हमारी रक्षा करने की प्रतिज्ञा की है। वह प्रतिज्ञा इस समय भी मेरे कानों में गूँज रही है। फिर आप हमसे एकदम किनारा क्यों काटना चाहते हैं? साधारण आदमी जिसे पत्नी बनाकर लाता है उसे छोड़ नहीं देता। फिर आप तो प्रतिष्ठित हैं, कुलीन हैं, ज्ञानी हैं, लोक-परलोक की बातें जानते हैं। आप हमारे साथ यह व्यवहार क्यों कर रहे हैं? किसी को आश्रय देकर आसमान में चढ़ाना और फिर धक्का देकर नीचे पटक देना क्या उचित है? इसमें हमारा ही अनिष्ट नहीं है बल्कि आपकी भी अप्रतिष्ठा होगी, उसे हम किस प्रकार सहन करेंगी? लोक में अप्रतिष्ठा फैलाकर लोकोतर लाभ प्राप्त करने से भी क्या होगा? इससे तो धर्म की भी अवहेलना होगी। लोग कहेंगे- ''गृहस्थी के भार को न संभाल सकने के कारण धर्म का ढोंग कर लिया है। आप स्वयं बुद्धिमान हैं, फिर भी साधु बनने की कु-टेक आपने पकड़ रखी है।''

इसके अतिरिक्त एक बात और है। आप अपने माता-पिता के इकलौते पुत्र हैं। दो-चार पुत्र होते तो आपके दीक्षा ले लेने पर भी उन्हें तसल्ली रहती। वे वृद्ध-अवस्था में हैं। उन्हें सहारे की आवश्यकता है। संसार में माता-पिता के लिए पुत्र ही सर्वश्रेष्ठ अवलम्बन है। वह अवलम्बन यदि न हो तो किसी प्रकार का काम चल भी जाता है और इतना अधिक दुःख नहीं होता। मगर पुत्र होते हुए भी यदि वह काम न आवे तब माता-पिता की वेदना

का पार नहीं रहता। उन्हें निराशा के घोर अन्धकार में पड़ना पड़ता है। यदि आप दीक्षा ले लेंगे तो उनके दुःख की सीमा न रहेगी। हमारा ध्यान आप न भी रक्खें, तो भी उनका ध्यान आपको रखना चाहिए। उन्होंने बड़ी आशा से आपका पालन-पोषण संरक्षण किया है। उन्होंने हृदय के समस्त वात्सल्य रस से आपका जीवन सींचा है, अपने कष्टों की तनिक भी चिन्ता न करके सदा आपके सुख और आपकी सुविधा का ध्यान रखा है। उन्होंने आपसे बड़े-बड़े मंसूबे पूरे होने की इच्छाएँ रखी हैं। पर आप उनकी तमाम आकांक्षाओं पर, समस्त मंसूबों पर एकदम कुठाराघात करने पर उतारू हो रहे हैं। परोपकारी और जन्म देने वाले माता-पिता के साथ इस प्रकार का व्यवहार करना आप जैसे बुद्धिमान पुरुषों को शोभा नहीं देता। आपका कर्त्तव्य है कि आप पहले उन्हें पूर्ण रूप से सन्तुष्ट करें, उनकी बलवती आशाओं को सफल बनाएँ, सब प्रकार से सुखी करें। इसके बाद उचित अवसर आने पर दीक्षा धारण करें। परलोक की साधना से पहले इस लोक की साधना करनी चाहिए। (क्रमशः)

तीर्थंकर होने के बीस बोल

(यह रचना बीस बोलों को याद करने हेतु सरल तर्ज में होने से विशेष उपयोगी है)

(तर्ज- सेवो सिद्ध सदा जयकार...... ।)

श्री जशकरण डागा

सेवो बीस बोल श्रेयकार, जाँ से आनंद मंगल थाय।
आनंद मंगल थाय, जाँ से तीर्थंकर पद पाय।।सेवो।।
[१]अरिहंत,[२]सिद्ध,[३]प्रवचन,[४]गुरु,[५]स्थविर,[६]बहुश्रुत और [७]तपस्वी।
भक्ति करे शुद्ध भाव से इनकी, वाञ्छित फल सब पाय।।१।। सेवो...
[८]ज्ञान भणे, दर्शन [९]शुद्ध पाले, [१०]विनय [११]आवश्यक करता।
पाले [१२]शील, शुभ [१३]ध्यान [१४]तपस्या, दे [१५]दान पात्र हर्षाय।।२।। सेवो...
[१६]वैयावृत्त्य, [१७]गुरुकार्य करे नित, नवनव ज्ञान [१८]भणाय।
[१९]श्रुतभक्ति, [२०]प्रभावना तीर्थ, उत्कट पुण्य कमाय।।३।। सेवो...
ज्ञाता सूत्र आठवां अध्ययन, देखो इसकी साख।
'डागा' आराधन करो भाव से, तीर्थपति हो जाय।।४।। सेवो

-डागा सदन, संघपुरा, पो० टोंक-३०४००१ (राज.)

उपन्यास (१०)

भाई-बहन

उपाध्याय श्री केवलमुनि जी म.सा.

पूर्ववृत्तः- "नई रानी निर्मला ने कुत्ते के पिल्ले को जन्म दिया है"- यह सूचना पाते ही राजा रूपसेन रनिवास में गये। वहाँ अन्य चार रानियाँ पहले से ही मौजूद थीं। रानियों के तीक्ष्ण व्यंग्य से क्षुभित राजा ने निर्मला को कुलक्षिणी मानकर महल के पीछे की कोठरी में कैद करवाने की आज्ञा दे दी। इस आज्ञा से सभी रानियाँ मन ही मन खुश हुईं। उधर रानी निर्मला इसे स्वकर्म-दोष जानकर महल के पिछवाड़े में रहने लगी। और इधर........

जिस समय राजा रूपसेन वन से निर्मला को घोड़े पर बिठाकर भागा, उस समय, उसी वृक्ष पर बैठा, उसका भाई सोमदत्त जड़ सा बना रह गया था। सोमदत्त नौ वर्ष का ही तो था। वह समझ ही न सका कि अचानक यह क्या हो रहा है ? कौन है यह व्यक्ति जो मेरी बहन को घोड़े पर बिठाकर भगाये लिए जा रहा है। डर की अधिकता के कारण उसके मुँह से चीख भी न निकल सकी।

जब तक वह उस अप्रत्याशित घटना को समझ सका, तब तक तो वह घुड़सवार उसकी बहन निर्मला को लेकर बहुत दूर जा चुका था।

सोमदत्त पेड़ पर से उतरा। बहन-बहन! दीदी-दीदी! चिल्लाता हुआ घुड़सवार के पीछे दौड़ा, लेकिन कहाँ घोड़े की दौड़ और कहाँ बालक की चाल! सोमदत्त बहुत पीछे रह गया।

भागता-भागता गिरा; फिर उठा और फिर दौड़ा, दौड़ता ही रहा, लेकिन तब तक तो घुड़सवार आँखों से ओझल हो चुका था, टापों की आवाजें भी सुनाई पड़ना बन्द हो गई। उसकी आँखों के सामने अँधेरा छा गया। वह पूरी तरह निराश हो गया। वह धड़ाम से जमीन पर गिर गया, बेहोश हो गया।

बेहोशी की हालत में कुछ देर तक सोमदत्त पड़ा रहा। तभी नगर का एक व्यापारी उधर आ निकला, वह पास के ही गाँव में किसानों से लेन-देन के काम से कहीं जा रहा था। उसने एक बालक को बीच राजमार्ग पर बेहोश पड़ा देखा, तो सोचा- कौन है यह बालक ! शायद बहुत अधिक चला होगा, दौड़ा होगा इसी कारण मूर्च्छित हो

गया है। सेठ ने उसके मुँह पर, आँखों पर पानी के छींटे दिये, उठाकर वृक्ष की शीतल छाया में लिटाया, ठंडी हवा का झोंका लगा तो सोमू को होश आया। होश आते ही वह चीखने लगा- 'दीदी! दीदी!'

उस दयालु सेठ ने पूछा- "बेटा! क्या बात है ? कहाँ गई तुम्हारी दीदी ? कौन हो तुम ?"

सोमू रोता रहा "मेरी दीदी को कोई बदमाश घोड़े वाला पकड़कर ले गया, अब मैं क्या करूँगा ? मेरी दीदी, कहाँ गई....?"

रोते-सुबकते जब सोमू रुका तो सेठ ने उसे धीरज बंधाया, 'बेटे! रोओ मत, देखो तुम्हारी दीदी भी मिल जायेगी, पर पहले तुम अपना होश सम्भालो तथा मेरे पास कुछ भोजन है, ले लो, पानी पी लो, फिर ढूँढना अपनी दीदी को।"

सोमू का गला रुक गया था । बहुत तेज भूख भी लग रही थी। उसने कुछ भोजन किया, पानी पिया और फिर उस सेठ से पूछने लगा- "तुमने मेरी दीदी को देखा? मेरी दीदी कहाँ गई ? मुझे छोड़कर क्यों चली गयी ? मैं उस बदमाश को मारूँगा। अपनी दीदी को वापस लाऊँगा...... ।"

सेठ ने देखा; बालक दिखने में गौर वर्ण का है, सुन्दर भी है, बोली भी मीठी है। किसी अच्छे खानदान का है। जरूर यह बिन माँ-बाप का है। दीदी ने ही इसे पाला होगा। वही इसकी माँ, वही बहन रही होगी। तभी तो कब से दीदी, दीदी पुकार रहा है, रो रहा है...... । किन्तु कौन ले गया उसे भगाकर.....? हो सकता है इसकी दीदी भी सुन्दर हो, तो जवान लड़की को कोई कामी पुरुष, कोई राजकीय अधिकारी अपहरण कर ले गया हो, पका हुआ फल, सुन्दर फूल और नवयौवना तरुणी को देखकर किसका मन नहीं भरमाता। कोई उठाकर ले गया होगा। अब क्या पता चलेगा......?

सेठ ने बालक को धीरज बंधाकर पूछा-

"तेरा नाम क्या है?"

"सोमू ?" -उसने बताया।

तेरी दीदी का क्या नाम है- 'निर्मला दीदी'

तेरे पिता का?

सोमू चुप हो गया। उसे पिता के नाम से बहुत ही नफरत थी। पिता का नाम नहीं लिंया। सेठ ने दुबारा पूछा। सोमू नहीं बोला। उसने सोचा शायद पिता नहीं रहा होगा। इसलिए इसे पिता की याद आते ही दुःख होता है। उसने दुबारा नहीं पूछा।

किन्तु सोमू की दशा पर उसे बहुत दया आई। उसने कहा-"अब तू जंगल में अकेला कहाँ जायेगा, चल मेरे साथ चल! मेरे घर रहना कुछ काम करना, तेरा मन लगा रहेगा।"

परन्तु सोमू तो जाने को भी तैयार नहीं हुआ। वह दीदी! दीदी! पुकार कर रोता रहा। मेरी दीदी कहाँ मिलेगी....मैं दीदी के पास जाऊँगा। दीदी के साथ रहूँगा। किसी के घर नहीं जाऊँगा। वहाँ मार पड़ती है.....।

अब सेठ समझ गया, जरूर घर पर इसको कोई कष्ट दिया गया है। हो सकता है घर पर विमाता हो, उसने दोनों भाई-बहन को पीट कर निकाल दिया हो....।

सेठ ने उसे आश्वासन दिया, "बेटे! तुम्हें मेरे घर पर कोई नहीं मारेगा, तू अपना काम करना, खाना-पीना। तेरी दीदी की भी खोज-बीन करेंगे, दीदी जरूर मिल जायेगी। तू शहर में चल!"

सोमू को तसल्ली हुई, दीदी मिल जाने की बात सुनते ही वह उसके साथ चलने को तैयार हो गया। सेठ सोमू को अपने साथ ले गया, दिन भर साथ रखा, खिलाया-पिलाया, शाम को घर लौट आया। सेठानी ने पूछा-"यह कौन है?"

सेठ ने सारी कहानी सुनाकर कहा-"अनाथ बालक है, अपनी गाय-भैंस का सारा काम करेगा, जंगल में चराकर भी लायेगा।"

सेठ का भवन राजमहल के ठीक पीछे की तरफ था और उसी के पास में एक खाली जगह पर सेठ की गाय-भैंस बंधती। वहीं पर एक झौंपड़ी थी।

सेठ ने दूसरे दिन सोमू को झौंपड़ी दिखाते हुए कहा- "देख, इस झौंपड़ी में तू रहेगा, गाय-भैंस को चारा-पानी देना, चराना। पास ही कुँआ है, इससे पानी निकाल कर भरना-यह सब काम है तेरा, बराबर काम कर लेगा?"

सोमू बोला-"हाँ, सब काम करूँगा, किन्तु मेरी दीदी कब मिलेगी? मुझे दीदी से मिलवा दो।"

सेठ ने आश्वासन दिया-"धीरज रख, वह भी मिल ही जायेगी। जैसे तू दीदी, दीदी पुकार रहा है। वैसे वह भी सोमू, सोमू पुकार रही होगी। और एक दिन दोनों बहन-भाई जरूर मिलोगे। धीरज रखो।"

अब सोमू का एक ही काम था। प्रातः नाश्ता करके सेठ की गायों को जंगल में चराने ले जाता। दोपहर का खाना सेठानी साथ बाँध देती, वह खा लेता। शाम को लौटता। गायों को उनके स्थान पर बाँधता और सेठानी जो कुछ दे देती, उसे खा लेता। सोने से पहले इधर-उधर घूमकर देखता, दीदी कहीं घूमती-फिरती मिल जाये तो.....

यही उसकी दिनचर्या थी। इसी तरह दिन निकलते गये, वर्षों बीत गये।

सोमदत्त नित्य की भाँति ही आज भी गायों को चराने के लिए चला था। गायें आगे चल रही थीं और वह पीछे-पीछे। वन में पहुँच गया। गायें हरी-हरी घास चरने लगीं।

इतने में उसके कान में रोने की आवाज आई। यह तो छोटे बच्चे नवजात शिशु के रोने की आवाज है। ऐसा ही रुदन-स्वर मैंने अपनी विमाता के नवजात शिशु का सुना था। लेकिन यहाँ जंगल में नवजात शिशु कहाँ से आया ? उसने सोचा और अपने कानों का भ्रम मानकर चुप हो गया।

लेकिन शिशु का रुदन स्वर लगातार आ रहा था। उसका मन न माना; आवाज की दिशा में बढ़ चला, वृक्ष के समीप पहुँचा तो उसने देखा-कपड़े में लिपटा एक नवजात शिशु रो रहा है। उसने आगे बढ़कर उसे उठा लिया।

उसने देखा तो उसे देखकर सोमदत्त को अपनी बहन निर्मला की याद ताजा हो गई। वही चेहरा, वैसी ही आँखें, वैसी ही नाक, अरे यह शिशु तो मेरी बहन निर्मला का प्रतिरूप जैसा ही लगता है। बचपन में वह भी ऐसी ही रही होगी। तो क्या यह मेरी बहन निर्मला का ही पुत्र है ?

सोमू कुछ देर तक सोचता रहा, कभी उसकी आँखों में निर्मला घूमती, कभी बालक। दोनों की तुलना की तो लगता उसे बहन निर्मला का ही बेटा तो नहीं है।

अपने मन में उठी इस संभावना पर जितना-जितना उसने विचार किया, उसका विश्वास उतना ही गहरा हो गया। उसे विश्वास हो गया कि यह उसकी बहन का पुत्र है और वह इसका मामा है।

अब तो मोह उमड़ आना स्वाभाविक था। बच्चा अभी तक रोये ही जा रहा था। उसने सोचा-बच्चा भूखा है, इसलिए रो रहा है। दूध की तो कोई कमी थी ही नहीं, सामने गायें चर रही थीं। उसने थोड़ा सा दूध दुहा, लेकिन पिलाने की समस्या थी। उसने बच्चे को कभी दूध पिलाया नहीं था। अब कैसे पिलाये ? आखिर उसने एक उपाय सोच ही लिया। अंगुली से बच्चे के मुँह में दूध टपकाया। एक बूँद मुँह में गिरते ही बच्चा उस दूध को चाटने लगा, चुप हो गया। इसी तरह उसने बच्चे को दूध पिला दिया। पेट भरने पर बच्चा चुप हो गया। सोमू शाम को घर पहुँचा तो उसकी गोद में एक नवजात शिशु देखकर सेठजी बहुत चकित हुए, फिर पूछा-

"सोमू, यह बच्चा कहाँ से उठा लाया......?

(क्रमशः)

स्वास्थ्य-विज्ञान

पैरों का संतुलन : क्यों एवं कैसे?

डॉ. चंचलमल चोरडिया

हम प्रतिदिन हजारों कदम चलते हैं। यदि हमारे दोनों पैर बराबर न हुए, एक पैर बड़ा और दूसरा छोटा हुआ तो निश्चित रूप से एक पैर पर अधिक दबाव पड़ता है। फलतः हमारे शरीर का संतुलन बिगड़ने लगता है। इससे शरीर की चाल बदल जाती है और बाह्य शारीरिक विकास असंतुलित होने लगता है। उठने, बैठने, खड़े रहने, सोने अथवा चलने-फिरने की प्रक्रियाओं पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। ऐसे व्यक्ति को यदि नियमित घूमने का परामर्श दिया जाये तो घूमना उस रोगी के लिए लाभ के स्थान पर हानिकारक भी हो सकता है। शरीर के किसी भाग पर अनावश्यक दबाब लगातार पड़ते रहने से वह भाग रोग ग्रस्त हो सकता है। पैरों, कमर एवं गर्दन के अधिकांश रोगों का प्रारम्भ इसी कारण होता है। फिर चाहे उसे साइटिका, स्लिप डिस्क, घुटने का दर्द, स्पोन्डोलायटिस आदि किसी भी नाम से क्यों न पुकारा जाता हो? जैसे ही दोनों पैरों को बराबर कर दिया जाता है, अनेक पुराने असाध्य रोगों का उपचार सहज एवं प्रभावशाली होने लगता है।

पैर बड़े-छोटे क्यों होते हैं?

बाह्य दृष्टि से हमारा शरीर लगभग एक जैसा लगता है, परन्तु उठने-बैठने-खड़े रहने, सोने अथवा चलते-फिरते समय प्रायः हम अपने बायें और दाहिने भाग पर बराबर वजन नहीं देते। जैसे खड़े रहते समय किसी एक तरफ थोड़ा झुक जाते हैं। बैठते समय सीधे नहीं बैठते। सोते समय हमारे पैर सीधे और बराबर नहीं रहते। स्वतः किसी एक पैर को दूसरे पैर का सहयोग लेना पड़ता है। फलतः पैर के ऊपर दूसरा पैर चला जाता है। ऐसा क्यों होता है? अधिकांश व्यक्ति किसी भी एक आसन में लम्बे समय तक स्थिरतापूर्वक क्यों नहीं बैठ सकते? इसका मतलब उनका शरीर असंतुलित होता है। उनके पूर्ण नियंत्रण में नहीं होता है। हम सीधे क्यों नहीं सो सकते? बार-बार करवटें क्यों बदलनी पड़ती हैं? निद्रा में पैर के ऊपर पैर क्यों चला जाता है?

पैर को संतुलित करने की विधियाँ

विधि नं. 1 :- पैरों को संतुलित रखने का एक उपाय है कि हम बारी-बारी से बिना किसी सहारे एवं परेशानी के थोड़ी देर तक एक-एक पैर पर खड़ा रहने का अभ्यास करें। जब हम बारी-बारी से 15 से 20 मिनट तक एक के बाद एक पैर पर बिना किसी दर्द एवं पीड़ा के खड़े रहने का अभ्यास कर लेंगे तो हमारा शरीर संतुलित हो जायेगा, परन्तु इस बात की अवश्य सावधानी रखें कि शरीर के साथ किसी प्रकार की जबरदस्ती न हो। आसन सहज होने चाहिये, जिससे शारीरिक और मानसिक तालमेल न बिगड़े। परन्तु ऐसा अभ्यास स्वस्थ व्यक्ति ही कर सकते हैं।

विधि नं. 2 :- गोदुहासन में बैठने के अभ्यास से दोनों पैर बराबर हो जाते हैं। दोनों घुटनों को मिला पंजों पर बैठने से जो आसन होता है उसे गोदुहासन कहते हैं। पैरों के अंगूठे और अंगुलियों में शरीर के स्वनियन्त्रित नाड़ी संस्थान के प्रतिवेदन बिन्दु होते हैं। पैर के अंगूठे का संबंध गले से ऊपर की स्वनियन्त्रित नाड़ियों से होता है। अंगूठे के पास वाली पैर की सबसे बड़ी अंगुलि का संबंध डायाफ्राम से गले के मध्य भाग वाली नाड़ियों से, मध्यमा अंगुलि का संबंध नाभि से डायाफ्राम वाले भाग की नाड़ियों से, सबसे छोटी एवं मध्य वाली अंगुलि के पास वाली अंगुलि का संबंध नाभि से मलद्वार वाले भाग की नाड़ियों से तथा कनिष्ठिका अंगुलि का संबंध पैर के स्वनियन्त्रित नाड़ी संस्थान से होता है। पंजों पर बैठने से पगथली से लगाकर मस्तिष्क तक की नाड़ियां सक्रिय होने लगती हैं, उनमें आया अवरोध दूर होने लगता है और यदि कोई नाड़ी दब गई हो तो पुनः अपने स्थान पर आने लगती है। इस आसन में व्यक्ति प्रायः सीधी कमर ही बैठ सकता है। भगवान् महावीर को इसी आसन में ध्यान करते हुए केवल ज्ञान हुआ।

सुजोक एक्युप्रेशर के अनुसार गोदुहासन से गले से ऊपर के सारे भाग एवं दोनों हाथों तथा दोनों पैरों के प्रतिवेदन बिन्दुओं पर दबाब पड़ता है, जिससे उनमें प्राण ऊर्जा का प्रवाह संतुलित होता है।

फुट रिफ्लेक्सोलोजी के अनुसार गोदुहासन में बैठने से शरीर में डायाफ्राम के ऊपर के सारे भाग के प्रतिवेदन बिन्दुओं पर दबाब पड़ता है, जिससे संबंधित अंग एवं अन्तःस्रावी ग्रन्थियाँ सक्रिय हो जाती हैं। श्वसन, रक्त परिवहन ठीक होता है

और नकारात्मक सोच सकारात्मक होने लगती है।

पगथली से घुटनों तक लीवर, स्पिलन (तिल्ली), गुर्दे, मेरेडियन तथा उसके यांग अंग पित्ताशय, आमाशय और मूत्राशय मेरेडियन के पंच ऊर्जाओं (वायु, ताप, नमी, शुष्कता एवं ठण्डक) से संबंधित प्रमुख प्रतिवेदन बिन्दु होते हैं। गोदुहासन में बैठने से इन अंगों की मेरेडियनों में प्राण ऊर्जा का प्रवाह बराबर होने लगता है और नाड़ी संस्थान संबंधी रोगों में राहत मिलती है।

इस आसन के समय को अपनी सहन शक्ति के अनुसार धीरे-धीरे बढ़ाने से न केवल दोनों पैर ही बराबर होते हैं, अपितु शरीर का दायां-बायां भाग जो लगभग एक जैसा होता है, संतुलित होने लगता है, एकाग्रता बढ़ती है, स्वर संतुलित होता है। गोदुहासन को नमस्कार मुद्रा में करने से अपेक्षित परिणाम तुरन्त प्राप्त होने लगते हैं।

विधि नं. 3:-रोगी को सीधा लेटने को कहें। दोनों पैरों के टखनों को मिलाकर देखें कि दोनों के केन्द्र बराबर हैं या नहीं। टखनों के साथ-साथ पैर के दोनों अंगूठों को आपस में स्पर्श करें। यदि दोनों पैरों के अंगूठों की ऊँचाई जमीन से बराबर हो तो दोनों पैरों की लम्बाई बराबर होती है अन्यथा जो अंगूठे का ऊपरी भाग नीचा होता है, वह पैर दूसरे पैर से छोटा होता है। छोटे पैर के अंगूठे को धीरे-धीरे तब तक खींचें जब तक दोनों पैर बराबर न हो जायें। चन्द दिनों तक यह प्रक्रिया नियमित करने से दोनों पैर बराबर रहने लगते हैं।

विधि नं. 4 :- बहुत बार किसी भी कारण से संबंधित पैर के अंगूठे को खींचना संभव नहीं होता। ऐसी परिस्थितियों में निम्न विधि द्वारा दोनों पैरों को बराबर किया जा सकता है।

रोगी को सीधा लिटाएँ, पूर्व विधि के अनुसार पता लगायें कि कौनसा पैर छोटा या बड़ा है। जिस पैर को बराबर करना हो, उस घुटने को पेट के जितना नजदीक बिना किसी दर्द के ले जा सकते हैं, ले जाने का प्रयास करें। अब यदि वह पैर छोटा हो और उसे बड़ा करना हो तो उस पैर की पिण्डली को एक हाथ से पकड़ दूसरे हाथ से उस घुटने को सहजता पूर्वक दूसरे घुटने की तरफ मोड़े। ऐसा करने से

छोटा पैर बड़ा हो जाता है। परन्तु दर्द, फ्रेक्चर, पूर्व में की गई शल्य चिकित्सा आदि किसी कारण वश छोटे पैर को मोड़ना संभव न हो तो बड़े पैर को छोटा करने के लिए उस बड़े पैर के घुटने को पेट के जितना नजदीक बिना दर्द ले जा सकते हैं, ले जावें। उसके पश्चात् उस बड़े पैर की पिण्डली को एक हाथ से पकड़, उस पैर के घुटने को बाहर की तरफ जितना मोड़ सकते हैं, मोड़ें। ऐसा करने से बड़ा पैर छोटा हो जाता है।

पैरों को बराबर करना क्यों आवश्यक?

जब तक दोनों पैरों को बराबर नहीं किया जाता कोई भी चिकित्सा पद्धति पूर्ण प्रभावशाली ढंग से कार्य नहीं कर सकती। जिस प्रकार फूटे हुए घड़े को भरने से पूर्व उसका छिद्र बन्द करना आवश्यक होता है। बिना छिद्र बंद किये, कितना ही पानी क्यों न डालें, घड़ा स्थायी रूप से भरा हुआ नहीं रह सकता। मोटर कार को चलाने से पूर्व उसके चक्कों में हवा का उचित दबाव आवश्यक होता है। **गाड़ी बहुत ही अच्छी हो, चालक भी बहुत अनुभवी हो, परन्तु जैसे टायर में वायु का दबाव बराबर न हो, ऐसी गाड़ी में निर्विघ्न यात्रा कर गन्तव्य स्थान पर पहुँचना संदिग्ध होता है। ठीक उसी प्रकार यदि दोनों पैर बराबर न हों तो प्रातःकालीन भ्रमण जैसी अच्छी प्रवृत्ति भी लाभ के स्थान पर कभी-कभी हानिकारक हो सकती है। जिस प्रकार खेती में बीज बोने से पूर्व खेत की सफाई एवं उस पर हल जोतना तथा खाद देना आवश्यक होता है ठीक उसी प्रकार उपचार से पूर्व दोनों पैरों को बराबर करने से उपचार प्रभावशाली और स्थायी हो जाता है। कभी-कभी तो असंतुलन दूर होते ही रोगी को तत्काल जो राहत मिलती है वह अच्छी से अच्छी दवा से भी ज्यादा प्रभावशाली होती है। स्वस्थ अवस्था में भी नियमित निरीक्षण कर दोनों पैरों को बराबर रखने से रोग होने की संभावना कम हो जाती है।**

-चोरडिया भवन, जालोरी गेट के बाहर, जोधपुर-३४२००३

जिनवाणी के लेखक एवं पाठक अपनी रचनाएँ एवं प्रतिक्रियाएँ जिनवाणी के ई-मेल पर भी भेज सकते हैं। ई-मेल पता है- jinvani@yahoo.co.in

जीवन-व्यवहार

कर्त्तव्य पालन : एक साधना

डॉ. भीकमचन्द प्रजापति

मानव एक सामाजिक प्राणी है। परिवार समाज की लघु इकाई है। परिवार के साथ व्यवहार करते समय प्रायः हमारी दृष्टि इस बात पर रहती है कि परिवार के सदस्य कैसे हैं, अच्छे हैं या बुरे हैं, उनमें कौन-कौन से गुण व अवगुण हैं, वे हमारे साथ कैसा व्यवहार करते हैं, हमारे प्रति कैसी भावना रखते हैं, हमारी सहायता करते हैं या नहीं, हमारी सेवा करते हैं या नहीं, आज्ञा मानते हैं या नहीं। भूतकाल में उन्होंने हमारे साथ कैसा व्यवहार किया और भविष्य में कैसा व्यवहार करने की संभावना है, आदि। इस प्रकार की अनेक बातों पर हमारा ध्यान जाता है। यह बहुत बड़ी भूल है। यह भूल आपको 'भोगी' बना देगी, फिर आप दुःख, चिंता व भय में आबद्ध रहेंगे, आप प्रसन्नता व अलौकिक आनन्द से वंचित हो जायेंगे।

कैसे बनता है मानव भोगी- भोग का आशय है- जीवन में सुख व दुःख महसूस होना। यदि आप संसार की वस्तु एवं व्यक्ति के मिलने पर सुख का अनुभव करते हैं और संसार की वस्तु व व्यक्ति के वियोग में दुःख का अनुभव करते हैं तो आप 'भोगी' हैं। आप सुख व दुःख का भोग करते हैं। जब आपके माता, पिता, पति, पत्नी, संतान,भाई, बहन, सास, बहू आदि परिवार के सदस्य आपकी सेवा करते हैं, आपके साथ बहुत अच्छा व्यवहार करते हैं, तब आप बहुत खुश रहते हैं और जब परिवाजन आपकी सेवा नहीं करते, आपके साथ अपमानजनक एवं बुरा व्यवहार करते हैं, तब आप नाराज़ हो जाते हैं, दुःखी व चिंतित हो जाते हैं तो यह माना जायेगा कि आप 'भोगी' हैं। आप उनके अच्छे व बुरे व्यवहार के भोगी हैं, आप सुख व दुःख के भोगी हैं। जब तक आपका स्वार्थ पूरा होता है तब तक आप खुश रहते हैं, जहाँ आपके स्वार्थ में बाधा पैदा होती है, आप नाराज़ हो जाते हैं तब तक आप 'भोगी' ही रहेंगे। आप सुख भोगेंगे अपनी इच्छा से और आपको दुःख भोगना पड़ेगा विवशता से। सुख का भोगी दुःख से बच नहीं सकता। यदि आप दुःख से बचना चाहते हैं तो सुख का भोग मत कीजिये, प्रत्युत सुख में सेवा कीजिये।

भोगी व्यक्ति सेवा नहीं कर सकता– यदि आप यह देखेंगे कि मेरे परिवार के सदस्य कैसे हैं तो आप उनकी सेवा नहीं कर पायेंगे। फिर तो आपके जीवन का चित्र ऐसा रहेगा कि जब तक वे अच्छे रहेंगे, आपके अनुकूल चलते रहेंगे, तब तक आप खुश रहते हुए उनके साथ अच्छा व्यवहार करेंगे और जब वे आपके साथ अच्छा व्यवहार नहीं करेंगे तब आप उनसे नाराज हो जायेंगे, आप दुःखी व परेशान हो जायेंगे। फिर आप उनकी 'सेवा' नहीं कर पायेंगे। जब तक आप उनकी सेवा नहीं करेंगे, तब तक आपका 'मोहजनित सम्बन्ध' नहीं टूटेगा; आपके हृदय में प्रेम की जागृति नहीं होगी, आप राग-द्वेष में फंसे रहेंगे।

कर्त्तव्य पालन कीजिये– यदि आप यह सोचेंगे और देखेंगे कि मेरे परिवार के सदस्य कैसे हैं तो आप उनके प्रति कर्त्तव्य का पालन नहीं कर पायेंगे। फिर तो आपके जीवन का चित्र ऐसा रहेगा कि जब तक वे अच्छे हैं तब तक आप खुश रहते हुए उनकी सेवा कर देंगे और जब वे आपके लिये अच्छे व उपयोगी नहीं रहेंगे तो आप उनसे नाराज हो जायेंगे, आपको उन पर क्रोध आयेगा, आपके हृदय में द्वेष पैदा हो जायेगा। आप कर्त्तव्य का पालन नहीं करेंगे तो आपके जीवन का दुःख नहीं मिटेगा; आप चिंतित, परेशान एवं हैरान रहेंगे। आप शांति, मुक्ति व भक्ति से वंचित रहेंगे; आपका मानव जीवन व्यर्थ चला जायेगा। इतना ही नहीं आपके परिवार के सदस्य भी दुःखी व परेशान रहेंगे। आपका परिवार नरक बन जायेगा। इसलिये आप अपने कर्त्तव्य का पालन कीजिये।

कर्त्तव्यपालन का आशय निम्नाङ्कित बातों से है–

(१) आप अपने परिवारजनों के साथ वैसा ही व्यवहार कीजिये, जैसा व्यवहार आप तब करते, जब वे बहुत अच्छे एवं विभिन्न गुणों से सम्पन्न होते, आपकी भरपूर सेवा करते, आपको विशुद्ध प्रेम देते। दूसरे शब्दों में वे चाहे जैसे हों। आप उनके प्रति हित का भाव रखिये, उनकी प्रसन्नता के लिये जो कुछ आप कर सकते हैं, वह कीजिये। उनको सुख-सुविधा, सम्मान, आराम व प्रेम दीजिये।

(२) उनकी सेवा करने के बदले वापस सेवा करवाने की इच्छा मत रखिये। कभी मत सोचिये कि मैं इनकी सेवा करता हूँ, इसलिए इनको भी वापस मेरी सेवा करनी चाहिये। वापस सेवा करें- इस आशा एवं कामना को मत रखिये। वे

वापस सेवा करें या न करें, आप सेवा के रास्ते पर चलते रहिये।

कर्त्तव्यपालन का चामत्कारिक परिणाम- यदि आप अपने परिवारजनों के प्रति कर्त्तव्य का पालन करेंगे तो उनमें भी अपने कर्त्तव्य के पालन करने की भावना जाग्रत होगी, वे भी कर्त्तव्यनिष्ठ बन जायेंगे। कर्त्तव्यपालन से कर्त्तव्यपरायणता का संचार होता है। याद रखें, आपके पति, पत्नी, संतान आदि परिवार के सदस्य आपके उपदेश से कर्त्तव्यनिष्ठ नहीं बनेंगे, किसी भय व प्रलोभन से भी उनमें कर्त्तव्यपरायणता नहीं आयेगी। यदि आप उन्हें कर्त्तव्यनिष्ठ बनाना चाहते हैं तो इसका सर्वोत्तम उपाय यही है कि आप कर्त्तव्यनिष्ठ बन जाइये। आपकी कर्त्तव्यपरायणता से वे निश्चित रूप से कर्त्तव्यनिष्ठ बन जायेंगे। इसलिए आपको यह व्रत लेना होगा कि मैं अपने परिवारजनों के प्रति अपने कर्त्तव्य का पालन करूँगा। अपने कर्त्तव्य के पालन में यदि आपको अपने सुख का त्याग करना पड़े तो कर दीजिये। कर्त्तव्यपालन में यदि आपको बहुत बड़ा कष्ट झेलना पड़े तो उसे अत्यन्त प्रसन्नतापूर्वक इस आधार पर झेल लीजिये कि कर्त्तव्यपालन मेरे जीवन की साधना है; यह शांति, मुक्ति, भक्ति व परमात्म पद, को पाने का पवित्र मार्ग है। स्मरण रहे, कर्त्तव्यपालन में आने वाली कठिनाई को यदि आप प्रसन्नता पूर्वक सहन कर लेंगे, उसे झेल लेंगे तो वह आपकी बहुत बड़ी तपस्या बन जायेगी; उस तपस्या से आप प्रभु के परम भक्त बन जायेंगे और आपकी कर्त्तव्यपरायणता के असंख्य अणु-परमाणु इस विशाल वायुमंडल में प्रसारित होकर युगों-युगों तक मानव समाज को कर्त्तव्यपरायणता का मूक सन्देश देते रहेंगे।

एक सत्य घटना- राजस्थान में नागौर जिले के एक कस्बे में रहने वाले साधक परिवार ने अपनी सुपुत्री का विवाह किया। पुत्री की प्रार्थना पर उसके पिता ने ससुराल के लिये विदा होते समय उसे यह सीख दी, "बिटिया! कभी मत देखना कि तुम्हारे सास, ससुर, पति आदि परिवारजन कैसे हैं, अच्छे हैं या खराब हैं, तुम तो उनके प्रति अपने कर्त्तव्य का पालन कर देना"। बिटिया ससुराल आ गई। विधि का विधान ससुराल में सभी व्यक्ति शराबी, मांसाहारी व जुआरी थे। उसके पति में भी अनेक प्रकार के व्यसन व बुराइयाँ थीं। सास अत्यन्त कठोर स्वभाव की व ननदें बहुत चालाक। चार दिन बाद उसके पिताजी उसे लेने के लिये गये तो सास ने उसकी

अनेक शिकायतें कीं और उसे पिता के साथ घर भेजने से इन्कार कर दिया। पिताजी लौटकर आ गये। तीन दिन बाद उन्हें अपनी पुत्री का पत्र मिला जिसमें लिखा था- "पूज्य पिताजी, प्रभु की कृपा व अपने भाग्य से मैं एक ऐसे घर में आ गई हूँ जहाँ का वातावरण अत्यन्त दूषित है, लेकिन आपके दिये हुए 'महामंत्र' को अपनाकर मैं यहाँ प्रसन्नतापूर्वक अपने कर्त्तव्य का पालन करते हुए जीवन के लक्ष्य को प्राप्त करूँगी। आप मेरी चिंता न करें"। पत्र पढ़कर पिता का हृदय भर आया, मन ही मन पुत्री को आशीर्वाद दिया। इधर पुत्री 'कर्त्तव्यपालन' की साधना में जुट गई। प्रातः जल्दी उठना, सभी बड़ों को प्रणाम करना, घर की सफाई करके भोजन बनाना, परिवारजनों की यथाशक्ति सेवा करना आदि उसके दैनिक जीवन की साधना थी। जिस बालिका ने अपने जीवन में कभी शराब व माँस के दर्शन नहीं किये, आज वह अपने हाथों से माँस पकाती है, शराब पिलाती है। अत्यन्त करुणा से प्रभु से मूक प्रार्थना करती है- परिवारजनों के सुधार के लिये। प्रतिदिन परिवारजनों की डांट-फटकार सहन कर रही है। समय बीतता गया। उसकी सेवा रूपी साधना से परिवारजनों का पत्थर हृदय धीरे-धीरे पिघलने लगा।

एक वर्ष बीत गया। उसकी शादी का दिन आ गया। उसके पति ने कहा, "आज हमारी शादी का दिन है। मेरे व परिवारजनों के अवगुणों से तुम्हें बहुत तकलीफ हुई है। लेकिन तुमने उसके बारे में आज तक कोई चर्चा नहीं की। आज मैं केवल एक अवगुण को छोडूँगा। तुम अपने मुँह से बताओ- किस अवगुण का त्याग करूँ। जैसा तुम कहोगी, मैं वैसा ही करूँगा" उसने अवगुण बताने से इन्कार कर दिया। जब उसके पति ने बार-बार आग्रह किया तो उसने सुमधुर शब्दों में बड़ी विनम्रता से कहा, "आप बीड़ी पीना छोड़ दीजिये।" पति ने सुना, आश्चर्य चकित हो गया, सोचने लगा- मुझमें बहुत बड़े-बड़े अवगुण हैं, इसने मुझे शराब, माँस, जुआ आदि बड़ा अवगुण छोड़ने के लिये क्यों नहीं कहा। तत्काल पत्नी से पूछा, "तुमने इस सामान्य अवगुण को छोड़ने की बात कैसे कही; यह क्यों नहीं कहा कि शराब या माँस या जुआ छोड़ दो"। हृदय में विशुद्ध प्रेम, नेत्रों में प्रेमाश्रु और वाणी से बहुत मीठी भाषा में पत्नी ने उत्तर दिया, "आप मेरे पति हैं, आपकी प्रसन्नता मेरी पूजा है। किसी भी व्यसन को छोड़ने में बहुत तकलीफ होती है। बीड़ी छोड़ने में आपको जितनी तकलीफ होगी, शराब छोड़ने में उससे ज्यादा तकलीफ होगी; माँस

छोड़ने में उससे भी कहीं अधिक तकलीफ होगी। मैं आपकी तकलीफ को नहीं देख सकती, मैं आपकी परेशानी को सहन नहीं कर सकती। आपको कम से कम तकलीफ हो, इसलिए मैंने आपसे बीड़ी छोड़ने का निवेदन किया है''। ''तुम महान् हो, तुम महान् हो, तुम साक्षात् देवी हो, तुम भगवान् हो, मैंने व परिवारजनों ने तुम्हें बहुत दुःख दिया है, फिर भी तुमने मेरी भरपूर सेवा की, तुमने अपने कर्त्तव्य का पालन किया, तुम धन्य हो''- कहते-कहते, पति उसके चरणों में गिर गया, प्रेम की अश्रुधारा प्रवाहित होने लगी, क्षमा याचना करने लगा। उसने कहा-'' मैंने कुछ नहीं किया, आप मुझे लज्जित मत कीजिये। मैंने तो पिताजी की शिक्षा के अनुसार अपने कर्त्तव्य का पालन किया है, यह मेरी साधना थी, सहनशीलता मेरी तपस्या थी''। पश्चात्ताप की अग्नि में जलते हुए पति ने अपनी पत्नी से जल मांगा। अपनी हथेली पर लिया और बोला, ''आज से मैं अपने दुर्व्यसनों का परित्याग करता हूँ।'' एक पल में वह पवित्र बन गया, पत्नी को हृदय से लगाया, आज जीवन में पहली बार उसे कर्त्तव्यपरायणता, सेवा व प्रेम के प्रभाव की हल्की सी अनुभूति हुई। प्रातःकाल होते ही प्रसंग परिवारजनों को सुनाया। पश्चात्ताप व प्रेम के वातावरण में परिवारजनों ने भी अपने सभी दुर्व्यसनों के त्याग का व्रत लिया। परिवार स्वर्ग बन गया। पिताजी आये, बिटिया उनके चरणों में गिर गई, कहने लगी- ''कर्त्तव्यपरायणता बहुत बड़ी साधना है, इससे मेरा सम्पूर्ण परिवार कर्त्तव्यनिष्ठ बन गया, मैं एकदम शांत व प्रसन्न हूँ।''

प्रेषक- श्री प्रदीप कुमार ललवानी,
खरादीवाड़ा, लोहियों का चौक, नागौर-३४१००१ (राज.)

प्रतिक्रमण

उदय से क्षयोपशम में आना प्रतिक्रमण है।

गलती से सुधार में आना प्रतिक्रमण है।

दोष से निर्दोषता में आना प्रतिक्रमण है।

परिधि से क्रेन्द पर आना प्रतिक्रमण है।

बाहर भटकी आत्मा से भीतर में आना प्रतिक्रमण है।

माता-पिता का हम मानें उपकार

सुश्री दिव्या डागा

हमारे जीवन में जितने भी सम्बन्ध हैं, उनमें माता-पिता का सम्बन्ध सबसे प्रथम एवं निकटतम सम्बन्ध है। अन्य सभी रिश्ते बाद में बनते हैं। जब हम गर्भ में आते हैं तब से ही माता हमारी देखभाल एवं पिता पालन-पोषण में जुट जाते है। हम चाहे जितने भी बड़े क्यों न हो जाएं, हम सदैव उनके सामने छोटे ही रहते हैं। माता-पिता हमें समय-समय पर मार्गदर्शन देते रहते हैं। अन्त समय तक भी माता-पिता का हृदय अपने बच्चों के प्रति स्नेह, वात्सल्य एवं ममत्व से बँधा रहता है। शायद माता-पिता के द्वारा किए गए इन उपकारों को हम शब्दों में भी अभिव्यक्त नहीं कर सकते हैं, यह तो सिर्फ हमारे द्वारा महसूस किया जा सकता है।

जीवन की साधना में माता-पिता के उत्तम संस्कारों, उपकारों का बहुत बड़ा योगदान रहता है। उनके द्वारा बचपन में डाले गए संस्कार अमिट होते हैं। माता-पिता के मन में बच्चों के प्रति अगाध स्नेह होता है। जिस प्रकार माता की ममता अपार होती है, वैसे ही उनका उपकार भी बच्चों के प्रति अपरिमेय एवं असीम होता है।

बच्चों की अच्छी, संस्कारित-परवरिश के लिए माता-पिता अपनी सुख-सुविधाओं तक की चिन्ता छोड़ देते हैं। माता-पिता ही बच्चों के भविष्य के निर्माता हैं। उनका वात्सल्यपूर्ण अनुशासन ही बच्चों के भाग्य का निर्माण करता है।

हमारे जीवन में जो संस्कार हैं, जो शिक्षा एवं बौद्धिक विकास के पुष्प खिले हैं, उनका मूल क्या है? उस मूल को विकसित करने वाली शक्ति कौनसी है? वह शक्ति कोई और नहीं मातृपितृ शक्ति ही है। मानवरूपी इस सुन्दर, सुशिक्षित, संस्कारी फूल का निर्माण करने वाले माता-पिता ही हैं। माता-पिता हमारे सबसे पहले एवं सबसे बड़े शिक्षक हैं।

माता-पिता ही हमें जन्म एवं फिर जीवन प्रदान करते हैं। जन्म तो कोरे कैनवास की भाँति मिलता है, जिसमें जीवन को उपलब्ध कराना होता है। माता-पिता इसी कैनवास रूपी जन्म में संस्कार रूपी रंगों से युक्त जीवन प्रदान करते हैं।

हमारे ऊपर सिर्फ माता के ही उपकार हैं, ऐसा नहीं है। जिस प्रकार माता के गुण श्रेष्ठ हैं उसी प्रकार हमारे पिता भी कुछ कम नहीं हैं। यद्यपि माँ के स्थान पर माँ ही है,

उसकी बराबरी दुनिया में कोई नहीं कर सकता है, पर उपकार की दृष्टि से एवं बच्चों के जीवन-विकास की दृष्टि से पिता का भी महत्त्वपूर्ण योगदान है। माता बच्चों में संस्कारों के बीज डालती है, अंकुरित करती है एवं पिता उनका संरक्षण एवं परिवर्धन करते हैं। इसलिए माता को पृथ्वी एवं पिता को परमेश्वर का रूप कहा गया है।

आज हमारे ऊपर उनके इतने उपकार हैं कि यदि हम अपने शरीर की सारी चमड़ी उतारकर, उसकी शॉल बनाकर उन्हें उपहार स्वरूप दें तो भी हम उनके ऋणों से उऋण नहीं हो सकते हैं। हमारे इस मानव जीवन पर उनके असीम उपकार हैं जिनसे उऋण होना सहज नहीं है। लेकिन हम ऋण-मुक्त होने का प्रयास अवश्य कर सकते हैं। जो इस प्रकार है-

१. हम माता-पिता की सेवा कर उन्हें सदैव प्रसन्न रख सकते हैं।
२. हम ऐसा सत्कार्य करें जिससे माता-पिता के यश-गौरव में सदैव वृद्धि हो।
३. उन कार्यों में सदैव सहयोग देकर उन्हें आध्यात्मिक,धार्मिक जीवन जीने में सहयोगी बनें।
४. उनके द्वारा प्रदत्त आज्ञाओं का पूर्ण रूप से पालन करें।
५. कभी भी ऐसा व्यवहार न करें जिससे उनका दिल दुःखे।
६. उन्हें किसी भी प्रकार का कष्ट न पहुँचाएँ।
७. उनकी सेवा शुश्रूषा यथासमय उचित रीति से करें।

ऐसे सफल प्रयास करके उनके ऋण को कुछ कम जरूर कर सकते हैं। माता-पिता के उपकारों को चुकाने की भावना हम बच्चों में तभी आ सकती है जब हमारे मन में उनके प्रति अपार श्रद्धा एवं आदर का भाव होगा।

माता-पिता के उपकारों को वैसे तो शब्दों में व्यक्त करना भी असंभव है, परन्तु फिर भी उनके उपकारों को निम्नांकित पंक्तियों के माध्यम से व्यक्त करने का प्रयास कर रही हूँ-

हमारे माता-पिता देव तुल्य हैं। हमारे पास चाहे कितनी ही धन सम्पत्ति है, ऐशो आराम के साधन हैं, पर माता-पिता की सेवा नहीं तो सब व्यर्थ है। माता-पिता की बच्चे सेवा करते हैं, तो माता-पिता प्रसन्न होकर अपने बच्चों के मस्तक पर आशीर्वाद का हाथ रखते हैं। माता-पिता के प्रति अपार श्रद्धा एवं आदर भाव रखते हुए तन-मन-धन से उनकी सेवा करके उनकी आध्यात्मिक उन्नति में सहयोग देकर हमें उपकारों से ऋण-मुक्त होने का प्रयास करना चाहिए।

-पुत्री श्री सुनीलचन्द डागा, ७/१४, मालवीय नगर, जयपुर(राज.)

संस्मरण

कृतज्ञ हूँ उनके प्रति

श्री प्रेमचन्द जैन

यह किस्सा अप्रेल १९८५ का है, जब मैं राजस्थान सरकार के जन-स्वास्थ्य अभियान्त्रिक विभाग (पी.एच्.ई.डी.) में अधिशाषी अभियन्ता (एक्स.ईएन) के पद पर बालोतरा शहर में पदस्थापित था। पूज्य आचार्य भगवन्त १००८ श्री हस्तीमल जी महाराज साहब का, अपनी शिष्य मण्डली के साथ अक्षय तृतीया पर बालोतरा पधारना हुआ। वे ऊँची टेकरी पर एक मकान में ठहरे थे। स्थानीय स्थानक में ठाणापति ज्ञानगच्छीय सन्त निवास कर रहे थे। ऊँची टेकरी पर दर्शन-वन्दन हेतु मैं भी सपरिवार जाता था। ज्ञान-चर्चा के दौरान किसी प्रसंग पर मैंने आचार्य भगवन्त से निवेदन किया- "मेरा परिवार अनेक पीढ़ियों से मन्दिरमार्गी परम्परा को मानने वाला है। जैन धर्म के अन्य सभी परम्पराओं के प्रति आदर व सम्मान है फिर भी परिवार सहित मन्दिर में जाना बन्द नहीं हो सकता।"

आचार्य भगवन्त ने फरमाया- "मन्दिर में जाने की मनाही नहीं है। कई बार हम भी मन्दिर में ठहरते हैं। पर मन्दिर में जाकर आप क्या करते हैं?" मैंने उत्तर दिया- "भगवान् की मूर्ति का वन्दन, दर्शन, पूजन करते हैं और वर्तमान जीवन में जो कुछ कार्य चल रहा है उसकी सफलता तथा इच्छित वस्तु की प्राप्ति की माँग करते हैं।"

आचार्य भगवन्त ने फरमाया- "भगवान् से माँग ही करनी है तो यह करो कि हे प्रभो! जो गुण आपमें हैं वे गुण मुझमें भी आ जावें तथा दूसरी बात यह है कि मंदिर में जाकर मन्दिरमार्गी साधुगण जो कार्य नहीं करते हैं, वह कार्य आप भी नहीं करें।"

कितना विराट् था उनका व्यक्तित्व, कितना विशाल था उनका चिन्तन, कितनी उदारता थी उनके दिल में। न किसी का खंडन, न किसी की निन्दा तथा सिर्फ मार्ग-प्रदर्शन। कामना-मुक्त हो, भगवान् बनने की भावना, सच्ची प्रार्थना, सच्चा संवेग और पानी, फूल, धूप, दीप, नैवेद्य, फल आदि की हिंसा से बचाकर अनुकम्पा गुण विकसाने की कला। आज समझ में आता है, अनुभूत होती है कि उस महापुरुष की सम्यक् सोच, सम्यक् निक्षेप-भाव जगाने में सहायक हो सकती है, उपकारी हो सकती है। जिसके अनुसार वन्दनीय, नमस्करणीय, अर्चनीय तो चैतन्य की शुद्ध अवस्था अथवा शुद्ध अवस्था को प्रकट करने में रात-दिन लगे चैतन्य वाले (देव-गुरु) या चिन्मयता की ओर ले जाने वाला धर्म ही हो सकता है। उसी देव, गुरु, धर्म की भाव-भक्ति के सही रास्ते पर लाने वाले उस महापुरुष के गुण-कीर्तन करते हुए बारम्बार कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ। *-मंत्री, सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जयपुर*

जागो जैनियों आँखें खोलो

मोहन कोठारी 'विनर'

धनवान अगर नहीं बन पाओ तो, मन में कोई गम न करना,
संस्कारों की धन दौलत से, अपनी झोली तुम भर लेना।
सुसंस्कारों की पूँजी से, परिवार सुखी हो जाता है,
धन वैभव के अम्बारों से, विषय विकार मन भाता है ।।१ ।।
भौतिकता की चकाचौंध में, रात दिवस जो बहते हैं,
जीवन में झंझावातों के, खूब थपेड़े वे सहते हैं।
बंगला, गाड़ी, ऐश मौज ही, जीवन के मकसद बन जाते,
क्लब, होटलों और ढाबों में, निश दिन दौड़े, दौड़े जाते ।।२ ।।
परिणाम बुरे होते हैं इसके, परिवार दुःखी हो जाता है,
धन दौलत से भरा खज़ाना, काम नहीं कुछ आता है।
मत करो बदनाम धर्म को, फैशन और व्यसन को छोड़ो,
जैनी हो, जैनत्व जगाओ, अपने मन को अब तुम मोड़ो ।।३ ।।
बदनामी होती है घर की, जब बुरी संगत में पड़ते हैं,
भाग गई बेटी लो घर से, दुनियां वाले हँसते हैं।
युवा पीढ़ी आज भटक रही, कौन इसे समझाएगा,
जिसके घर में धर्म ध्यान है, वही परिवार बच पायेगा ।।४ ।।
जागो जैनियों आँखें खोलो, अरे किधर तुम जा रहे हो,
इतना ऊँचा धर्म मिला है, क्यों ठोकरें खा रहे हो।
नई दिशा दो संतानों को, घर में धर्म की ज्योति जगाओ,
मिले प्रेरणा परिवार को, सद् आचरण तुम अपनाओ ।।४ ।।
वीर प्रभु के हो उपासक, अपने कुल की शान रखो तुम,
प्रभु ने हमें जीना सिखलाया, दुर्व्यसनों से सदा बचो तुम।
श्रेष्ठ बनो जीवन में हर दम, श्रेष्ठीवर्य कहलाते हो,
जीवन बने उन्नत हमारा, यह बात क्यों बिसराते हो ।।६ ।।

-स्टेशन रोड़, दुर्ग (छत्तीसगढ़)

संवाद (१४)

जून २००८ की जिनवाणी में पूछे गए निम्नांकित प्रश्न के उत्तर प्राप्त होना प्रारम्भ हो गए हैं। उन्हीं में से एक उत्तर यहाँ प्रकाशित हैं-

९. प्रश्न- "मैं सदा सत्य बोलने के नियम को लेना चाहता हूँ। किन्तु उससे पहले सत्य के व्यापक स्वरूप को व्यवहार के क्षेत्र में समझना चाहता हूँ। अतः सत्य क्या है इसकी विस्तृत व्याख्या करें।"

डॉ.श्वेता जैन- श्रावक के पाँच अणुव्रतों में दूसरा अणुव्रत सत्य से सम्बन्धित है। सभी अणुव्रत एक दूसरे के पूरक हैं। अहिंसा के बिना सत्य, अचौर्य आदि व्रतों का और सत्य के बगैर अहिंसादि व्रतों का सम्यक् पालन संभव नहीं है। इसी प्रकार अचौर्य, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह व्रत भी परस्पर सापेक्ष हैं।

सत्य का स्वरूप व्यवहार के क्षेत्र में अत्यन्त व्यापक है। हम सुनते आये हैं कि भगवान् महावीर सत्य की खोज करने के लिए राजसुखों को छोड़कर जंगल में निकल पड़े। यहाँ जो सत्य शब्द का प्रयोग किया गया है उसका अभिप्राय जगत् के यथार्थ दर्शन और उसके भूत, भविष्य और वर्तमान के वास्तविक स्वरूप से है।

सत्य अनेक अर्थों में विवेचित है। स्थानांग के अनुसार सत्य के चार प्रकार हैं- काया की ऋजुता, भाव की ऋजुता, भाषा की ऋजुता तथा योगों की अविसंवादकता। आचारांग चूर्णि में सत्य 'प्रतिज्ञा' के अर्थ में प्रयुक्त हुआ है। वहाँ प्रतिज्ञा के अनुसार व्रतों का पालन करना सत्य है। कर्मों के क्षय के लिए धृति भी नितान्त अपेक्षित होती है। जिस साधक की सत्य में धृति होती है, वही पूर्वोपार्जित कर्मों को क्षीण करने में समर्थ होता है। अतः आचारांग में कहा है- "सच्चंसि धितिं कुव्वह" अर्थात् तू सत्य में धृति कर। आत्मनिग्रह के उपायों के प्रसंग में लिखा है-'पुरिसा! सच्चमेव समभिजाणाहि' अर्थात्-हे पुरुष! तू सत्य का ही अनुशीलन कर।

सत्य का अर्थ है वस्तु का यथार्थ स्वरूप। जब तक यह सम्यक् रूप में ज्ञात नहीं होता, तब तक वस्तु के प्रति होने वाला प्रिय संवेदन का ग्रहण नहीं रुकता। अपाय विचय और विपाक विचय रूपी धर्मध्यान के दो भेदों से पदार्थ सम्बन्धी दोषों तथा उनसे होने वाले परिणामों को सम्यक् रूप से जानकर ही पुरुष आत्म-निग्रह कर सकता है।

'सत्य-व्रत' में प्रयुक्त 'सत्य' से तात्पर्य वचन सम्बन्धी यथार्थता के

कथन से है। एक व्यक्ति सच्चा अथवा सत्यव्रती तभी कहलाता है जब वह जैसा देखता है, सुनता है, अनुभव करता है वैसा उसको वचनों से अभिव्यक्त करता है। सत्य-व्रत ग्रहण करने वाले के लिए मात्र इतना अभिप्राय समझना पर्याप्त नहीं है। सत्य व्रत को पुष्ट करने वाली पाँच भावनाएँ, पाँच अतिचार, दश धर्म में सत्य धर्म, योग और पंच समिति-गुप्ति के परिप्रेक्ष्य में सत्य को सम्यक्तया जानना और समझना अभीष्ट है।

आचारांग और प्रश्नव्याकरण सूत्र में निरूपित क्रोध-प्रत्याख्यान, लोभ-प्रत्याख्यान, भय-प्रत्याख्यान, हास्य-प्रत्याख्यान अनुवीचि-भाषण नामक पाँच भावनाओं से सत्य व्रत का पुनः पुनः पोषण किया जाना चाहिये। क्रोध,लोभ, भय और हास्य के आवेग से नहीं बोलना 'क्रोध-लोभ-भय-हास्य प्रत्याख्यान' और पापरहित एवं शास्त्र में बताई मर्यादा सहित विचारपूर्वक बोलना 'अनुवीचि भाषण' है। सत्यव्रती इन पञ्च भावनाओं का प्रातः प्रतिज्ञा के रूप में और रात्रि में प्रतिक्रमण के रूप में चिन्तन करे।

श्रावक के लिए सत्य व्रत के पाँच अतिचार हैं- (१) झूठा दोष लगाना (२) गुप्त मंत्रणा करने वालों पर झूठा आरोप लगाना (३) अपनी स्त्री/पुरुष का मर्म प्रकाशन करना (४) झूठा उपदेश देना (५) झूठा लेख लिखना। व्रती को इन अतिचारों का ही खयाल नहीं करना है, साथ में उन दोषों से भी बचना है जो अतिचारों के मूल कारण हैं। जैसे- किसी ने प्रत्याख्यान लिए कि थाली में एक बार में जितना भोजन रखा जायेगा, मैं उतना खाकर ही संतोष करूँगा। इस नियम के पालन करने हेतु उसने टिफिन में अपना भोजन दुकान पर मंगाना प्रारम्भ करवा दिया ताकि पूर्ण भोजन भी हो जाए और नियम की पालना भी। महाराज के पूछने पर वह कहता मैं नियम का पालन कर रहा हूँ। यह औपचारिक रूप से सत्य का पालन है। आपको यह समझना है कि इस नियम दिलाने में त्याग-भावना, समत्वपुष्टि आदि लक्ष्य हैं, यदि इस लक्ष्य की पूर्ति नहीं होती है तो वह नियम आडम्बर है।

दश धर्म के अन्तर्गत सत्यधर्म का भी परिगणन किया गया है। सत्य धर्म में भावसत्य (भावसच्चे), करणसत्य (करणसच्चे) और योगसत्य (योग सच्चे) का समावेश है। **भावसत्य**-भावों में या परिणामों में सदा सत्य का भाव रहे, **करणसत्य**-करणीय कर्त्तव्यों को सम्यक् प्रकार से करना और **योग सत्य**-मन, वचन, काय की सत्यता है।

हमने सत्य व्रत को वचन से ही योजित किया है, जो उचित नहीं है। मन और काया का योग भी सत्य पालन में उतना ही आवश्यक है जितना वचन का। कभी कोई सोचता है कि सत्य कहने पर दूसरे के भीतर क्रोधादि कषाय की वृद्धि होगी, फिर भी वह उसे कहे बिना नहीं रहता है तो ऐसा सत्य 'वचन सत्य' तो हो सकता है, किन्तु सत्य मनोयोग नहीं हो सकता। इसलिए श्रावक को मन-वचन-कर्म तीनों योग से सत्य भाषण करना चाहिये। निरवद्य या निर्दोष सत्य ही सत्य भाषण की श्रेणि में आता है, साधारण एवं अहितकारक वचन नहीं।

पाँच समिति साधु के द्वारा आचरणीय है, किन्तु उसका आंशिक पालन श्रावक द्वारा करने योग्य है। अतः सत्य व्रती को हित, मित, संदेह रहित, विवेकपूर्वक वचन बोलना चाहिए एवं निश्चयकारी और मर्मभेदी वचनों को त्याज्य समझना चाहिये।

नेमीचन्द कटारिया, अजमेर- सत्य जीवन का स्वाभाविक सौन्दर्य है, सत्य व्यवहार का मूल आधार है, साधना का प्राण है। सत्य विश्वास प्राप्ति का मुख्य साधन है, यश का मूल कारण है, यह स्वाभाविक है। श्रावक के सारे नियम प्रत्याख्यान, व्रत, त्याग, तप सत्य के बिना नहीं चल सकते। धर्मसंग्रह अधिकार का कथन है-

सच्चं जसस्स मूलं, सच्चं विस्सासकारणं परमं।
सच्चं सग्गद्दारं सच्चं सिद्धीअ सोवाणं।।

अर्थात् सत्य स्वर्ग का द्वार एवं सिद्धि का सोपान है। सत्य के रूप असंख्य, अनन्त और असीम हैं। वह देखा जा सकता है, समझा जा सकता है, किन्तु उसकी सीमा का पता कोई नहीं चला सका है।

धर्म का अपना कोई पृथक् अस्तित्व नहीं है। वह सत्य, दयालुता, प्रेम आदि गुणों के सहारे ही अपना रूप प्रकट करता है। जो बात, विचार या कार्य लोकव्यवहार की दृष्टि में, जनता में असत्य के नाम से प्रचलित हैं जो राज्य द्वारा दण्डनीय, समाज द्वारा निन्दनीय है, जिससे किसी जीव की अकारण हिंसा होती है, दुःख पहुँचता है वह विचार या कार्य स्थूल असत्य है। अपने स्वार्थ के लिए, मौजमस्ती के लिए, विघ्न आने की आशंका से, किसी भय से, व्यापार धंधे में अधिक मुनाफाखोरी, तस्कारी आदि दृष्टि से बोला गया असत्य निन्दनीय व सत्य नियम को दूषित करने वाला है।

बाल-स्तम्भ

राजा उदायन की क्षमा

श्री सुभद्र मुनि जी महाराज

बाल-स्तम्भ के अन्तर्गत प्रकाशित कहानी को पढ़कर अन्त में दिए गए प्रश्नों के उत्तर १० सितम्बर २००८ तक श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, घोड़ों का चौक, जोधपुर-३४२००१ (राज.) के पते पर प्रेषित करें। श्रेष्ठ उत्तरदाताओं को श्री महावीरचन्द जी बाफना, जोधपुर द्वारा अपनी धर्मपत्नी एवं श्री मनोजकुमार जी, कमलेश कुमार जी बाफना की माताश्री स्व. श्रीमती मोहिनीदेवी जी बाफना की पुण्य-स्मृति में पुरस्कृत किया जा रहा है। पुरस्कारों की राशि इस प्रकार है- प्रथम पुरस्कार-२५० रुपये, द्वितीय पुरस्कार-२०० रुपये, तृतीय पुरस्कार- १५० रुपये तथा १०० रुपये के पाँच सान्त्वना पुरस्कार।

सिन्धु-सौवीर देश की राजधानी थी, वीतभय नगरी। वहाँ महाराजा उदायन का शासन था। उदायन प्रजावत्सल, धार्मिक विचारों वाले और महाप्रतापी नरेश थे। उनके अन्तःपुर में एक दासी काम करती थी। उसका नाम था, सुवर्ण-गुलिका! वह दासी अत्यन्त सुन्दर थी। उसका रूप-सौन्दर्य महारानियों से भी ऊपर था। उसके सौन्दर्य की चर्चाएँ दूर-दूर तक फैली थीं।

उज्जयिनी नरेश चण्डप्रद्योत ने भी सुवर्णगुलिका के रूप की प्रशंसाएँ सुनीं। वह उसे पाने के लिए लालायित हो उठा। उसने गुप्त रूप से सुवर्णगुलिका तक अपना प्रस्ताव भिजवाया कि मैं तुम्हें उज्जयिनी की महारानी बनाना चाहता हूँ। सुवर्णगुलिका इस सम्मान के प्रलोभन में आ गई। उसने संदेशवाहक से कहा- ''राजा उदायन मेरा बड़ा मान करते हैं, मैं उन्हें छोड़ नहीं सकती हूँ। हाँ, यदि राजा चण्डप्रद्योत मेरा अपहरण करके ले जाएँ तो इसमें मेरी विवशता उदायन के सामने प्रकट हो जाएगी और वे मुझे कृतघ्न नहीं समझेंगे।''

चण्डप्रद्योत सुवर्णगुलिका के लिए कुछ भी करने को तत्पर था। एक दिन उसने छद्म वेश बनाया और अपने अनिलवेग हाथी पर वह सुवर्णगुलिका को अपहृत करके ले गया।

महाराजा उदायन को यह सूचना मिली। उन्होंने इसे अपना अपमान समझा। इसका प्रतिकार करने के लिये उन्होंने दल-बल सहित उज्जयिनी पर

आक्रमण कर दिया। चण्डप्रद्योत महाराजा उदायन का सामना न कर पाया। उदायन के सैनिकों ने उसे बन्दी बनाकर उनके सम्मुख प्रस्तुत किया। लौहशृंखला में बंधा चण्डप्रद्योत उदायन के सम्मुख खड़ा था। उदायन ने उसके मस्तक पर गरम लोहशलाका से दासीपति अंकित कर उसे बन्दीगृह में डाल दिया।

युद्ध जीतकर महाराजा उदायन ने पुनः वीतभय पत्तन की ओर प्रस्थान किया। मार्ग में वर्षाऋतु प्रारंभ हो गई। जलावेग से समस्त मार्ग बन्द हो गए। राजा ने जंगल में ही वर्षा ऋतु बिताने का निश्चय किया और वहीं छावनी डाल दी।

संवत्सरी महापर्व का दिन आया। राजा उदायन ने उस दिन समस्त आरम्भ-परिग्रह का त्याग करके पौषधोपवास किया। उस दिन राजा के लिए भोजन नहीं बनना था। अतः रसोइया चण्डप्रद्योत के सम्मुख उपस्थित हुआ और पूछने लगा कि आप क्या भोजन पसन्द करेंगे। चण्डप्रद्योत प्रथम बार यह सवाल पूछे जाने पर आश्चर्य चकित हुआ। बोला- ''क्यों! आज क्या विशेष बात है? प्रतिदिन राजा उदायन के लिए जो भोजन बनता है, वही मुझे भी मिलता है। आज भी जो वे खाएँगे, वही मैं भी खा लूँगा।''

पाचक बोला-''महाराज उदायन आज भोजन नहीं करेंगे। आज उन्होंने महापर्व संवत्सरी का पौषध-उपवास किया है।'' पाचक की बात सुनकर चण्डप्रद्योत बोला- ''यदि ऐसा है तो मेरे लिए भी कुछ बनाने की आवश्यकता नहीं है। उपवास के नाम पर यह छल रचा जा रहा है। भोजन में विष मिला कर मुझे मारने का षड्यन्त्र रचा जा रहा है।''

संध्याकाल में महाराजा उदायन ने प्रतिक्रमण किया। उन्होंने चौरासी लाख जीव-स्थानों के प्राणियों से क्षमापना की। तभी उनके मन में विचार आया- 'यह क्षमापना तो अधूरी है, चण्डप्रद्योत से भी क्षमायाचना करनी चाहिए।' उदायन चण्डप्रद्योत के पास पहुँचे और संवत्सरी सम्बन्धी क्षमापना करने लगे। चण्डप्रद्योत को अवसर मिल गया। वह बोला- ''झूठा है तुम्हारा यह पौषध। झूठी है तुम्हारी क्षमापना भी। यहाँ मुझे बेड़ियों में बांधकर भी क्षमा मांग रहे हो? क्षमा तुम्हारे अधरों तक ही अटकी है। क्षमापना के इस पवित्र पर्व ने तुम्हारे अन्तस् को नहीं छुआ है। यदि ऐसा होता तो आज मुझे सीखंचों में

बन्द न होना पड़ता।"

महाराजा उदायन ने सोचा- "ठीक कह रहा है चण्डप्रद्योत। उन्होंने त्वरित आदेश देकर उसे बन्धनमुक्त कराया और उसके अपराध को क्षमा करते हुए जीता गया उसका राज्य भी लौटा दिया। दोनों गले मिले। शत्रुता का कल्मष प्रेम की वृष्टि में बह गया। चण्डप्रद्योत ने जीवन में ऐसे कर्म न करने की प्रतिज्ञा ली।"

दोनों राजा अपने-अपने राज्यों को लौट चले। क्षमावीर उदायन की क्षमापना आज भी याद की जाती है।

प्रश्नः-

१. राजा उदायन की विशेषताएँ बताइये।

२. सुवर्णगुलिका एक स्वामिभक्त दासी थी। क्या आप इससे सहमत हैं, क्यों?

३. राजा चण्डप्रद्योत के जीवन में परिवर्तन का क्या कारण था?

४. अर्थ बताइये- वीतभय, प्रजावत्सल, लोहशलाका, पौषधोपवास, कल्मष, पत्तन।

५. आपने कभी किसी को क्षमा किया हो- ऐसा अपने जीवन का प्रसंग लिखिए।

बाल-स्तम्भ [जून-२००८] का परिणाम

जिनवाणी के जून-२००८ के अंक में बाल-स्तम्भ के अंतर्गत 'परख' कहानी के प्रश्नों के उत्तर ४८ बालक-बालिकाओं से प्राप्त हुए, उनमें से प्रतियोगिता के विजेता इस प्रकार हैं। पूर्णांक २० में से दिये गये हैं-

पुरस्कार एवं राशि	नाम	अंक
प्रथम पुरस्कार-२५०/-	कमलेशकुमार जैन-पादरु	१९
द्वितीय पुरस्कार-२००/-	दर्शना जैन- जोधपुर	१८.५
तृतीय पुरस्कार- १५०/-	नेहा जैन-जोधपुर	१८.२५
सान्त्वना पुरस्कार- १००/-	रजनी जैन-सवाईमाधोपुर	१८
	पल्लवी जैन-जोधपुर	१८
	पारूल खिंवसरा-जोधपुर	१८
	सौरव भण्डारी-पीपाड़ शहर	१८
	यशवन्तकुमार गोलेच्छा-ब्यावर	१८

<u>कृति की २ प्रतियाँ अपेक्षित हैं</u>

नूतन साहित्य

डॉ. धर्मचन्द जैन

Jains Today In The World- *Pierre Paul Amil* ***Publisher-*** *Parshwanath vidyapeeth, ITI Road, Karaundi, VARANASI-221005,* ***Pages*** *25+307,* ***Price*** *Rs. 500, US $ 30.00, First Edition 2008.*

This book has ten chapters. First Chapter describes the long histroy of Jains before Mahavira and till today. Second Chapter deals with diversity of Jains in the forms of various branches of Digambaras and shvetambers. Chapter third discusses their revered beings like 24 Tirthankers, Siddhas, Acharyas, Upadhyayas and Sadhu-Sadhvis. Fourth Chapter provides the details about sacred Jain Literature of both the Jaina sects. Chapter Five concentrates on the temples and secred places with some photographs. The Sixth chapter discusses about shravaks and shravikas, their vows, duties and virtues. Chapter Seven deals with their rites, cults and festivals. Chapter eight describes their religious Symbols, drawings and expressions. The Ninth Chapter discusses about the ascetics (Sadhus and sadhvis), reasons to enter in monastic order, life of Jain novice, the rites and rules of ascetics etc. Chapter ten deal's with the influence of Jains on various fields of life and culture in India and abroad. The book contains 7 annexes including bibliography and useful Jain addresses and website.

The book was originaly published in french under the title " Les Jains aujourd hui dans le monde" in 2003 and now English Version has been performed by Alkit Malde and Mrs Manon Massizzo. Parshvanath Vidyapeeth is thankful for it's publication.

जीवन का उत्कर्ष(जैन दर्शन की बारह भावनाएँ)- श्री चित्रभानु, ***प्रकाशक***- पार्श्वनाथ विद्यापीठ, आई.टी.आई. रोड़, करौंदी, वाराणसी-२२१००५, ***पृष्ठ*** १८+१५४, ***मूल्य*** २७० रुपए, ***सन्*** २००८

श्री चित्रभानुजी विदेशों में जैन धर्म का संदेश पहुँचाने वाले व्यक्तियों में अग्रणी हैं। उनकी पुस्तक "Twelve facets of Reality" का हिन्दी अनुवाद प्रस्तुत पुस्तक 'जीवन का उत्कर्ष' के रूप में प्रकाशित हुआ है। पुस्तक में अनित्य, अशरण, संसार, एकत्व, अन्यत्व, अशुचित्व, आस्रव, संवर, निर्जरा, बोधिदुर्लभ एवं धर्म-भावना पर चित्रभानु जी का प्रभावी मौलिक चिन्तन प्रकट हुआ है। वे बारह भावनाओं को सत्य के बारह पहलुओं के रूप में प्रस्तुत करते हैं। वे ध्यान के साथ बारह भावनाओं को योजित कर साधक को संसार से अध्यात्म की ओर आने की प्रेरणा करते हैं। कृति का हिन्दी अनुवाद डॉ. प्रतिभा जैन ने किया है। पुस्तक अनुवाद होकर भी प्रवाहयुक्त एवं मौलिक प्रतीत होती है।

नवकार मंत्र की चूलिका का महत्त्व

श्री भद्रंकर विजय जी

श्री नवकार के माहात्म्य का परिणमन करने के लिए चूलिका के प्रत्येक पद में वही निष्ठा होनी चाहिये, जो निष्ठा नवकार के पांच पदों में है। श्री नवकार के पांच पद एवं चूलिका साथ में मिलती है तभी 'श्री पंचमंगल महाश्रुत स्कंध' बनता है। शास्त्र में मंगल, अभिधेय, प्रयोजन और फल कहा जाता है। नवकार मंत्र की चूलिका से उसका प्रयोजन एवं फल स्पष्ट होता है।

चूलिका के चारों पद आत्मा में ऐसा विश्वास जगाते हैं कि प्रत्येक श्वास में सात्त्विकता दृढ़ बनती है।

श्री नवकार द्वादशांगी का सार है। द्वादशांगी का प्रत्येक वचन भव-जल तारक है। द्वादशांगी का कोई भी पद लेंगे वह सद्बुद्धि जगाएगा जबकि नवकार तो द्वादशांगी का सार है, अतः उसमें चित्त को विशुद्ध करने का असाधारण सामर्थ्य है।

जिनके प्रति हम झुकते हैं, उनके स्वरूप को यथार्थ रुप से जानने से हमारा शुभ भाव बढता है, अतः पंच परमेष्ठी भगवंतों का स्वरूप अच्छी तरह से कहना चाहिये।

सभी भाव मंगलों का योग श्री नवकार में है। उसके साथ संबंध हो तो कंरट लगता है और सभी पाप जलकर भस्मीभूत हो जाते हैं, क्योंकि नवकार में रहे परमेष्ठी भगवंतों के सभी पाप जलकर नष्ट हो चुके हैं।

-संकलयिता : श्री नवरतन डोसी, जोधपुर

पच्चीस बोल प्रतियोगिता का परिणाम

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के राष्ट्रीय कार्यक्रम 'पच्चीस बोल सीखें' के अन्तर्गत पच्चीस बोल प्रतियोगिता का आयोजन अखिल भारतीय श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल के द्वारा अखिल भारतीय स्तर पर किया गया, जिसमें श्रावक–श्राविकाओं ने पूर्ण उत्साह पूर्वक भाग लिया। इस प्रतियोगिता का परिणाम घोषित करते हुए हमें प्रसन्नता हो रही है। वरीयता सूची में आने वालों के नाम एवं कोष्ठक में अंक इस प्रकार हैं:–

सर्वाधिक अंक प्राप्तकर्ता (प्रत्येक को 5000 रूपये नकद)

1. सुशीलादेवी मूलचन्द जी बाफना- जोधपुर (480)
2. विद्या अशोककुमार जी संघवी-बदनावर (480)
3. नेनचन्द बाफना-जोधपुर (480)

सुपर टॉप टेन (प्रत्येक को 1000 रूपये नकद)

1. प्रमिला बाबूलाल जी पोखरणा-धुलिया (478.5), 2. कुसुम हेमचन्द जी सिंघवी-जोधपुर (478), 3.अस्मिता शांतिलाल जी डाकलिया-जोधपुर (478), 4.संजू नरेन्द्र जी बाफना-जोधपुर (478), 5. रश्मि राहुल जी झाम्बड़- औरंगाबाद (477.5), 6. सरिता महेश जी पटवा-जोधपुर (476.5), 7. चमेलीदेवी प्रभुदयाल जी जैन-सवाईमाधोपुर (476.5), 8. शीलू सुनील जी हीरावत-जयपुर (476.5), 9. इन्दू कमलेश जी जैन-मुम्बई (476),10. कुसुम अशोककुमार जी फोफलिया-जयपुर (476)

प्रोत्साहन सम्मान (प्रत्येक को 250 रूपये नकद)

लता सतीश जी आंचलिया-धुलिया (475), राजुल रमेशचन्द जी कोठारी- धुलिया (474), निरूपा कपिल जी पटवा-जोधपुर (474.5), मयंककुमार नरेन्द्रकुमार जी बोहरा-भवानीमण्डी (474), जितेन्द्र माणकलाल जी मेहता-रतलाम (474), कमलेश कैलाश जी गेलड़ा- अजमेर (474), लता नरेन्द्रकुमार जी बरड़िया- बोदवड़ (474), सुरभि ललित जी गोलेच्छा-भवानीमण्डी (474), नेमीचन्द तोलाराम जी-धुलिया (473), रेखा अजय जी ललवानी-अलवर (473), विमला विजयकुमार जी लुणिया-जयपुर (473), मंगला परसराम जी लुंकड़-शेगांव (473), पारस रिखबचन्द जी जैन- जयपुर (473), आर चन्द्रा रतनलाल जी बोथरा-रायपुर (472), सुमतिचन्द नेमीचन्द जी मेहता-पीपाड़ (472), जयवन्त पीताम्बरदास जी शाह-पीपलोद (472), राजकुमार केवलचन्द जी बांठिया-पाली (472), अलका ललित जी गोलेच्छा-भवानीमण्डी (472), सरलाबाई सुरेशचन्द जी चोरडिया- धुलिया (472), मोहंनकंवर सोहनराज जी संकलेचा-जोधपुर (472), मांगीलाल जसाराम जी सुथार-बारनी (472), कंवलराज पारसमल जी मेहता-जोधपुर (471), अभिलाषा अजय जी हीरावत-मुम्बई (471), रेखा नन्दलाल जी जैन - शेगांव (471), दीपकला नरेन्द्र जी संचेती-जयपुर

(470.5), रशिका कंवरलाल जी टाटिया-जलगांव (470.5), रानु तेजमल जी पालडेचा-धनोप (470), रेखा पदमचन्द जी लुणावत-पीपाड़ (470), चित्रा हेमन्त जी डागा-बून्दी (469.5), अनिता सुजीतकुमार जी मकाणा-चेन्नई (469.5), कुन्दनमल जंवरीलाल जी मुणोत-भोपालगढ़ (469.5), उज्ज्वला प्रकाशचन्द जी बरड़िया-जामनेर (469), संगीता मनोजकुमार जी लोढ़ा-भवानीमण्डी (469), मीना मुकेशकुमार जी जैन-सवाईमाधोपुर (469), अश्विनी एस. आर. जैन -धुलिया (469), कनक स्नेहकुमार जी भण्डारी-जयपुर (469), नेहा विमलचन्द जी जैन-शिमोगा (468.5), चन्द्रकांता योगेन्द्र जी जैन-जयपुर (468), सुनीता मनोहरसिंह जी भण्डारी-किशनगढ़ (468), पल्लवी संजीवकुमार जी जैन-होशियारपुर (468)

शेष प्रतियोगियों के परिणाम पोस्टकार्ड द्वारा घर भिजवाये जा रहे हैं। इस प्रतियोगिता में करीब 1650 प्रतियोगियों ने भाग लिया। पुस्तकें जाँच करने में पूर्ण सावधानी रखी गई है फिर भी कोई त्रुटि रह गई हो तो हम क्षमाप्रार्थी हैं। पुस्तकें जाँच करने वालों एवं प्रतियोगिता में सहयोग करने वालों का हार्दिक आभार।

डॉ. मंजुला बम्ब	आशा गांग	सुनीता मेहता
अध्यक्ष	महासचिव	संयोजक

(अखिल भारतीय श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल)

आचार्य हस्ती जन्म-शताब्दी समारोह

अध्यात्मयोगी युगमनीषी परमाराध्य महामहिम आचार्य भगवन्त पूज्य श्री हस्तीमल जी म.सा. का जन्म शताब्दी समारोह का पावन-प्रसंग (जनवरी २०१० से जनवरी २०११) हमारे समक्ष उपस्थित हो रहा है। आचार्य भगवन्त साधना के बहुआयामी व्यक्तित्व थे। उच्च साधना के शिखर के साथ सामायिक-स्वाध्याय की प्रेरणा हेतु सतत जागृत एवं तत्पर रहने वाले महान् पुरुष की साधना-आराधना जन-जन को आकर्षित एवं श्रद्धाभिभूत करने वाली है। गुरु-भक्ति, श्रद्धा एवं संघ समर्पण होने के नाते हमारा यह कर्त्तव्य बनता है कि ऐसे युगपुरुष के प्रति श्रद्धाभिव्यक्ति एवं उनके आदर्शों को जीवन में आत्मसात् करने का लक्ष्य रखें। राष्ट्रीय स्तर पर इस पावन प्रसंग की साधना किस प्रकार की जा सकती है? किन आयोजनों के द्वारा इस शताब्दी समारोह को उत्कृष्ट एवं अनुकरणीय बनाया जा सकता है? अतः सभी संघ सदस्यों से निवेदन है कि उक्त आयोजन हेतु आपके सकारात्मक सुझाव सादर आमन्त्रित है। आपके सुझाव शीघ्रातिशीघ्र संघ कार्यालय के पते पर भिजवाने का श्रम करावें, जिससे कि यथासमय कार्यक्रमों की भूमिका बनाकर क्रियान्विति की जा सके। *-नवरतन डागा, महामंत्री, अ.भा. श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, घोड़ों का चौक, जोधपुर (राज.), फोन एवं फैक्स-०२९१-२६३६७६३*

समाचार-विविधा

परम पूज्य आचार्यप्रवर का कांदिवली, मुम्बई में चातुर्मासार्थ मंगल-प्रवेश

परमश्रद्धेय आचार्यप्रवर पूज्य गुरुदेव श्री १००८ श्री हीराचन्द्र जी म.सा., महान् अध्यवसायी श्री महेन्द्रमुनि जी म.सा. आदि ठाणा ९ का आषाढ़ शुक्ला, दशमी, शनिवार दिनांक १२ जुलाई २००८ को कांदिवली (ईस्ट) स्थित कल्पतरु गार्डन के विंग 'ए' में चातुर्मासार्थ मंगल प्रवेश अत्यन्त भव्यता से हुआ। आचार्यप्रवर ने प्रातः ७.३० बजे के आसपास सिद्धार्थ नगर से विहार किया। आचार्यप्रवर अपने चातुर्मास प्रवेश तिथि की जानकारी पूर्व से नहीं देते, अतः विहार की क्रमबद्धता में भी सदा की भाँति संघ-सेवियों ने देखा कि आचार्यप्रवर ने अपने आज्ञानुवर्ती संत-मुनिराजों को विहार का संकेत कर दिया है इस कारण संत भण्डोपकरण आदि सामग्री बांधकर तैयार हो रहे हैं। आज संचार क्रांति का समय है। दो-चार श्रावकों को आचार्यप्रवर की भावना विदित होते ही एक दूसरे को एक दूसरे के माध्यम से विहार की जानकारी मिलते ही भिन्न-भिन्न उपनगरों के श्रद्धालु विहार-सेवा के लाभ की भावना से धीरज हिलव्यूह टॉवर के पास सिद्धार्थ नगर पहुँचने प्रारम्भ हुए तो देखते-देखते सिद्धार्थ नगर में श्रावक-श्राविकाओं, युवक-युवतियों एवं बालक-बालिकाओं की अच्छी-खासी संख्या एकत्रित हो गई।

आचार्यप्रवर ने सिद्धार्थ नगर से विहार किया तो सदा की भाँति संघसेवी श्रावक-श्राविकाओं ने भगवान् महावीर स्वामी की जय, जैन धर्म की जय, आचार्य भगवन्त पूज्य श्री हस्तीमल जी म.सा. की जय, आचार्यप्रवर पूज्य श्री हीराचन्द्र जी म.सा. की जय, उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा. की जय, निर्ग्रन्थ संत-मुनिराजों की जय के जयनादों के साथ 'गुरु हस्ती के दो फरमान-सामायिक स्वाध्याय महान्', 'गुरु हीरा का है आह्वान- निर्व्यसनी हो हर इन्सान', 'जैन जगत के दिव्य सितारे- हस्ती हीरा मान हमारे' नारे गुञ्जायमान हुए तो जन समुदाय का उमंग-उल्लास छुपा नहीं रह सका।

जय-जयकार की तुमुल ध्वनि, बहिनों के मंगल-गीत और अच्छी संख्या में श्रद्धालुओं का स्वप्रेरित अनुशासन के साथ चलने का सुन्दर रूप देखकर सड़क मार्ग से

निकलते लोगों को यह अहसास हो गया कि आगे-आगे कोई बड़े महात्मा चल रहे हैं।

आचार्यप्रवर अपने आज्ञानुवर्ती संत-मुनिराजों के साथ कल्पतरु गार्डन पधारे तो सबसे पहले आचार्यप्रवर ने स्थान की आज्ञा-अनुमति चाही। आज्ञा प्राप्त करने के पश्चात् संत-मुनिराजों ने भण्डोपकरण रखकर चउवीसत्थव किया। प्रवचन-स्थल पर सामायिक-साधना में उपस्थित श्रावक-श्राविकाओं को आचार्यप्रवर प्रभृति संत-मुनिराजों के प्रवचन सभा में पधारने के लिए इन्तजार नहीं करना पड़ा। जय-जयकार के गगनभेदी जयनाद कर जनसमुदाय ने आचार्यप्रवर आदि संत-सतीवृन्द का हार्दिक स्वागत किया। व्याख्यात्री महासती श्री निःशल्यवती जी म.सा. आदि ठाणा ४ भी चातुर्मासार्थ कल्पतरु गार्डन 'सी' विंग में दिनांक १२.०७.२००८ को करीब ९ बजे पधारे। संघनायक के मंगलमय प्रवेश की पावन बेला में हर्षित-उल्लसित मन से गुरुदेव के चरण-सरोजों में समुपस्थित हुए।

व्यवस्था को सुचारु बनाए रखने के लिए युवारत्न बन्धु श्री नरेन्द्र जी डागा ने पूज्य गुरुदेव के मंगलमय पदार्पण के पावन प्रसंग पर जय-जयकार के जयनाद करवाये तो अपूर्व शांति के साथ वक्ताओं के हृदयोद्गार श्रवण करने हेतु जन समुदाय आतुर नजर आया।

सर्वप्रथम आचार्यप्रवर ने नमस्कार महामंत्र का उच्चारण कर प्रार्थना करवाई, जिसमें श्रावकों ने तन्मयतापूर्वक अपनी भागीदारी अदाकर प्रार्थना का आनन्द लिया। मलाड़ श्राविका मण्डल की बहिनों ने स्वागत-गीत की समवेत स्वर में सुन्दर प्रस्तुति दी। स्वागत गीत के बोल थे- नर-नारी सब मिल गुण गाओ, गुरु हीरा-मान का, कांदिवली के आँगन में स्वागत है गुरुदेव का।

संघ संरक्षक मण्डल के संयोजक एवं अनन्य गुरुभक्त उदारमना संघसेवी सुश्रावक **श्री मोफतराज जी मुणोत** ने परम पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. के प्रति अपनी असीम श्रद्धा व्यक्त करते हुए कहा कि हम मुम्बईवासी आचार्यप्रवर पूज्य गुरुदेव के उपकारों से कभी उऋण नहीं हो सकते। मुम्बई महानगर में हमें चार 'दीक्षाओं' का सुयोग मिला वहीं अक्षयतृतीया महोत्सव मनाने का सुअवसर भी प्राप्त हुआ। आचार्यप्रवर ने मुम्बई महानगर के प्रायः सभी क्षेत्रों को संभालकर हमें धर्म-साधना में सक्रिय किया है। पूज्य गुरुदेव ने महती कृपा कर चातुर्मास का लाभ दिया, हम आपश्री के एवं सभी संत-सतीवृन्द के अत्यन्त आभारी हैं। महानगर में विचरण कठिन होता है लेकिन दयालु गुरुवर्य ने अपनी कठिनाई गौण कर सबको संभालने का बीड़ा उठाया और हमें चातुर्मास देकर उत्साहित किया, समूचा मुम्बई शहर पूज्य गुरुदेव का

ऋणी है। आचार्यप्रवर की सेवा में संघाध्यक्ष भाई पारसजी एवं उनकी पूरी टीम जुड़ी रही, युवकों ने सेवा में सदा सक्रियता रखी, हम गुरुभक्ति में इसी तरह सदा सजग रहें। साथ-ही-साथ हम संत-सतीवृन्द के ज्ञान, दर्शन, चारित्र में सहयोगी बनें। पूज्य आचार्यप्रवर ने २००२ में बालकेश्वर चातुर्मास दिया, आपश्री की महरबानी थी, है और आगे भी रहेगी। मुणोत साहब ने आचार्यप्रवर प्रभृति संत-सतीवृन्द को श्रद्धा-भक्तिपूर्वक वन्दन-नमन कहकर एवं उपस्थित जन समुदाय के उत्साह पर प्रमोद जाहिर करते हुए अपनी बात समाप्त की।

तत्त्वचिन्तक श्री प्रमोदमुनि जी म.सा. ने अपने मंगल उद्बोधन में भटकाव रोककर भीतर में प्रवेश करने के लिए बाहरी दुनिया के परिचय को साधना में बाधक बताया। मुनिश्री ने ज्ञानाराधन, तपाराधन, धर्माराधन में उत्तरोत्तर आगे बढ़ने के आह्वान के साथ चातुर्मास का पूरा-पूरा उपयोग करने की प्रेरणा की।

मुम्बई महानगर की बहिन लूणावत ने 'आया रे आया म्हारे हीरा गुरुसा आया' बोल में भजन के गीत में 'गुरुसा पधारिया म्हारे देश में' भजन के द्वारा अपनी भावना रखी। सुश्रावक श्री कपूरचन्द जी जैन ने गुरु गुणगान किए।

व्याख्यात्री महासती श्री निःशल्यवती जी म.सा. ने जन-जन में छाए उल्लास के परिप्रेक्ष्य में गीत की कड़ियाँ रखते कहा-

"आज जन-जन में अधिक उल्लास है, झूमती धरती और आकाश है"

महासती जी ने अपने भाग्य की सराहना करते हुए कहा कि हमारे पर पूज्य गुरुदेव की बड़ी भारी कृपा रही है इसलिए हमें चरण सेवा में स्थान प्राप्त हो रहा है। गुरु सेवा में हम अपने ज्ञान-ध्यान को और सेवा-साधना को आगे बढ़ा सकेंगे।

परमपूज्य आचार्यप्रवर ने मंगल प्रवेश के मंगल प्रसंग पर फरमाया कि आज युवा वर्ग को नैतिकता से एवं आध्यात्मिकता से जोड़ने की जरूरत है। युवा सजग होंगे तो संघ-समाज में स्वतः सक्रियता बढ़ सकेगी। आचार्यप्रवर ने ओसवाल, पोरवाल, पल्लीवाल, अग्रवाल सभी जैन धर्मावलम्बियों के बालक-बालिकाओं के संस्कारों के सन्दर्भ में सावचेत करते कहा कि आज नैतिकता की नींव हिल रही है, उस पर धर्म का महल कैसे खड़ा होगा? आज तो जाति कुल के संस्कार गौण हो रहे हैं। कहाँ तो ओसवाल भोपाल का वह रुतबा और आज क्या स्थिति है, कहने की जरूरत नहीं। सामायिक स्वाध्याय, साधना और सेवा के पहले संस्कार-निर्माण की आवश्यकता है, जिस पर आपको विशेष ध्यान देना है। आने वाली पीढ़ी दया-दान और जप-तप से संतुष्ट बनेगी तो उनका भटकाव दूर हो सकेगा। आचार्यप्रवर ने जीवनादर्शों के प्रति

सबको सजग करते हुए चातुर्मास के सुयोग का जीवन-निर्माण में उपयोग करने पर चातुर्मास की सार्थकता बताई। दैनिक कार्यक्रमों में उत्साह से भाग लेने के साथ साधना-आराधना की वृद्धि करने की प्रेरणा रूप सन्देश प्रदान कर आचार्यप्रवर ने प्रत्याख्यान करवाये, मंगल पाठ सुनाया और हर्ष-उल्लास के साथ धर्म सभा विसर्जित हुई।

मुम्बई चातुर्मास में धर्म-साधना का ठाट एवं निरन्तर उत्तरोत्तर वृद्धि

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर पूज्य गुरुदेव श्री १००८ श्री हीराचन्द्रजी म.सा. दूरदर्शी महापुरुष हैं। मुम्बई महानगर में ७ मई को चार मुमुक्षु आत्माओं की भागवती दीक्षा एवं ८ मई को तप और दान के विशिष्ट पर्व अक्षय तृतीया के भव्य आयोजन के अनन्तर भक्तों की भावना रखने, क्षेत्र संभालने एवं सकल जैन समाज के आबाल-वृद्ध सबको धर्म के सम्मुख लाने में आचार्यप्रवर प्रभृति संत-सतीवृन्द के सार्थक प्रयासों से मुम्बई महानगर के जन-जीवन में धर्म की रुचि व भावना जागृत होते देख प्रायः प्रत्येक उपनगर की विनति में पूज्य गुरुदेव कुछ दिन और विराजने की कृपा करें तो व्रत-प्रत्याख्यानों में अधिक से अधिक लोगों को जोड़ सकेंगे। इस तरह के स्वर कई उपनगरों में सुनने को मिले। आचार्यप्रवर सबकी सुनते हैं और हर क्षेत्र संभालने की भावना रखते हैं इसलिए विचरण-विहार की क्रमबद्धता में पुनःपुनः पृच्छा के पश्चात् भी आचार्यप्रवर ने चातुर्मास प्रवेश तिथि विषयक कुछ भी कहने से परहेज ही रखा। बैंगलोर चातुर्मास से आचार्यप्रवर अपनी चातुर्मास प्रवेश तिथि प्रकट नहीं कर रहे हैं। बिना किसी सूचना के आचार्यप्रवर ने १२ जुलाई २००८ को कांदिवली क्षेत्र स्थित कल्पतरु गार्डन 'ए' विंग में जय-जयकारों के जयनादों के बीच चातुर्मासार्थ मंगल प्रवेश किया। विहार का दृश्य अनुपम रहा।

श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, मुम्बई के **अध्यक्ष श्री पारसचन्द जी हीरावत** ने पौषध सहित तेले के प्रत्याख्यान कर साधना का श्री गणेश किया। पूज्य गुरुदेव की चरण सन्निधि में चार माह मुम्बई में रहते नित्यप्रति संवर करने के संकल्प से मुम्बई महानगर के युवकों एवं श्रावक-श्राविकाओं में उल्लास का ऐसा संचरण हुआ कि चातुर्मासिक चतुर्दशी के पावन प्रसंग पर करीब १०० भाई-बहिनों ने आचार्यप्रवर के मुखारविन्द से मर्यादित समय-सीमा के साथ ब्रह्मचर्यव्रत स्वीकार किया। युवकों में कतिपय युवकों ने दो माह के लिए तो कुछ युवकों ने चार माह के लिए ब्रह्मचर्य पालन का नियम अंगीकार किया। करीब १५० से अधिक भाई-बहिनों ने चार माह रात्रि

भोजन नहीं करने, होटलों में नहीं खाने, सिनेमा नहीं देखने और घर में रहते कच्चा पानी नहीं पीने जैसे प्रत्याख्यान अंगीकार किए। चतुर्दशी के दिन ५५ भाइयों ने आचार्यप्रवर के श्रीमुख से एवं करीब ३० बहिनों ने व्याख्यात्री महासती श्री निःशल्यावती जी म.सा. की सेवा में संवर-साधना से चातुर्मासिक चतुर्दशी का शुभारंभ किया, वह क्रम अनवरत रूप से चल रहा है।

आचार्यप्रवर प्रभृति संत-सतीवृन्द की सेवा-भक्ति में सक्रिय युवकों का धर्म के प्रति रुझान प्रेरणादायी है। चातुर्मास-व्यवस्था को सुचारु बनाने हेतु समय का भोग देकर सेवा में सन्नद्ध युवकों की भागीदारी प्रमोदजन्य कही जा सकती है। युवकों ने संवर-साधना हेतु भी चार माह का कार्यक्रम सुनिश्चित कर लिया है। सामायिक- स्वाध्याय, दया-संवर, उपवास-पौषध, आयंबिल-एकासन के साथ अन्य व्रत-प्रत्याख्यान अंगीकार करने में मुम्बई महानगर के श्रावक-श्राविकाओं की सक्रियता अनुमोदनीय है।

चातुर्मासिक चतुर्दशी से प्रार्थना, प्रवचन, शास्त्रवाचन, प्रश्नोत्तर कार्यक्रम एवं प्रतिक्रमण जैसे दैनिक कार्यक्रमों के अलावा ज्ञानार्जन में सामायिक, प्रतिक्रमण, २५ बोल सीखने की सबमें अच्छी भावना है। **अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड की परीक्षा में चार गुने से ज्यादा परीक्षार्थियों का बढ़ना ज्ञानाभ्यास के प्रति उत्साह का अनुपम उदाहरण कहा जा सकता है।**

संघ सेवा, संत सेवा, स्वधर्मि-वात्सल्य सेवा में संघ संरक्षक श्री मोफतराज जी मुणोत, संघ के पूर्व अध्यक्ष श्री कैलाशचन्द जी हीरावत, रत्नसंघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री सुमेरसिंह जी बोथरा, मुम्बई संघ के अध्यक्ष श्री पारसचन्द जी हीरावत, कोषाध्यक्ष श्री नरेन्द्र जी हीरावत, संघ मंत्री श्री दिलखुशराज जी जैन, चातुर्मास-संयोजक एवं क्षेत्रीय प्रधान श्री रतनराज जी भण्डारी, सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के अध्यक्ष श्री पी.एस.सुराना, मण्डल मंत्री श्री प्रेमचन्द जी जैन, श्री जैन रत्न युवक परिषद् के अध्यक्ष श्री अजय जी हीरावत, मंत्री श्री नरेन्द्र जी डागा, श्राविका मण्डल अध्यक्ष श्रीमती सुजाता जी हीरावत, मंत्री श्रीमती हेमलता जी सांखला सहित मुम्बई महानगर के संघ-सेवियों की सक्रियतापूर्वक भागीदारी सराहनीय है।

तत्त्व चिन्तक श्री प्रमोदमुनि जी म.सा. के प्रेरक एवं प्रभावी प्रवचनामृत का पान कर मुम्बईवासी आचार्यप्रवर के इस चातुर्मास को चिरस्मरणीय बनाने हेतु अभी से सजग हैं। संघ व संघ की सहयोगी संस्थाओं की वार्षिक साधारण सभा एवं आचार्यश्री हस्ती स्मृति सम्मान सहित गुणी अभिनन्दन का कार्यक्रम सुनिश्चित कर लिया गया है।

स्वाध्यायियों एवं बालक-बालिकाओं के शिविर-विषयक चिन्तन भी चल रहा है। श्रावण मास में बहिनों में एवं भाइयों में पचरंगी की भूमिका बन चुकी है। प्रवचन में मुम्बई महानगर की अच्छी उपस्थिति से जिनवाणी श्रवण के प्रति जन-भावना का सहज अंकन होता है। शनिवार-रविवार जैसे अवकाश के दिनों में दूर-दूर के श्रद्धालु प्रवचन सभा में खिंचे चले आते हैं। प्रवचन सभा का संचालन युवारत्न बन्धु श्री नरेन्द्र जी डागा बहुत प्रभावशाली ढंग से करते हुए युवकों में निरन्तर जोश भर रहे हैं। प्रवचन का नियत-निर्धारित समय पर शुभारंभ और समापन के कारण प्रवचन की उपस्थिति उत्तरोत्तर वृद्धिंगत होना शुभ-संकेत है। समीपवर्ती-सुदूरवर्ती श्री संघों का एवं श्रद्धालुओं का गुरु चरण सेवा में आना, चातुर्मास में स्वयं का चौका करके धर्मसाधना में रत रहना एवं कल्पतरु गार्डन में आवास-निवास, भोजन आदि सभी व्यवस्थाओं की एक स्थान पर उपलब्धता से धर्म-साधना के प्रति लगाव उत्तरोत्तर वृद्धिंगत हो रहा है।

उपाध्यायप्रवर का गढ़सिवाना में चातुर्मासार्थ मंगलप्रवेश

परमश्रद्धेय उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्रजी म.सा., मधुरव्याख्यानी श्री गौतममुनि जी म.सा., श्रद्धेय श्री यशवन्तमुनि जी म.सा., श्रद्धेय श्रीलोकचन्द्र मुनि जी म.सा. ठाणा ४ ने आषाढ़ शुक्ला दशमी, शनिवार, दिनांक १२ जुलाई, २००८ को सिवाना के सुमतिनाथजी के मंदिर परिसर से प्रातः करीब ८.३० बजे विहार किया एवं सिवाना के प्रमुख बाजारों से होते हुए महावीर मार्ग स्थित स्थानक पधारे। विहार का विहंगम दृश्य, श्रद्धालुओं के जयघोषों से, बहिनों के मंगलगीतों से एवं जैन-जैनेतर जन समुदाय की विहार में भागीदारी से देखने योग्य था।

गढ़ सिवाना, सिवांची पट्टी एवं समीपवर्ती ग्राम नगरों के श्री संघों व श्रद्धालुओं का उत्साह अनुकरणीय था। जोधपुर, बालोतरा, पाली, पीपाड़, भोपालगढ़, पचपदरा, कनाना,समदड़ी, जेठन्तरी, धुन्दाड़ा आदि-ग्राम-नगरों के भक्तों ने विहार पूर्व सिवाना पहुँचकर उपाध्याय प्रवर आदि संतों के दर्शन-वन्दन का लाभ लिया एवं विहार यात्रा में सम्मिलित हो शासन की प्रभावना की।

सिवाना चातुर्मासार्थ ८ जुलाई को पधारी व्याख्यात्री महासती श्री सुमतिप्रभा जी म.सा., महासती श्री विवेकप्रभा जी म.सा., महासती श्री जागृति प्रभा जी म.सा. आदि ठाणा ३ भी हुण्डिया जैन स्थानक से महावीर मार्ग स्थित स्थानक पधारे।

उपाध्याय प्रवर आदि संत-सतीवृन्द के विराजने पर श्रावक-श्राविकाओं ने भी वन्दन-नमन कर अपना स्थान ग्रहण किया। "आकाश में विकास करके विराजें" के

आह्वान पर सबको स्थान सुलभ करवाया गया। कतिपय बहिनों ने ऊपर बॉलकोनी में जाकर मंगल-प्रवेश पर संत-सतीवृन्द एवं वक्ताओं के विचार श्रवण किए।

उपाध्याय प्रवर के संकेत से **महासती श्री विवेकप्रभा जी म.सा.** ने उपाध्याय प्रवर आदि संत-मुनिराजों के चातुर्मासार्थ मंगल प्रवेश पर स्वागत-अभिनन्दन रूप गीत प्रस्तुत कर अपना उल्लास प्रदर्शित किया। यहाँ चारों तीर्थ विराजमान हैं। संत सतीवृन्द चार माह के लिए चातुर्मासार्थ सिवाना पधारे हैं यह समागम सबके आत्म-कल्याण में सहायक होगा इस मंगल भावना से महासतीवर्या ने सिवाना शहर के भाग्य की सराहना की। गढ़ सिवाना में रहे एक-एक अक्षर का हार्द बताते हुए महासती जी ने कहा- 'ग' से गमन मिटाना है। 'ढ़' से ढ़ंढण मुनि की तरह साधना करनी है। 'सि' से सिद्धों के स्वरूप को पाना है। 'वा' से वासना से मुक्ति करनी है। 'ना' से नास्तिकता से आस्तिकता में आना है। महासती जी ने नगर में संतों का आना सौभाग्य बताया। महासती जी ने चार संत तीन महासतियों के गुणनफल बारह के परिप्रेक्ष्य में श्रावक-श्राविकाओं से बारह व्रत अंगीकार करने की प्रेरणा करते हुए अपनी बात को विराम दिया।

श्रद्धेय श्री यशवन्त मुनि जी म.सा. ने अपने हृदयोद्गार व्यक्त करते हुए फरमाया कि गुरु ही आध्यात्मिक मार्ग में उन्नति प्रदान करने वाले उपकारी होते हैं। गुरु के दर्शन पाकर भव्यजनों का हृदय पुलकित हो जाता है। मुनि श्री ने कई उदाहरण प्रस्तुत करते हुए कहा कि किसी का बेटा खो जाने के लम्बे समय बाद मिले तो घर वालों की प्रसन्नता का कोई हिसाब नहीं। इसी तरह गुरु के दर्शन पाकर भव्यजनों को हर्ष होता है। किसान ने बीज बोया, कई दिनों तक वर्षा नहीं हुई, बाद में वर्षा होने पर जैसे किसान का रोम-रोम पुलकित होता है उसी तरह गुरु के दर्शन से मन प्रसन्न होता है। एक व्यक्ति बीमार हो गया। वह किसी अनुभवी वैद्य से दवा लेकर तन्दुरुस्त हो गया तो उसकी खुशी का कोई पार नहीं। किसी ने धनार्जन किया और वह धन खो गया। खोया धन प्राप्त हो जाय तो उसे अपार हर्ष होता है ठीक वैसे ही गुरु के दर्शन से भव्यजनों को अपार हर्ष होता है। कहा भी है -

आवत साधु ना हरकिया, जावत दिया ना रोय।
तुलसी ऐसे गरीब की , कदई न मुक्ति होय।।

संत दर्शन पाकर हमारा हृदय प्रसन्नता प्राप्त करता है तो समझना चाहिये कि हम भवी हैं। मुनिश्री ने गुरु का जीवन परोपकार से युक्त बताते हुए कहा कि नदियाँ कल-कल करके बहती हैं, वे स्वयं जल नहीं पीती, परोपकार के लिए वे बहती हैं। वृक्ष सर्दी

में, गर्मी में कोमल मृदु फल देता है। वृक्ष स्वयं फल नहीं खाता, परोपकार के लिए फल देता है। इसी तरह गुरु भगवन्त भी निरन्तर विचरणशील रहते हैं और भक्तों को ज्ञान-दान करते रहते हैं। गुरु का उपकार माता-पिता से ज्यादा है। माता-पिता जन्म देते हैं, गुरु जीवन देते हैं। जन्म होता है मर जाने के लिए, जीवन होता है कुछ कर गुजरने के लिए। गुरु संसार-सागर से तिरने का मार्ग बताते हैं। आप पुण्यशाली हैं, आपको उपाध्यायप्रवर के चातुर्मास का लाभ मिला है।

मधुरव्याख्यानी श्री गौतम मुनि म.सा. ने फरमाया कि आज इस पावन वेला में पूज्य उपाध्याय भगवन्त के साथ हम संतों का मंगलमय पदार्पण हो गया है। पूज्य उपाध्याय भगवन्त कई बार फरमाते हैं कि यह चातुर्मास सिवाना का नहीं, सिवांची पट्टी का है। मुनिश्री ने बताया कि ब्यावर में तिलपट्टी का, अनाज पीसने में घट्टी का महत्त्व है वैसे ही धार्मिक क्षेत्र में सिवांची पट्टी का महत्त्व है। हम संतों का जब कभी भी इस क्षेत्र में विचरण हुआ तो हमने यहाँ-भक्ति देखी, धर्म के प्रति लगाव देखकर मन प्रसन्नचित्त हुआ। त्यागी संतों के सान्निध्य में तो त्याग-वैराग्य का ज्वार उमड़ता ही है। आप उपाध्यायश्री की सरलता, सौम्यता, सहजता, निश्छलता से परिचित हैं। जयपुर आदि महानगरों के लोग सहज भाव से उपाध्याय भगवन्त को चौथे आरे की बानगी के रूप में बताते हैं।

मुनिश्री ने कहा भीतर आए, हम तर गये। तुम भीतर आओ, तुम भी तर जाओगे। बाहर रहने वाला आनन्द से महरूम रह जाता है। जो भी बाहर हैं, उन्होंने अपनी समस्याएँ बढ़ाई हैं। समस्याओं से निजात पाना है तो भीतर आना होगा। उपाध्याय प्रवर का चातुर्मास प्रवेश हो गया। यह चातुर्मास यादगार बने, इसके लिए आपको ज्ञानाराधन-तपाराधन-धर्माराधन करना है। आप त्याग-तप से, सेवा से, साधना से चातुर्मास को अमिट बना सकते हैं। किसी ने चातुर्मास में प्रतिक्रमण कण्ठस्थ किया तो वह जब-जब भी प्रसंग आयेगा कहेगा मैंने अमुक संतों से प्रतिक्रमण सीखा है उसके लिए तो वह चातुर्मास यादगार रहता है।

उपाध्याय भगवन्त का कोसाना चातुर्मास था। नासिक से एक बहन आई। बोली-बाबजी! आप अपना ओटोग्राफ दे दीजिये। उपाध्याय भगवन्त ने कहा- बहन! हम किसी की डायरी में कुछ नहीं लिखते। हाँ, तुम्हे याददस्ती चाहिये तो कोई-न-कोई नियम अंगीकार करलो तुम्हें जीवन भर कोसाना आने की याद रहेगी। सिवाना के भाई रिखबचन्द जी जिन्नाणी की प्रबल भावाना थी। उन्होंने उपाध्याय भगवन्त की चर्या देखकर चातुर्मास करवाने की ठानी। जिन्नाणी जी की भावना साकार नहीं हुई। उनकी

भावना देखकर यहाँ के लोगों में ऊर्जा का संचार हुआ। विनति से उपाध्याय भगवन्त का मन पिघल गया। उपाध्याय भगवन्त यहाँ पधार गये। उपाध्याय भगवन्त पावर हाउस के रूप में हमारे सामने हैं, आप अपनी बेटरी चार्ज करना चाहें तो कर लें। आपके निमित्त से हम ज्ञान-दर्शन-चारित्र में अभिवृद्धि करें, दोनों एक-दूसरे के पूरक बनकर संघ की जाहोजलाली करें, यही मंगल मनीषा है।

सुश्रावक **श्री पारसमल जी बागरेचा** ने सिवाना को ऐतिहासिक नगरी बताते हुए कहा कि यहाँ कई प्रमुख संतों के चातुर्मास हुए हैं। उस कड़ी में इस वर्ष उपाध्यायप्रवर का चातुर्मास पाकर हम अपने-आपको भाग्यशाली समझते हैं। हमारे संघ ने चार साल से उपाध्यायप्रवर के चातुर्मास का सपना संजो रखा था। हमारी आज भावना फलीभूत हुई है। सिवांची पट्टी आचार्य भगवन्त पूज्य श्री हस्तीमल जी महाराज के उपकारों से कभी उऋण नहीं हो सकती। हम आपश्री के चातुर्मास में जिनवाणी-श्रवण के साथ व्रत-प्रत्याख्यान अंगीकार कर चातुर्मास को दीप्तिमान बनाने का पूरा प्रयास करेंगे। हम यह जानते हैं कि स्थानकवासी परम्परा में संतों के अवलम्बन से ही हमारी संस्कृति सुरक्षित है। संत-समागम से ही हमारे संस्कार बने हुए हैं और हमारी धर्मभावना भी संत-सान्निध्य पर टिकी हुई है। श्री पारसमलजी बागरेचा ने सिवाना संघ की ओर से पधारे श्री संघों का हार्दिक स्वागत-अभिनन्दन किया। बालोतरा संघ के साथ पाली-जोधपुर-पीपाड़ जैसे श्री संघों की भूमिका पर प्रमोद व्यक्त किया। उपाध्यायप्रवर के साथ हमें महासती मण्डल का चातुर्मास भी प्राप्त हुआ है, इससे बहिनों में धर्म-साधना के प्रति उत्साह और सहयोग रहेगा।

सुश्रावक **श्री उत्सवलालजी बागरेचा** ने उपाध्यायप्रवर प्रभृति संत-सतीवृन्द के चातुर्मास के सुयोग पर प्रमोद व्यक्त करते हुए कहा-

कैसे-कैसे मुनियों का योग मिला है,
अच्छी पुण्यवानी से ये फूल खिला है,
यांरी भक्ति में जीवड़ा तूं आवे क्यूं नहीं रे,
बहती ज्ञान की गंगा में झोला खावे क्यूं नहीं रे॥

बालोतरा संघ-मंत्री **श्री ओमप्रकाश जी बांठिया** ने अपने विचार रखते कहा कि सिवाना सिवांची पट्टी का हृदय स्थल है। यह चातुर्मास सिवांची पट्टी का है अतः हम भक्ति भावना से समय-समय पर सेवा में उपस्थित होंगे किन्तु चातुर्मास में आगत तो सिवाना के ही मेहमान होंगे। उनकी सेवा में सिवाना श्री संघ कटिबद्ध रहेगा, यह विश्वास है।

बालोतरा के कविहृदय एवं युवा साथी **श्री कमलेशजी चौपड़ा** ने गीत के माध्यम से कहा-

ये संत कोई साधारण नहीं, महापुरुष गुरु मान हैं।
सरलता, साधना, विनय, विवेक जैसे गुण विद्यमान हैं
दिल से सुनलें वाणी आपकी तो समझ लो जीवन का कल्याण है।

कविहृदय ने गीत "**बधावा गावे, घर-घर सिवाना में महरकर दी भगवान् पधारियां सिवाना में**" भावपूर्ण गीत प्रस्तुत कर भक्ति-भावना की समा बांध दी।

सुश्री नैना गोलेच्छा ने स्वागत-गीत की सुन्दर प्रस्तुति दी। **पाली संघमंत्री श्री ताराचन्द जी सिंघवी** ने कहा कि उपाध्यायप्रवर दयालु हैं इसलिए पाली को अक्षय तृतीया एवं शेखे काल विराजकर पाली का मान रखा है। सिंघवी साहब ने चातुर्मास पश्चात् पाली पधारने की विनति प्रस्तुत की। पीपाड़ के श्री सुमतिचन्द जी मेहता, श्री नवरतनमल जी डोसी-जोधपुर, श्री महेन्द्र जी सेठिया-जोधपुर,श्री चन्दनमल जी चौपड़ा-जोधपुर ने भी अपने विचार प्रस्तुत किए। विरक्त बंधु श्री दुलीचन्द जी बोहरा ने भजन के माध्यम से गुरु गुणगान किए। श्री राजेश जी चौपड़ा-पाली ने सुन्दर गीत की प्रस्तुति प्रदान की।

परम श्रद्धेय उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा. ने अपने उद्बोधन में फरमाया कि आपमें से अधिकांश वक्ताओं ने चातुर्मास प्रवेश पर अपनी प्रसन्नता व्यक्त की, लेकिन यह कोई पहला प्रवेश नहीं है। हर वर्ष इस तरह चातुर्मासार्थ प्रवेश होता है। चातुर्मासार्थ मंगल प्रवेश में भक्तों द्वारा उच्चारित मंगल के परिप्रेक्ष्य में उपाध्यायप्रवर ने "**धम्मो मंगलमुक्किट्ठं अहिंसा संजमो तवो।**" आज जितने भी वक्ता बोले हैं उनके कथन का आशय यही है कि हम अहिंसा, संयम, तप रूप धर्म में प्रवेश करें। आप चातुर्मास में धर्म को जीवन में उतार लें तो हमारा चातुर्मास करना और आपका चातुर्मास करवाना सार्थक होगा। यह चातुर्मास दशा और दिशा बदलने का निमित्त बनें। आप पाप घटाने का चिंतन करें। भाई पारसजी ने बहुत जानकारी दे दी है। नींव लगाने वाले भाई रिखबचन्द जी जिन्नाणी थे, इमारत बनाने वाले ये खुद हैं। आपने चातुर्मास करवाया, हम चातुर्मास करने आ गये। अब आप सामायिक-स्वाध्याय, जप-तप, और साधना-आराधना करके चातुर्मास सार्थक करें। जो करेंगे उनको लाभ होगा। महावीर ने किया तो महावीर मुक्त हो गये, सुधर्मा ने किया तो उन्होंने सिद्धि प्राप्त कर ली, जम्बू ने किया तो वे अंतिम केवली हो गये। आप करेंगे तो आपको लाभ होगा, मैं

करूँगा तो मुझको लाभ होगा। दिल्ली चातुर्मासार्थ जाते समय बीच के किसी गांव में दिल्ली संघ के अध्यक्ष-मंत्री द्वारा पृच्छा की गई कि चातुर्मास में क्या-क्या कार्यक्रम रखे जाने हैं, किन-किन विशिष्ट लोगों को आमंत्रित करना है। मैंने उनको जबाब दिया-भाई हमें न तो किन्हीं नेताओं को आमन्त्रित करना है और न ही कोई जलसा आदि रखना है। हम धमाल से नहीं, धर्म-ध्यान से राजी हैं। धमाल घाटे का सौदा है। हम अपनी और आपकी ज्ञान-दर्शन-चारित्र में अभिवृद्धि देखना चाहते हैं। आप श्रावक हैं इसलिए आप हमारे ज्ञान-दर्शन-चारित्र की वृद्धि में सहायक बनें, हम भी आपको ज्ञानाराधन-धर्माराधन-तपाराधन में उचित सहयोग करेंगे। आप चातुर्मास के सुयोग का धर्म-साधना में उपयोग करें, यहीं मंगल मनीषा है। आज हमारे सुनने का दिन था, हम रोज प्रवचन के माध्यम से आपको सुनायेंगे। आप सुनकर ही न रहें, जीवन में उतारने का लक्ष्य रखें।

उपाध्यायप्रवर के उद्बोधन के पश्चात् श्रावक-श्राविकाओं ने उपवास-एकासन-आयंबिल आदि के प्रत्याख्यान किए। एक बहिन ने उपाध्यायप्रवर के मुखारविन्द से **ग्यारह की तपश्चर्या** के प्रत्याख्यान अंगीकार किए। उपाध्यायप्रवर ने भोजन में जूठन नहीं डालने, भोजन पूर्व सात नमस्कार मंत्र जपने का सामूहिक नियम करवाया एवं मांगलिक प्रदान की।

महासतियाँ जी म.सा. का चातुर्मासिक मंगल-प्रवेश

पावटा, जोधपुर- साध्वीप्रमुखा शासनप्रभाविका महासती श्री मैनासुन्दरी जी म.सा. आदि ठाणा ६ का चातुर्मासार्थ मंगल-प्रवेश १२ जुलाई को पावटा स्थित सामायिक-स्वाध्याय भवन में सुख शांति पूर्वक हुआ। चातुर्मास प्रवेश से ही पावटा में सामायिक-स्वाध्याय, दया-संवर, त्याग-तप की प्रभावना चल रही है। समय-समय पर जोधपुर एवं बाहर से पधारे हुए संघ पदाधिकारी भी महासती मण्डल के दर्शन-वन्दन एवं प्रवचन श्रवण का लाभ प्राप्त कर रहे हैं।

वैशाली नगर, अजमेर- सेवाभावी महासती श्री संतोषकंवर जी म.सा., महासती श्री मनोहरकंवर जी म.सा. आदि ठाणा ४ का चातुर्मासार्थ मंगल-प्रवेश १२ जुलाई ०८ को अपराह्न ४ बजे सोत्साह सम्पन्न हुआ। चातुर्मास के प्रारम्भ से ही प्रभावोत्पादक व्याख्यान के साथ तप, त्याग, प्रार्थना, सामायिक, स्वाध्याय का निरन्तर क्रम जोर पकड़ता जा रहा है। प्रतिदिन दोपहर में २ से ४ बजे तक भगवती सूत्र का वाचन एवं ज्ञान-ध्यान सीखने का कार्यक्रम सुचारू रूप से चल रहा है। साध्वी श्री की प्रेरणा से चार-पांच दिनों में ही २ तेले, २ मौन तेले एवं अनगिनत एकाशन तथा

आयम्बिल हुए हैं। प्रवचन में प्रबुद्ध वर्ग अच्छी संख्या में उपस्थित हो रहा है।

-डॉ. पी. एम. जैन, संयुक्त सचिव, श्री जैन श्वे. संस्था

अमरावती- व्याख्यात्री महासती श्री तेजकंवर जी म.सा. आदि ठाणा १२ का चातुर्मासार्थ मंगल-प्रवेश ०८ जुलाई ०८ को सानन्दपूर्वक हुआ। अमरावती संघ महासतियाँ जी म.सा. के चातुर्मास को पाकर हर्षोल्लास पूर्वक सभी कार्यक्रमों में भाग ले रहा है।

मानसरोवर, जयपुर- तत्त्वचिन्तिका महासती श्री रतनकंवर जी म.सा., महासती श्री दर्शनप्रभा जी म.सा. आदि ठाणा ४ का चातुर्मासार्थ मंगलप्रवेश ८ जुलाई को भगवान् महावीर पोरवाल जैन साधना मन्दिर, न्यू सांगानेर रोड से महावीर भवन, किरणपथ पर हुआ। मानसरोवर में पहला चातुर्मास होने के कारण उत्साह, उमंग एवं हर्षोल्लास का वातावरण बना हुआ है। मंगलप्रवेश के अवसर पर जयपुर शहर, अजमेर, महावीर नगर, सवाईमाधोपुर, चौथ का बरवाड़ा आदि के श्रावक-श्राविका उपस्थित थे। धर्मध्यान का प्रारम्भ से ही ठाट लगा हुआ है। अठाई, पचोले, तेले, बेले, उपवास के प्रत्याख्यान हुए हैं तथा महिलाओं का धार्मिक शिक्षण-शिविर आयोजित हो चुका है।

बेलगांव- विदुषी महासती श्री सुशीलाकंवर जी म.सा., व्याख्यात्री महासती श्री सरलेशप्रभा जी म.सा. आदि ठाणा ५ का चातुर्मासार्थ मंगलप्रवेश ८ जुलाई को हुआ। भाई-बहनों ने संवर का लाभ लेते हुए प्रवेश में भागीदारी निभाई। प्रवेश के समय हुबली, इचलकरंजी आदि क्षेत्रों से पधारे हुए बंधु भी संवर में थे। महासती श्री सुशीलाकंवर जी म.सा. के जब हृदय की जांच की गई तो ज्ञात हुआ कि उनके एक नई नली प्रारम्भ हो गई है। यह जानकर डॉक्टरों को एवं सबको बहुत खुशी हुई। यहाँ सूरजबाई सैन ने १६ दिवसीय तप किया है तथा अन्य अनेक तपस्याएँ चल रही हैं। पीपाड़ निवासी महेन्द्र भाई लोहरा के ४ अगस्त को १९ की तपस्या थी, आगे मासखमण की भावना है। इमरान भाई ने माँसाहार के त्याग किए हैं।

संशोधित सम्पर्क सूत्र- श्री जबरचन्द जी जैन, मो. ०९४४८११८८७७, श्री राजेन्द्र जी कटारिया, मो. ०९४४८१२६३५७

हिण्डौन सिटी- विदुषी महासती श्री सौभाग्यवती जी म.सा. आदि ठाणा ४ का चातुर्मासिक मंगल प्रवेश १२ जुलाई २००८ को मध्याह्न में सामायिक-स्वाध्याय भवन, हिण्डौन सिटी में सुख-शांति पूर्वक हुआ। पल्लीवाल क्षेत्र के आस-पास के सभी गाँवों के लोग इस चातुर्मास का यथासंभव लाभ उठा रहे है।

मेड़ता सिटी- **व्याख्यात्री महासती श्री सोहनकंवर जी म.सा. आदि ठाणा ५** ने स्वाध्याय भवन, मेड़ता सिटी में १२ जुलाई २००८ को चातुर्मासार्थ मंगल प्रवेश किया। प्रवेश पश्चात् से महासती मण्डल क्षेत्रवासियों को सामायिक-स्वाध्याय एवं तप-त्याग की निरन्तर प्रेरणा कर रही है।

शास्त्रीनगर, जोधपुर- **महासती श्री इन्दुबाला जी म.सा. आदि ठाणा ४** का चातुर्मास हेतु मंगल-प्रवेश १२ जुलाई २००८ को डी-१८, शास्त्रीनगर में सानन्द सम्पन्न हुआ। महासती श्री मुदितप्रभा जी म.सा. के ओजस्वी एवं प्रेरक प्रवचनों से समूचा शास्त्रीनगर प्रभावित हो रहा है। चौपासनी हाउसिंग बोर्ड के श्रद्धालु भी नियमित प्रवचन श्रवण कर रहे हैं।

पाली- **महासती श्री विमलावती जी म.सा. आदि ठाणा ४** का चातुर्मासिक मंगल प्रवेश ९ जुलाई २००८ को सामायिक-स्वाध्याय भवन, पाली में सुख-शांति पूर्वक हुआ।

शिमोगा- **व्याख्यात्री महासती श्री ज्ञानलता जी म.सा., महासती श्री भाग्यप्रभा जी म.सा. आदि ठाणा ३** का चातुर्मासार्थ मंगल प्रवेश जैन स्थानक, शिमोगा में १२ जुलाई २००८ को सुख-शांति पूर्वक हुआ। महासती मण्डल के सान्निध्य में धर्माराधन का ठाट लगा हुआ है। यहाँ के सम्पर्क सूत्र के पतों में एवं फोन नं. में संशोधन है। वे इस प्रकार हैं-

१. श्री केवलचन्द जी मेहता, गौतम टैक्सटाइल्स, पहला क्रॉस, गांधी बाजार, शिमोगा(कर्ना.),फोन-०८१८२-६५३१४५, २२११२३, मो. ०९४४८६५३१७७

२. श्री हरकचन्द एम. विनायकिया मो. ०९४४८२००९८०

बागलकोट- **व्याख्यात्री महासती श्री चारित्रलता जी म.सा. आदि ठाणा ४** का बागलकोट में मंगल-प्रवेश १६ जुलाई २००८ को सुख-शांति पूर्वक सम्पन्न हुआ।

कांदिवली, मुम्बई- **व्याख्यात्री महासती श्री निःशल्यवती जी म.सा. आदि ठाणा ४** का चातुर्मासार्थ मंगल-प्रवेश १२ जुलाई २००८ को कांदिवली (ईस्ट) में सुख शांति पूर्वक हुआ। महासती मण्डल आचार्यप्रवर के सान्निध्य का पुरजोर लाभ उठा रही है।

बीजापुर- **महासती श्री इन्दिराप्रभा जी म.सा. आदि ठाणा ५** का जैन स्थानक, बीजापुर में चातुर्मासार्थ मंगल प्रवेश १२ जुलाई २००८ को सानन्द सम्पन्न हुआ। बीजापुर के एस.टी.डी. कोड ०८३५२ है।

गढ़ सिवाना- **व्याख्यात्री महासती श्री सुमतिप्रभा जी म.सा. आदि ठाणा ३** का हुण्डिया जैन स्थानक, गढ़ सिवाना में चातुर्मासिक मंगल प्रवेश ८ जुलाई २००८ को सुख-शांति पूर्वक हुआ। महासती मण्डल उपाध्यायप्रवर के सान्निध्य को पाकर धर्म-ध्यान की प्रभावी प्रभावना कर रही है।

निबन्ध प्रतियोगिता परिणाम घोषित

आचार्य भगवन्त १००८ श्री हीराचन्द्र जी म.सा. के दीक्षा-दिवस पर अ.भा. श्री जैन रत्न युवक परिषद् द्वारा आयोजित निबन्ध प्रतियोगिता 'संयम ही जीवन है' विषय का परीक्षा परिणाम इस प्रकार रहा- **प्रथम पुरस्कार**- अनिल कुमार जैन-कोटा, **द्वितीय पुरस्कार**- आर. के. बांठिया-पाली, तृतीय पुरस्कार- राजु चोरडिया-भोपालगढ, **सान्त्वना पुरस्कार**- १. शकुन्तला हिंगड़-पाली, २. रेणु हिंगड़-पाली, ३. नीलम बाफना-भोपालगढ़, ४. सरला बाफना-भोपालगढ़, ५. वन्दना पुनमिया-पाली। *-राकेश जैन, सुमेरगंजमण्डी, कार्यक्रम प्रभारी*

भोपालगढ़ में आवासीय धार्मिक शिक्षण शिविर

श्री जैन रत्न विद्यालय संस्थान भोपालगढ़ द्वारा दिनांक २० मई से ०९ जून २००८ तक आवासीय धार्मिक शिक्षण शिविर आयोजित किया गया था। शिविर में विभिन्न स्थानों से पधारे १५८ शिविरार्थियों ने भाग लिया। व्यवस्थित दिनचर्या के साथ कुल ८ कक्षाओं के माध्यम से शिविरार्थियों को अध्ययन करवाया गया। पाठ्यक्रम के अन्तर्गत महिलाओं के लिए पच्चीस बोल सार्थ, लघुदंडक आदि का अध्ययन कराया गया। छात्रों के लिए प्रतिक्रमण को शुद्ध करने के लिए एक-एक छात्र से प्रत्येक पाठ को सुनने तथा अशुद्धियों को रेखांकित कर उन्हें दूर करने पर विशेष बल दिया गया। साथ ही जैन इतिहास, दशवैकालिक सूत्र एवं अन्य रचनाओं का भी अध्ययन कराया गया। शिविर के दौरान व्याख्यात्री महासती श्री सोहनकंवर जी म.सा. आदि ठाणा ११ का सान्निध्य प्राप्त हुआ। महासती श्री शांतिप्रभा जी, रुचिता जी, समर्पिता जी, विवेकप्रभा जी, सिद्धि प्रभा जी एवं ऋद्धि प्रभा जी म.सा. का भी अध्ययन में सहयोग प्राप्त हुआ। शिविर में विभिन्न स्थानों से पधारे हुए विद्वान अध्यापकों द्वारा अध्यापन करवाया गया। शिविर में प्रातःकाल में प्राणायाम का अभ्यास करवाया गया। शिविरार्थियों में वक्तृत्व कला, त्वरित निर्णयन, सकारात्मक सोच को विकसित करने के लिए विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। बारह प्रहरीय पौषध से लेकर नवकारसी तक के प्रत्याख्यान के पाठ प्रत्येक शिविरार्थी को याद हो इसके लिए एक परिपत्र बनाकर प्रत्येक शिविरार्थी को दिया गया। 'आओ प्रत्याख्यान करें' डायरी को शिविरार्थियों

द्वारा नियमित भरा गया व जांचा गया। ७ जून को शिविरार्थियों की परीक्षा ली गयी। प्रत्येक कक्षा में वरीयता स्थान प्राप्त करने वालों को तथा प्रतिक्रमण की परीक्षा में ८० से १०० के बीच अंक लाने वाले ३५ शिविरार्थियों को सम्मानित किया गया। सभी शिविरार्थियों को प्रोत्साहन पुरस्कार भी विद्यालय संस्थान की ओर से प्रदान किया गया।

शिविर का समापन समारोह ९ जून २००८ को अ.भा. कॉन्फ्रेंस दिल्ली के मार्गदर्शक श्री नेमीचन्द जी चौपड़ा एवं मानव सेवा संघ के मंत्री श्री जवरीलाल जी कांकरिया के मुख्य आतिथ्य में सम्पन्न हुआ। शिविर का सौजन्य श्री पुनवानचन्द जी ओस्तवाल परिवार ने किया। श्री नेमीचन्द जी कर्णावट शिविर के संयोजक एवं श्री अजीतराज जी मेहता इस शिविर के व्यवस्थापक थे। शिविर में संस्थान के अध्यक्ष श्री प्रसन्नचन्द जी ओस्तवाल, मंत्री श्री सम्पतराज जी बोथरा, संघ अध्यक्ष श्री सिंभुलाल जी चोरडिया का भी सहयोग प्राप्त हुआ। मुख्य अतिथि श्री नेमीचन्द जी चौपड़ा ने संस्थान को ११,१११/- की राशि भेंट की।

चेन्नई में स्वाध्यायियों द्वारा चातुर्मास-धर्माराधना

श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, चेन्नई के साहुकार पेट स्थित स्वाध्याय भवन में इस वर्ष चातुर्मास के प्रारम्भ (१७ जुलाई २००८) से ही प्रार्थना, शास्त्रवाचन, स्वाध्याय-प्रशिक्षण, व्याख्यान, धार्मिक-शिक्षण, तत्त्वचर्चा, प्रतिक्रमण आदि के कार्यक्रम चल रहे हैं। कार्यक्रम का शुभारम्भ श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर के वरिष्ठ स्वाध्यायी श्री प्रकाश जी सालेचा एवं श्रीमती रतनबाई जी चोरडिया के सान्निध्य से हुआ। ये यहाँ पर दो सप्ताह रहे। यहाँ प्रतिदिन १२५ से १५० की उपस्थिति रहती है। नये स्वाध्यायी तैयार हो रहे हैं, तपस्याएँ भी चल रही हैं।

-जवाहरलाल कर्णावट, मंत्री

कर्मवाद पर तीसरी बार प्रतियोगिता

प्रबुद्ध-चेता प्रतियोगियों के सुझाव, मनीषियों की प्रेरक भावना एवं पूज्य साधु-साध्वियों की सार्थक प्रेरणा से साध्वी-युगल निधि-कृपा श्री द्वारा प्रस्तुत **'कर्म जिज्ञासा'** पर द्विविधा शैली में खुली किताब प्रतियोगिता का शुभारम्भ १ नवम्बर २००८ को होने जा रहा है। द्विविधा शैली अर्थात् दो भागों में परीक्षा होगी। सभी प्रतियोगियों को दोनों भागों की खुली किताब परीक्षा देने के लिए रजिस्ट्रेशन फार्म अवश्य भरना होगा। इच्छुक प्रतियोगी मैत्री चेरिटेबल फाउण्डेशन दिल्ली से अपना रजिस्ट्रेशन फार्म २५ रुपए भेज कर प्राप्त करें। 'कर्म जिज्ञासा' का मूल्य १००/- एवं डाक द्वारा १२५/- है। (कर्म जिज्ञासा के साथ पार्ट १ का प्रश्नपत्र भी भेजा जाएगा)।

आयोजक-मैत्री चेरिटेबल फाउण्डेशन, बी-११७, ओखला इंडस्ट्रियल एरिया, फेस-१, दिल्ली-११००२०, फोन नं. ०९३१३०९३४४४ (मृदु जैन), ०९८१०१६०७८० (प्रदीप जैन), ०९८११०२२२५३ (रचना जैन)

कर्म संहिता द्वितीय ज्ञान प्रतियोगिता का परिणाम

साध्वी-युगल निधि कृपा श्री द्वारा प्रस्तुत अखिल भारतीय कर्म संहिता द्वितीय ज्ञान प्रतियोगिता खुली किताब परीक्षा का परिणाम १५ अगस्त २००८ से वेबसाइट www.sadhviyugal.com पर घोषित होने जा रहा है।

संक्षिप्त समाचार

चेन्नई- तमिलनाडु सम्भाग के लगभग ६० केन्द्रों पर अ.भा. श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर की २७ जुलाई २००८ को आयोजित परीक्षा की तैयारी के लिए २० जुलाई २००८ को बादलचन्द सायरचन्द चोरडिया जैन स्कूल में परीक्षा प्रशिक्षण शिविर आयोजित किया गया। यह आयोजन श्री जैन रत्न युवक परिषद्, चेन्नई द्वारा पूर्ण व्यवस्थित रीति से उत्साह के साथ सम्पादित किया गया। इस प्रकार का शिविर वर्ष में दो बार आयोजित होने वाली परीक्षा के पूर्व तैयारी हेतु रखा जाता है। शिविर के दौरान रत्नसंघ चेन्नई के अध्यक्ष श्री कैलाशचन्द जी दुग्गड़, शिक्षा-दीक्षा समिति के संयोजक श्री गौतमचन्द जी हुण्डीवाल, स्वाध्याय संघ चेन्नई शाखा के सचिव श्री सुधीर जी सुराणा एवं सुश्रावक श्री धर्मेश जी लोढ़ा ने शिविर का निरीक्षण कर शिविरार्थियों एवं कार्यकर्ताओं का उत्साहवर्द्धन किया। इस बार शिविर के प्रायोजक श्री अजित कुमार जी खिंवसरा (भोपालगढ़) साहुकार पेट रहे। - ***बी. अशोक लोढ़ा, शाखा सचिव***

दिल्ली- दिल्ली के प्रमुख जैनों का एक प्रतिनिधि मण्डल कांग्रेस अध्यक्ष श्रीमती सोनिया गाँधी से मिला तथा उन्हें दिल्ली सहित कांग्रेस शासित राज्यों में जैन समुदाय को धार्मिक अल्पसंख्यक समाज का दर्जा प्रदान किए जाने पर धन्यवाद दिया। जैन महासभा ने इस अवसर पर ज्ञापन देकर हरियाणा में भी जैन समुदाय को शीघ्र धार्मिक अल्पसंख्यक समाज का दर्जा प्रदान किए जाने की माँग की।

दिल्ली- मानवतावादी वैज्ञानिक डॉ. दौलतसिंह जी कोठारी के जन्म-दिवस पर उनकी स्मृति में दिल्ली विश्वविद्यालय में 'अहिंसा और विज्ञान : आज के संदर्भ में' विषय पर विचार सम्मेलन का आयोजन किया गया। समारोह में हरियाणा के राज्यपाल प्रो. अहमद रफी किदबई मुख्य अतिथि थे। दिल्ली की मुख्यमंत्री श्रीमती शीला दीक्षित, केन्द्रीय मंत्री श्री कपिल सिब्बल, दिल्ली विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति प्रो. के. डी.

गंगराडे, दिल्ली विश्वविद्यालय के भौतिक विज्ञान विभाग के प्रो. फिरोज अहमद ने डॉ. दौलतसिंह कोठारी के जीवन तथा विज्ञान, शिक्षा और गाँधीवादी मूल्यों को आगे बढ़ाने में उनके योगदान पर विस्तार से प्रकाश डाला। समारोह के संयोजक तथा जैन महासभा दिल्ली के महासचिव प्रो. रतन जैन ने डॉ. दौलतसिंह कोठारी की स्मृति में डाक टिकट प्रकाशित करने की माँग की। इस विचार-सम्मेलन में दिल्ली विश्वविद्यालय के लगभग ५० महाविद्यालयों के प्रधानाचार्यो, शिक्षकों, प्रमुख जैन नेताओं और डॉ. कोठारी के परिवारजनों ने भाग लिया।

जयपुर- सुबोध प्रबन्ध संस्थान के निदेशक प्रो. मानचन्द खंडेला को भारतीय विमानपत्तन प्राधिकरण द्वारा जयपुर अन्तरराष्ट्रीय हवाईअड्डा हेतु गठित सलाहकार समिति में सदस्य मनोनीत किया गया है।

बधाई/चुनाव

जोधपुर- श्री नवनीत मेहता सुपुत्र श्रीमती स्नेहलता जी एवं श्री धनपतमल जी मेहता

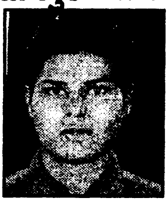

(डोसी) ने मई २००८ में आयोजित सी.ए. की परीक्षा उत्तीर्ण की, साथ ही साथ एल.एल.बी. की परीक्षा में भी अच्छे अंक प्राप्त किए। युवारत्न बन्धु ने प्रारम्भ से कॉलेज स्तर तक सभी परीक्षाओं में प्रथम श्रेणी प्राप्त की। धार्मिक क्षेत्र में शिविरों में भाग लेने वाले बन्धु ने वर्ष २००४ में मिस्टर जैन का खिताब प्राप्त किया। आप स्वाध्याय संघ की सचिव श्रीमती मोहनकौर जी जैन के भतीजे हैं।

अजमेर- जयपुर के प्रताप सभागार में २५ जून २००८ को मीसा बन्दियों के समारोह में स्वतंत्रता सेनानी श्री प्रेमसुख जी सुराणा का विधानसभा उपाध्यक्ष एवं सचेतक श्री महावीर जी जैन ने अभिनन्दन किया।

आवड़ी, चेन्नई- बिलाड़ा मूल के सेवाभावी सुश्रावक श्री जबरचन्द जी खिंवसरा को उनकी उल्लेखनीय सेवाओं के लिए इण्टरनेशनल ओपन यूनिवर्सिटी कोलम्बो (श्रीलंका) के प्रो. ई. महेश्वरन ने भव्य समारोह में डाक्टरेट की उपाधि से सम्मानित किया। इसके पूर्व श्री खिंवसरा साहब को ऑल इंडिया नेशनल यूनिटी कॉन्फ्रेंस नई दिल्ली द्वारा भी नेशनल एक्सीलेंस अवार्ड न्यायमूर्ति एम.एन. वेंकटचलैय्या (चेयरमेन, मानव अधिकार आयोग) द्वारा प्रदान किया गया। आप कई धार्मिक एवं सामाजिक संस्थाओं से सम्बन्धित हैं।

जोधपुर- सुश्री निशा मेहता सुपुत्री श्रीमती स्नेहलता एवं श्री रमेश जी मेहता (सुपौत्री श्रीमती कानकंवर-विजयमल जी मेहता) ने सीनियर सैकेण्डरी परीक्षा ९०.४ अंकों से उत्तीर्ण की तथा सी.पी.टी. की परीक्षा में जोधपुर की वरीयता सूची में दसवां स्थान प्राप्त किया है।

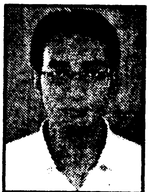

नवसारी- श्री ओमप्रकाश जी जैन (बिलोपा वाले), नवासारी के सुपुत्र श्री अंशुल जैन ने इलेक्ट्रोनिक्स इंजीनियरिंग विशेष योग्यता से पूर्ण की है तथा आलोक इण्डस्ट्रीज लिमिटेड, सेलवास में उनकी नियुक्ति हुई है। इसके साथ ही आप ही के दूसरे सुपुत्र श्री आशीष जैन ने भी मेकेनिकल इंजीनियरिंग अच्छे अंकों से पूर्ण कर करमतारा इंजीनियरिंग प्राइवेट लिमिटेड, तारापुर (महा.) में नियुक्ति प्राप्त कर पदभार ग्रहण किया है। दोनों होनहार विद्यार्थियों को हार्दिक बधाई।

गोटन- श्री रविन्द्र जैन सुपुत्र श्रीमती सुशीला एवं श्री पी.सी. जैन (सुपौत्र स्व. श्री नवरतनमल सा नाहर) ने प्रथम प्रयास में चार्टर्ड एकाउंटेन्ट की परीक्षा उत्तीर्ण की है। हार्दिक बधाई।

चेन्नई- श्री एस. एस. जैन संघ, मिंट स्ट्रीट साहुकार पेट, चेन्नई के चुनावों में

सर्वसम्मति से श्री ज्ञानचन्द जी नाहर-अध्यक्ष, श्री शांतिलाल जी तातेड़ व श्री विक्रमकुमार जी सामरा-उपाध्यक्ष, श्री मनोहरलाल जी कोठारी-मंत्री, श्री सुरेशचन्द जी आबड़-सहमंत्री एवं श्री सूरजमल जी कोठारी-कोषाध्यक्ष चुने गये। *-मनोहरलाल कोठारी*

श्रद्धाञ्जलि

जोधपुर- सुश्रावक एवं स्वतंत्रता सेनानी श्री लालचन्द जी जैन (सिंघवी) का ९० वर्ष

की वय में २२ जुलाई २००८ को स्वर्गगमन हो गया। वे आचार्यप्रवर पूज्य श्री हस्तीमल जी म.सा. के सान्निध्य में वर्षों रहे तथा स्वाध्याय एवं साहित्य-साधना को जीवन में स्थान दिया। जिनवाणी में आपके द्वारा अनूदित 'दीक्षा कुमारी का प्रवास' वर्षों प्रकाशित हुआ। 'भोग और योग' आदि आपकी अनेक पुस्तकें प्रकाशित हैं। देहावसान के दिन ही अन्त्येष्टि की गई, जिसमें जोधपुर के जिला कलक्टर एवं पुलिस अधीक्षक ने सरकार की ओर से पुष्पचक्र अर्पित किए।

जयपुर- प्रमुख समाजसेवी, स्वाधीनता सेनानी, सुश्रावक श्री पारसमल जी डागा का ८९ वर्ष की वय में १३ जुलाई २००८ को स्वर्गवास हो गया। अमर जैन अस्पताल के माध्यम से वे सेवा का अनूठा कार्य कर रहे थे। संत-सतियों तथा संघ-समाज-सेवा में भी वे तत्पर रहे। उनके ज्येष्ठ पुत्र उत्तमचन्द डागा भी पिता के पदचिह्नों पर चलकर संघ एवं समाज के साथ चिकित्सा क्षेत्र के सेवा में भी अग्रणी भूमिका का निर्वहन कर रहे हैं। लालभवन में दिवंगत सुश्रावक श्री डागा जी को १५ जुलाई को श्रद्धांजलि सभा में अनेक गणमान्य लोगों ने उनके व्यक्तित्व पर प्रकाश डाला।

नालासोपारा (मुम्बई)- सुश्राविका श्रीमती संगीता जी लोढ़ा धर्मपत्नी श्री मुकेश जी

लोढ़ा का ३० वर्ष की अल्पायु में ५ जुलाई ०८ को स्वर्गवास हो गया। देव, गुरु एवं धर्म तथा आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. के प्रति समर्पित श्राविका प्रतिदिन सामायिक एवं स्वाध्याय करती थी। आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड की सातवीं कक्षा में उन्होंने भारत में तीसरा स्थान प्राप्त किया था। *-श्रीमती लीला पीपाड़ा, अध्यक्ष महिला मण्डल*

रायचूर- सुश्रावक श्री मोहनलाल जी संचेती का हृदयगति रुक जाने से २४ मई ०८ को देहावसान हो गया। आप व्यापार से निवृत्ति लेकर स्वाध्याय एवं धार्मिक क्रियाओं में प्रवृत्त रहते थे तथा शेष समय का सामाजिक कार्यों में सदुपयोग करते थे। पूज्य आचार्यप्रवर श्री हस्तीमल जी म.सा. के सन् १९८१ के रायचूर चातुर्मास में आपने अच्छा धर्म लाभ लिया। आप यहाँ पर स्वाध्याय संघ के पहले उपाध्यक्ष एवं फिर अध्यक्ष रहे। श्री वर्द्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ के विभिन्न पदों पर भी रहे।

कोलकाता- डॉ. पानमल जी सुराणा का ५ जून २००८ को देहावसान हो गया। जोधपुर के मूल निवासी श्री सुराणा जी अच्छे स्वाध्यायी एवं लेखक थे। जिनवाणी में उनके अनेक लेख प्रकाशित हुए। वे अपने पीछे धर्मनिष्ठ परिवार छोड़कर गए हैं। अभी परिवारजन भुवनेश्वर में रहते हैं।

जोधपुर- सुश्राविका श्रीमती कमलादेवी जी लोढ़ा धर्मपत्नी श्री गणपतलाल जी लोढ़ा का १४ जुलाई ०८ को स्वर्गगमन हो गया। आप धर्मनिष्ठ श्राविका थी। आप ज्ञानगच्छ सम्प्रदाय के श्री सुकनमुनि जी म.सा. की पुत्रवधू थी। आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा., उपाध्याय श्री मानमुनि जी म.सा. प्रभृति संत-सतीवृन्द के प्रति आपकी दृढ़ श्रद्धा-भक्ति थी। आप अपने पीछे भरापूरा परिवार छोड़कर गई है।

रायचूर- श्री अशोक कुमार जी दफ्तरी का १ जुलाई ०८ को देहावसान हो गया। आप सेवाभावी, मिलनसार, सरल एवं धार्मिक प्रवृत्ति के व्यक्ति थे।

मलकापुर- सुश्राविका सौ. प्रमिलादेवी नाहर धर्मपत्नी श्री नवीनचन्द जी नाहर का १९ जून २००८ को स्वर्गवास हो गया। वे धर्मनिष्ठ थी।

दिल्ली- चाँदनी चौक क्षेत्र के सुश्रावक श्री पन्नालाल जी नाहटा का १४ मई २००८

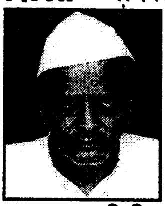

को आकस्मिक निधन हो गया। आपके निधन से २१ दिन पूर्व ही आपकी सहधर्मिणी श्रीमती विमलादेवी जी नाहटा का निधन हो गया था। जरूरतमंदों की सेवा एवं पशु-पक्षियों के प्रति दयाभाव हेतु आप सदैव तत्पर रहे। आपने ३० वर्ष पूर्व शीलव्रत का नियम लिया था तथा प्रतिदिन ५ सामायिक किया करते थे। आपके बड़े सुपुत्र श्री विनयकुमार जी जैन चार्टर्ड अकाउण्टेण्ट होने के साथ अनेक संस्थाओं से सक्रिय रूप से जुड़े हुए हैं।

जलगाँव- सुश्रावक श्री पन्नालाल जी भण्डारी का २१ जून ०८ को निधन हो गया।

आप ८२ वर्ष की वय में भी स्वाध्याय एवं लेखन में सन्नद्ध थे। उनकी आनन्दघन-चौबीसी विवेचन आदि पुस्तकें प्रकाशित हैं। समाज की ओर से उन्हें मानपत्र देकर तथा भारतीय जैन संघटना के द्वारा 'साहित्य रत्न' उपाधि से सम्मानित किया गया।

बजरिया- श्रद्धानिष्ठ सुश्राविका श्रीमती अंजनी देवी धर्मपत्नी स्व. श्री गजानन्द जी

जैन का ८० वर्ष की उम्र में दिनांक २.७.०८ को स्वर्गगमन हो गया। सुश्राविका जी प्रतिदिन सामायिक-साधना में लीन रहती थी। आपके ४० वर्षों से रात्रि चौविहार-त्याग था। सभी साधु-साध्वियों के सेवा और दर्शन को वे आतुर रहती थी। आपने ४ वर्ष तक वर्षीतप किया तथा अन्य तपश्चर्याएँ भी की।

जोधपुर- श्रद्धानिष्ठ-धर्मनिष्ठ तपसाधिका श्रीमती उगमकंवर जी सर्राफ धर्मपत्नी

सुश्रावक स्व. श्री मोहनराज जी सर्राफ का ९२ वर्ष की आयु में १० जुलाई २००८ को देहावसान हो गया। सुश्राविका का जीवन धर्ममय था। १७ वर्ष की आयु से रात्रि चौविहार-त्याग करने वाली श्राविका ने जमीकन्द के त्याग कर दिये। उन्होंने छः वर्षीतप किए एवं ग्यारह, नौ, अठाई की अनेक तपश्चर्याएँ की। सुदीर्घ आयु में श्राविकारत्न ने सजगता से अन्तिम श्वांस ली। जीवन पर्यन्त उन्हें कोई बड़ी बीमारी तक नहीं हुई। वे सदा प्रसन्न रहने वाली थीं। वे स्वाध्याय संघ के संयोजक श्री चंचलमल जी चोरडिया की दादी सास थीं।

जयपुर- श्रद्धानिष्ठ सुश्रावक श्री उमरावचन्द जी संचेती सुपुत्र श्री दौलतचन्द जी संचेती (अजमेर वाले) का २२ जुलाई २००८ को निधन हो गया।

चेन्नई- धर्मनिष्ठ सुश्राविका श्रीमती कमला जी चोरडिया धर्मपत्नी स्व. श्री फतेहचन्द

जी चोरडिया का ७१ वर्ष की आयु में १७ मई २००८ को संथारे के साथ स्वर्गवास हो गया। केंसर जैसे असाध्य रोग से पीड़ित श्राविका ने अन्त समय तक स्मरण-भजन का अवलम्बन रखा। वे आचार्य श्री नानेश-आचार्य श्री रामेश के प्रति समर्पित थीं। अनेक तपश्चर्या करने वाली श्राविका का जीवन सरल था।

बालोतरा- सुश्रावक श्री अशोककुमार जी ठेलड़िया सुपुत्र स्व. श्री मोतीलाल जी

ठेलड़िया का दि. २०.६.२००८ को स्वर्गगमन हो गया। आपका जीवन सरलता, मृदुता, सहिष्णुता, उदारता जैसे सद्गुणों से ओतप्रोत था। परमश्रद्धेय उपाध्यायप्रवर के बालोतरा चातुर्मास में आपने सेवा-भक्ति एवं धर्माराधना का अपूर्व लाभ लिया।

राखी- सुश्रावक श्री महेन्द्रकुमार जी सिंघवी सुपुत्र श्री पारसमल जी सिंघवी का

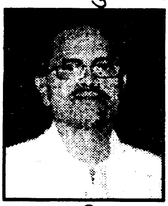

आकस्मिक देहावसान दि. २०.६.२००८ को हो गया। पारिवारिक सुसंस्कारों से संस्कारित आपका जीवन धर्मनिष्ठ था। उपाध्यायप्रवर के बालोतरा चातुर्मास में आपने सेवा-भक्ति एवं धर्माराधना का अपूर्व लाभ लिया।

गुवाहाटी- श्रद्धानिष्ठ सुश्राविका श्रीमती मोहनकंवर जी लोढ़ा धर्मपत्नी श्री

माणकमल जी लोढ़ा का ९ जुलाई २००८ को स्वर्गगमन हो गया। आप धर्मनिष्ठ, संघ-सेवी सुश्राविका थी। आप अनिल जी बोहरा (भूतपूर्व अध्यक्ष-अ.भा. श्री जैन रत्न युवक परिषद्) की सासूजी थी।

जोधपुर- श्री केवलचन्द जी पींचा सुपुत्र स्व. श्री भैरूलाल जी पींचा का १८ जुलाई को भोपालगढ़ में देहावसान हो गया। सामायिक-स्वाध्याय और साधना के प्रति उनका विशेष लगाव था। वे प्रतिदिन सामायिक-प्रतिक्रमण करते एवं प्रायः दिन में भी धर्मसाधना करते रहते थे। गुणग्राहकता, सरलता एवं धर्मनिष्ठता उनके विशेष गुण थे।

जोधपुर- संघसेवी सुज्ञ श्राविका श्रीमती रणकुबाई जी पींचा का १० जून ०८ को चेन्नई में स्वर्गगमन हो गया। ज्ञानक्रिया सम्पन्न संत-सतीवृन्द की सेवाभक्ति में उन्हें आनन्द आता था। सामायिक-स्वाध्याय और साधना के प्रति उनका विशेष लगाव था।

उपर्युक्त दिवंगत आत्माओं के प्रति सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जिनवाणी तथा अ.भा. श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए उनके परिवारजनों के प्रति गहरी संवेदना व्यक्त करते हैं।

साभार-प्राप्ति-स्वीकार

५००/- रुपये जिनवाणी पत्रिका की आजीवन-सदस्यता हेतु प्रत्येक

११५६१ श्री बाबूलाल जी जैन, निझर, तापी (गुजरात)
११५६२ Shri Lalit ji Jain, Kandiwali (East), MUMBAI (M.H.)
११५६४ श्री रोहित जी बुबकिया, भिश्तियों का बास, जोधपुर (राजस्थान)
११५६५ श्री प्रकाशमल जी लुणावत, धानमंडी, मेन रोड, जोधपुर (राजस्थान)
११५६६ श्री मूलचन्द जी हुण्डिया (घी वाला), मोहनपुरा, जोधपुर (राजस्थान)
११५६७ श्री पुनवानचन्द जी ओस्तवाल, पावटा चौराया, जोधपुर (राजस्थान)
११५६८ Shri Mukesh Kumar ji Jain, VISHAKAPATTANAM (A.P.)
११५६९ श्री गुमानमल जी खींचा,चौमू हाऊस तबेला,गुलाब पथ, सी-स्कीम, जयपुर (राज.)
११५७० श्री कांतिलाल जी जैन, ओसवाल सेरी, जैन भवन, शाजापुर (मध्यप्रदेश)
११५७१ श्री महेश चन्द जी जैन, सेक्टर नं. ३३ डी, चंडीगढ़ (पंजाब)
११५७६ श्री बस्तीमल जी कांकरिया, गोगेलाव, नागौर (राज.)
११५७७ श्री कांतिचन्द जी जैन, चौथी बी रोड, सरदारपुरा, जोधपुर (राज.)
११५७८ श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ, गढ सिवाना, बाड़मेर (राज.)
११५७९ श्री दीपचन्द जी मेहता, मेघरथ अपार्टमेन्ट, भदार रोड, सूरत (गुजरात)
११५८० Shri T. R. Daga ji, Borivali (West), MUMBAI (M.H.)
११५८१ श्री सूरजमल जी कांकरिया, अमर नगर, पाल रोड, जोधपुर (राजस्थान)
११५८२ श्री सुरेन्द्र कुमार जी जैन (पी.टी.आई.), घोसगना, कठुमर, अलवर (राजस्थान)
११५८३ Smt. Manju ji Kastiya, Ravindra Sarni, KOLKATA (W.B.)
११५८४ श्रीमती लीला जी लोढ़ा, लाजपत नगर, जगतपुरा, जयपुर (राजस्थान)
११५८५ श्री देवेन्द्र कुमार जी जैन, हाइवे रोड़, मलाड (वेस्ट), मुम्बई (महाराष्ट्र)
११५८६ श्री चमनलाल जी पामेचा, बेदला रोड़, बड़गाँव, उदयपुर (राजस्थान)
११५८७ श्री अनिल कुमार जी शाह, विवेकानंद कॉलोनी, उज्जैन (मध्यप्रदेश)
११५८८ Shri Praveen M. Khinvsara, SATANA, Nasik (M. H.)
११५८९ श्री भोलाचन्द जी जैन, रोहिणी, नई-दिल्ली
११५९० Shri Rajendra ji Bhandari, Salisbury Park, PUNE (M.H.)
११५९१ Shri Sayarmal ji Surana, Jagoria, KOLKATA (W.B.)
११५९२ Shri Rounak ji Lodha, NALASOPARA, Vasai, Thane (M.H.)

श्री आर. पदमचन्द जी बाघमार, चेन्नई के सौजन्य से

११५६३ श्रीमती वेला जी बी. चेड़ा, मलाड (पश्चिम), मुम्बई (महाराष्ट्र)

श्री लाभचन्द जी कोठारी, जयपुर के सौजन्य से

११५७२ श्री प्रदीप जी नाहर, साई मंदिर के पास, यवतमाल (महाराष्ट्र)

११५७३ श्री राजेश कुमार जी जैन, कास्टिया गली, पीपलिया बाजार, ब्यावर, अजमेर (राज.)

११५७४ श्री सम्पतलाल जी जैन (गादिया), गोरखपुर, जबलपुर (मध्यप्रदेश)

११५७५ श्री सुरेश कुमार जी खारीवाल, तेजा कॉलोनी, रतलाम (मध्यप्रदेश)

जिनवाणी हेतु साभार

५१,१११/- श्री गणेशमल जी भण्डारी सुपुत्र श्री सुगनचन्द जी भण्डारी(निमाज वाले) बैंगलोर, अपनी लाडली सुपुत्री सौ.कां. ममता का मंगल परिणय शाह श्री विमलचन्द जी धोका के सुपौत्र चि. बिपिनजी (सुपुत्र श्री सुभाषचन्द जी धोका, मैसूर) के साथ दिनांक ०८.०७.२००८ को बैंगलोर में सानन्द सम्पन्न होने की खुशी सप्रेम भेंट।

२१०००/- श्री टीकमचन्द जी हीरावत, मुम्बई की ओर से श्रीमती नीता धर्मपत्नी श्री राजीव जी डागा (अमेरिका निवासी) के तेले की तपस्या के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

२५११/- श्री चम्पालाल जी छाजेड़, शोरापुर(कर्नाटक)की तरफ से श्रीमती ताराबाई जी छाजेड़ के सोने की सीढी चढ़ने के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

२५००/- श्री जेठमल जी रिखबदास जी पींचा, भोपालगढ़, जोधपुर की तरफ से अपने पूज्य पिताजी स्व.श्री केवलचन्द जी पींचा सुपुत्र स्व. श्री भेरूलाल जी पींचा का दिनांक १८.०७.२००८ एवं पूज्य माताजी स्व. श्रीमती रणकुबाई धर्मपत्नी स्व. श्री केवलचन्द जी पींचा का १०.०६.२००८ को स्वर्गवास हो जाने पर उनकी पूण्य स्मृति में भेंट।

२१००/- श्री अजीत कुमार जी चोरड़िया, चेन्नई अपनी मातुश्री श्रीमती कमला जी धर्मपत्नी स्व. श्री फतेहचन्द जी चोरड़िया का संथारे से महाप्रयाण दिनांक १७/०५/२००८ को हो जाने पर उनकी पुण्य स्मृति में भेंट।

११००/- श्री विमलचन्द जी धोका, मैसूर द्वारा अपने सुपौत्र चि. बिपिन जी सुपुत्र श्री सुभाषचन्द जी-श्रीमती ललिता जी धोका, मैसूर का शुभ विवाह सौ.कां. ममता जी सुपुत्री श्री गणेशमल जी भंडारी, बैंगलोर के संग दिनांक ०८.०७.२००८ को सम्पन्न होने की खुशी में सप्रेम भेंट।

११००/- श्री गणपतराज सा लोढ़ा, जोधपुर अपनी धर्मपत्नी स्व. श्रीमती कमला देवी जी लोढ़ा का स्वर्गवास दिनांक १४.७.२००८ को होने पर उनकी पावन स्मृति में भेंट।

११००/- श्रीमती शकुन्तला जी पारख, जोधपुर अपनी पूज्य माताजी स्व. श्रीमती मीमकंवर जी मोहनोत धर्मपत्नी स्व. श्री पूनमचन्द जी मोहनोत की पुण्य स्मृति में भेंट।

११००/- श्री नरेन्द्रमल जी, प्रकाश जी लोढ़ा, गुवाहाटी की तरफ से स्व. श्रीमती मोहन कंवर जी लोढ़ा धर्मपत्नी श्री माणकमल जी सा लोढ़ा का दिनांक ९.०७.२००८ को स्वर्गवास होने पर उनकी स्मृति में भेंट।

११००/- श्रीमती सुशीला जी जैन धर्मपत्नी श्री पी.सी. जैन(ए.वी.पी.-जे.के.सीमेण्ट

लिमिटेड),गोटन, अपने सुपुत्र श्री रविन्द्र जी जैन का अ.भा. चार्टेर्ड एकाउन्टेण्ट की अन्तिम परीक्षा में प्रथम प्रयास से उत्तीर्ण होने पर सी.ए. बनने की खुशी में भेंट।

१००१/- श्रीमती मधु-डॉ. धर्मचन्द जैन,जोधपुर, अपनी सुपुत्री सुश्री कनीनिका जैन की नियुक्ति मारवाड़ इन्स्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट, जोधपुर में व्याख्याता के रूप में होने तथा सुपुत्री सुश्री मधुरिका जैन के द्वारा हिण्डालको, रेणुकूट में इंजीनियर के पद पर कार्यभार ग्रहण करने के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

१००१/- कु. समता जी एवं हर्षद जी भंडारी सुपुत्र-सुपुत्री श्री दिलीप जी भंडारी, रत्नागिरि, रत्नवंश के सुश्रावक स्व. श्री सुगनचन्द भंडारी की तृतीय पुण्य तिथि दिनांक १७ अगस्त के स्मरणार्थ भेंट।

१०००/- श्री जबरचन्द जी खींवसरा (बिलाडा वाले), चेन्नई की ओर से श्री जबरचन्द जी खींवसरा का अन्तर्राष्ट्रीय ओपन विश्वविद्यालय, श्रीलंका द्वारा डाक्टरेट उपाधि से सम्मानित होने पर सप्रेम भेंट।

१०००/- श्री सी. मोहनलाल जी पोकरना, सोजत रोड़-पाली, श्री सी. मोहनलाल जी पोकरना एवं श्रीमती फेन्सी देवी जी पोकरना द्वारा मुम्बई चातुर्मास में परम पूज्य आचार्य भगवन्त के श्रीमुख से सजोड़े आजीवन शीलव्रत पालन के प्रत्याख्यान ग्रहण करने के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

५०१/- श्री सौभाग्यमल जी हरकचन्द जी जैन एवं परिवार (बीलोता वाले), अलीगढ़-टोंक। श्रीमती संतोषदेवी जी जैन एवं श्री सौभाग्यमल जी जैन द्वारा मुम्बई चातुर्मास में परम पूज्य आचार्य भगवन्त के श्रीमुख से सजोड़े आजीवन शीलव्रत पालन के प्रत्याख्यान ग्रहण करने के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

५०१/- श्री नरेन्द्रमोहन जी जिनेन्द्र कुमार जी जैन (श्यामपुरा वाले), सवाईमाधोपुर, सौ.कां. हेमलता जी का शुभ विवाह चि. पंकज जी सुपुत्र श्री माणकचन्द जी जैन, पंचाला के संग दिनांक ९ जुलाई,२००८ को सम्पन्न होने की खुशी में सप्रेम भेंट।

५०१/- श्री ओमप्रकाश जी जैन (बिलोपा वाले) नवसारी (गुजरात), अपने सुपुत्र अंशुल जैन एवं आशिष जैन के इंजीनियरिंग पूर्ण कर प्लेसमेन्ट होने के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

५००/- श्री शांतिलाल जी लोढ़ा (नाडसर निवासी), बैंगलोर, मुम्बई चातुर्मास में परम पूज्य आचार्य भगवन्त के पावन दर्शन वंदन की खुशी में सप्रेम भेंट।

५००/- श्री मोहनलाल जी संचेती, रायचूर का स्वर्गवास हो जाने की पुण्य स्मृति में पारिवारिक सदस्यों द्वारा भेंट।

५००/- कानकंवर जी एवं विजयमल जी मेहता, जोधपुर की सुपौत्री सुश्री निशा मेहता(सुपुत्री श्रीमती स्नेहलता व श्री रमेश जी मेहता) ने सीनियर सैकण्डरी परीक्षा ९०.४ प्रतिशत अंकों के साथ उत्तीर्ण की एवं C.P.T. परीक्षा जोधपुर में वरीयता सूची में दसवाँ स्थान प्राप्त होने के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

५००/- श्री दानमल जी प्रसन्नचन्द जी बाघमार, कुचेरा कलकता वाले,हाल मुकाम

लक्ष्मीनगर, जोधपुर की तरफ से साध्वी प्रमुखा शासन प्रभाविका महासती मैना सुन्दरी जी म.सा. के ६२ वीं दीक्षा तिथि के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

५००/- श्री सुमेरचन्द जी सिंघवी, जोधपुर की तरफ से अपने पूजनीय माताश्री स्व. श्रीमती कल्याण कंवर जी धर्मपत्नी स्व. श्री उम्मेदचन्द जी सिंघवी की अष्टम पुण्यतिथि पर भेंट।

५००/- श्री पदमराज जी सा भंडारी,जोधपुर के तरफ से अपने सुपौत्र श्री मोहित जी भंडारी सुपुत्र श्रीमती मीना जी एवं श्री विरेन्द्र राज सा भण्डारी का देवो कम्पनी, दुबई में सहायक अभियन्ता के पद पर चयन होने की खुशी में सप्रेम भेंट।

जीवदया हेतु साभार

२१००/- श्री सी. मोहनलाल जी पोकरना, सोजत रोड़-पाली, श्री सी. मोहनलाल जी पोकरना एवं श्रीमती फेन्सी देवी जी पोकरना द्वारा मुम्बई चातुर्मास में परम पूज्य आचार्य भगवन्त के श्रीमुख से सजोड़े आजीवन शीलव्रत पालन के प्रत्याख्यान ग्रहण करने के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

११२१/- श्री सुरेन्द्र जी लोढ़ा, मुम्बई की ओर से अपनी पूज्या माता जी श्रीमती पुष्पा जी लोढ़ा की पुण्य स्मृति में भेंट।

१००१/- कु. समता जी एवं हर्षद जी भंडारी सुपुत्र-सुपुत्री श्री दिलीप जी भंडारी, रत्नागिरि, रत्नवंश के सुश्रावक स्व. श्री सुगनचन्द भंडारी की तृतीय पुण्य तिथि दिनांक १७ अगस्त के स्मरणार्थ भेंट।

५०१/- श्री अनिलकुमार जी जैन,मानसरोवर-जयपुर, की धर्मपत्नी श्रीमती ललिता जी जैन के पंचोले की तपस्या महासती श्री रतनकंवर जी म.सा. आदि ठाणा के सान्निध्य में सम्पन्न होने की खुशी में भेंट।

५००/- श्रीमती प्रकाशवती जी जैन, सुनाम-पंजाब द्वारा सुश्रावक श्री दीपचन्द जी सुपुत्र श्री रलाराम जी का ८४ वर्ष की आयु में २२ घंटे के तिविहार संथारे सहित दिनांक ०४.०५.२००८ को महाप्रयाण हो जाने पर उनकी पुण्य स्मृति में भेंट।

श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर को प्राप्त साभार

११०००/- श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ, गुवाहटी की तरफ से सप्रेम भेंट।

२१००/- श्री माणकचन्द जी ललितकुमार जी चौपड़ा, बालोतरा की तरफ से सप्रेम भेंट।

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड को प्राप्त साभार

११००/- श्री डुंगरचन्द जी, बालचन्द जी भूरट, जलगांव(महा.), उपाध्यायप्रवर एवं साध्वी प्रमुखा जी के दर्शन करने के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

१०००/- श्री ज्ञानचन्द जी बाघमार, चैन्नई, पुस्तकों के लिए सहयोग हेतु भेंट।

५००/- श्री भंवरलाल जी, प्रकाशचन्द जी, नरेशजी, निर्भय जी हुंडीवाल, जलगाँव, उपाध्यायप्रवर एवं साध्वी प्रमुखा जी के दर्शनों के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

५००/- श्री शांतिलालजी, कमलचंद जी चौधरी चिंतादरीपेठ, चैन्नई, उपाध्यायप्रवर एवं साध्वी प्रमुखा जी के दर्शनों के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

५००/- श्री घीसूलाल जी तालेड़ा, चिदम्बरम, पुस्तकों में सहयोग हेतु भेंट।

३००/- श्रीमती इन्द्राजी पोकरणा, चिदम्बरम, पुस्तकों में सहयोग हेतु भेंट।

२००/- श्रीमती पिस्ताजी दुनीवाल, चिदम्बरम, पुस्तकों में सहयोग हेतु भेंट।

२००/- श्रीमती सुनीता जी सिसोदिया, चिदम्बरम, पुस्तकों में सहयोग हेतु भेंट।

साहित्य प्रकाशन हेतु साभार

८५०००/- श्री प्रेमचन्द जी गाँधी, दिल्ली पुस्तक हीराप्रवचन पीयूष भाग-४ के प्रथम संस्करण के प्रकाशन हेतु आर्थिक सहयोग प्राप्त हुआ है।

भूलसुधार

माह जुलाई २००८ के अंक पृष्ठ १०६ पर प्रकाशित अ.भा.श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ को प्राप्त अर्थ सहयोग में श्री शांतिलाल जी बागरेचा, हैदराबाद के स्थान पर इस प्रकार से पढ़ा जावे-

५१०००/- श्री उत्सवराज जी सालेचा, हुबली की ओर से सुश्री डिम्पल जी सालेचा की दिनांक ०७.०५.२००८ को मुम्बई में आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. के मुखारविंद से भागवती दीक्षा सानन्द सम्पन्न होने की खुशी में भेंट।

माह जुलाई २००८ के अंक पृष्ठ १०७ पर प्रकाशित गजेन्द्र निधि द्वारा संचालित आचार्य हस्ती मेधावी छात्रवृत्ति योजना को प्राप्त अर्थ सहयोग में श्री धनपत जी भंडारी, मुम्बई के स्थान पर इस प्रकार से पढ़ा जावे :-

२,५२,०००/- श्री धनपत जी भंसाली (सी.ए.), मुम्बई।

आवश्यक सूचना

जिनवाणी के आजीवन सदस्यों में से जिन सदस्य महानुभावों का निधन हो गया है, कृपया उसकी सूचना लिखित में इस कार्यालय को भिजवाने की कृपा करावें।

-मन्त्री सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, बापू बाजार, जयपुर

आगामी पर्व

भाद्रपद कृष्णा ८	रविवार, २४.०८.२००८	अष्टमी
भाद्रपद कृष्णा १२	गुरुवार, २८.०८.२००८	पर्युषण महापर्व प्रारम्भ
भाद्रपद कृष्णा १४	शुक्रवार, २९.०८.२००८	चतुर्दशी
भाद्रपद कृष्णा ३०	शनिवार, ३०.०८.२००८	पक्खी
भाद्रपद शुक्ला ५	गुरुवार, ४.०९.२००८	संवत्सरी महापर्व
भाद्रपद शुक्ला ८	रविवार, ७.०९.२००८	अष्टमी
भाद्रपद शुक्ला ८	सोमवार, ८.०९.२००८	अष्टमी
भाद्रपद शुक्ला १४	रविवार, १४.०९.२००८	चतुर्दशी, पक्खी

जयगुरु हस्ती जयगुरु हीरा जयगुरु मान

कर्म निर्जरा का प्रबल साधन।
स्वास्थ्य वर्धक है पानी धोवन॥

With Best Compliments From :

SURANA
INDUSTRIES LIMITED

SIL

Manufacturers & Exporters of

Symbolises the Aspiration of Discerning Steel Buyers !

Premium Quality Steels, viz., HSD/CTD Bars, MS Rounds Structurals Like Flats, Channels Angles and Squares

Always Use SURANA STEELS to
Highlight your House/Industry

Regd. Cum Corporate Head Office
29, Whites Road, II Floor Royapettah, Chennai-600 014
Grams : **GURUHASTI**
Phone : 28525127 (3 Lines) Fax : 044 28521143
E-mail : suranast@vsnl.com
Website : www.suranaind.com

Works

F-67, 68 & 69 SIPCOT Industrial Complex
Gummidipoondi 601 201, Tiruvallur Dist. Tamilnadu
Ph.: 954119 222881 Telefax : 954119222880

Sales Yard

30, G.N.T. Road, Madhavaram, Chennai 600 110
Ph.: 25375531/32/33 Fax : 044 25375400

जयगुरु हस्ती जयगुरु हीरा जयगुरु मान

छोटा सा नियम धोवन का।
लाभ बड़ा इसके पालन का।।

परस्परोपग्रहो जीवानाम्

With Best Compliments From :

पारसमल सुरेशचन्द कोठारी

परस्परोपग्रहो जीवानाम्

प्रतिष्ठान

KOTHARI FINANCERS

27, Chandrappan Street
Chennai-600079 (T.N.) • Ph.# 42738436, 25298130

Branches :

Bhagawan Motors
Chennai-53, Ph.# 26251960

❖❖❖

Bhagawan Cars
Chennai-53, Ph.# 26243455/66

❖❖❖

Balaji Motors
Chennai-50, Ph.#26247077

❖❖❖

Padmavati Motors
Jafar Kan Peth, Chennai, Ph.#24854526

जयगुरु हस्ती जयगुरु हीरा जयगुरु मान

प्यास बुझाये,
कर्म कटाये,
फिर क्यों न अपनायें
– धोवन पानी

Prithvi Exchange

A DIVISION OF PRITHVI SOFTECH LIMITED

33, Montieth Road, Egmore, Chennai-600008

Phone : 044-28553185, 42145478, 09381041097

जयगुरु हस्ती जयगुरु हीरा जयगुरु मान

A GLASS OF WATER WILL MAKE YOUR KARMA QUARTER
- धोवन पानी -

GURU HASTI GOLD PALACE
(Govt. Authorised Jewellers) (916. KDM)
22 Ct. Gold ! 24 Ct. Trust !

&

P. MANGILAL HARISH KUMAR KAVAD
No. 4, 5 Car Street, Poonamallee, CHENNAI-600056
Hello-Hello
044-26272609, 55666555, 26272906, 55689588

अनछाना पानी-BAD। BAD।।
बिस्लरी पानी-OK। OK।।
छाना हुआ पानी-GOOD। GOOD।।
धोवन पानी-BEST। BEST।।

जयगुरु हस्ती जयगुरु हीरा जयगुरु मान

सहजता में धर्म का आधार।
धोवन पानी प्रथम आचार।।

Narendra Hirawat & Co.

Flat No. 1, Building No. 2, Navjeevan Society,
Senapati Bapat Marg, Matunga (West), MUMBAI-400016

Trin-Trin

Matunga Office : 022-24370713, 24380713, 66669707
Opera House Office : 022-30034282, 23669818
Mobile : 098210-40899

रत्नसंघ की विभिन्न संस्थाओं के प्रमुख पदाधिकारी

१.	**संयोजक-संरक्षक मण्डल**	022-30645000/23648004
	श्रीमान् मोफतराज जी मुणोत, मुम्बई	09820072724
२.	**संयोजक-शासन सेवा समिति**	
	श्रीमान् रतनलाल सी. बाफना, जलगाँव	0257-2225903/09823076551
३.	**गजेन्द्र निधि/गजेन्द्र फाउण्डेशन**	
	अध्यक्ष-श्रीमान् नवरतन जी कोठारी, मुम्बई	022-23673939/23698880
४.	**अ.भा. श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, जोधपुर**	**0291-2636763**
	अध्यक्ष-श्रीमान् सुमेरसिंह जी बोथरा, जयपुर	0141-2620571 09414048830/09314048830
	कार्याध्यक्ष-श्रीमान् ज्ञानेन्द्र जी बाफना, जोधपुर	0291-2434355/09414093147
	महामंत्री-श्रीमान् नवरतन जी डागा, जोधपुर	0291-2654427/09828032215
५.	**सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जयपुर**	**0141-2575997, 2570753**
	अध्यक्ष-श्रीमान् पी. शिखरमल जी सुराणा, चेन्नई	044-25380387/25391597 09884430000
	कार्याध्यक्ष-श्रीमान् नवरतन जी भंसाली, बैंगलोर	080-22265957/09844158943
	कार्याध्यक्ष-श्रीमान् आनन्द जी चौपड़ा, जयपुर	0141-3233318/09414090931
	मंत्री- श्रीमान् प्रेमचन्द जी जैन, जयपुर	0141-2212982/09413453774
६.	**अ.भा. श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल, जोधपुर**	**0291-2636763**
	अध्यक्ष-श्रीमती (डॉ.) मंजुला जी बम्ब, जयपुर	0141-3292229/09314292229
	कार्याध्यक्ष-श्रीमती मधु जी सुराणा, चेन्नई	044-25293001/42765646
	मंत्री-श्रीमती आशा जी गांग, जोधपुर	0291-2544124
७.	**अ.भा. श्री जैन रत्न युवक परिषद्, जोधपुर**	**0291-2641445**
	अध्यक्ष-श्रीमान् कुशल जी गोटेवाला, सवांईमाधोपुर	07462-233550/09414315098
	कार्याध्यक्ष-श्रीमान् प्रमोद जी हीरावत, जयपुर	0141-2742665/09314507303
	कार्याध्यक्ष-श्रीमान् बुधमल जी बोहरा, चेन्नई	044-26425093/09444235065
	महासचिव-श्रीमान् महेन्द्र जी सुराणा, जोधपुर	0291-2546501/09414921164
८.	**श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर**	**0291-2624891**
	संयोजक-श्रीमान् चंचलमल जी चोरडिया, जोधपुर	0291-2621454/09414134606
	सचिव-श्रीमती मोहनकौर जी जैन, जोधपुर	0291-3296033/09351590014
९.	**अ.भा. श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर**	**0291-2630490**
	संयोजक-श्रीमती सुशीला जी बोहरा, जोधपुर	0291-5108799/09414133879
	सचिव-श्रीमान् राजेश जी कर्णावट, जोधपुर	0291-2549925/09414128925
१०.	**अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक संस्कार केन्द्र, जोधपुर**	**0291-2622623**
	संयोजक-श्रीमती विमला जी मेहता, जोधपुर	0291-2435637/09351421637
	सचिव-श्रीमान् सुभाष जी हुण्डीवाल, जोधपुर	0291-2555230/09460551096

JAI GURU HASTI JAI GURU HEERA JAI GURU MAAN

NO PAIN - ONLY GAIN – पियें धोवन पानी

With best compliments from:

SOHANLAL UMEDRAJ SURENDER HUNDIWAL

S.UMEDRAJ JAIN (HUNDIWAL)
098407 18382
2027 'H' BLOCK 4th STREET,12TH MAIN ROAD,
ANNA NAGAR, CHENNAI-600040
044-32550532

BRANCHES

APPOLO BRIGHT STEELS PVT LTD.
S.P.59, 3 rd MAINROAD
AMBATTUR ESTATE CHENNAI-600058
044-26258734, 9840716053, 98407 16056
FAX: 044-26257269
E-MAIL: appolobright@yahoo.com

APPOLO CORRUGATORS PVT LTD.
NO.400 NORTH PHASE, SIDCO INDUSTRIAL ESTATE,
AMBATTUR CHENNAI-60098
FAX: 044-26253903, 9840716054
E-MAIL:appolocorrugators@yahoo.com

SAPNA PACKAGING INDUSTRIES
NO.410 NORTH PHASE INDUSTRIAL ESTATE
AMBATTUR, CHENNAI-600098
044-26241041

PENINSULAR PACKAGINGS
NO.25 SIDCO INDUSTRIAL ESTATE
AMBATTUR CHENNAI-600098
044-26250564

आर.एन.आई. नं. 3653/57
डाक पंजीयन संख्या RJ/JPC/M-018/2006-08
वर्ष : 65 ★ अंक : 8 ★ मूल्य : 10 रु.
15 अगस्त, 2008 ★ श्रावण सं. 2065

धोवन पानी - निर्दोष जिन्दगानी

Stop existing.
Start Living.

Kalpataru brings you residences that embody the essence of lifestyle living. A space you will be proud to call home.

KALPATARU AURA
L.B.S. Road, **Ghatkopar (W)**

KALPATARU ESTATE
On Jogeshwari-Vikhroli Link Road, **Andheri (E)**

KAMDHENU
At Hari Om Nagar, **Mulund (E)**

SIDDHACHAL
Pokhran Road No.2, **Thane (W)**

KALPA-TARU®

101, Kalpataru Synergy, Opposite Grand Hyatt, Santacruz (E), Mumbai 400 055
Tel: 3064 3065, Fax: 3064 3131. E-mail: sales@kalpataru.com. Visit: www.kalpataru.com

Properties professionally managed by PROPERTY SOLUTIONS (I) PVT. LTD. www.propertysolutions.co.in

स्वामी-सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के लिये मुद्रक संजय मित्तल द्वारा दी डायमण्ड प्रिंटिंग प्रेस, एम.एस.बी. का रास्ता, जौहरी बाजार, जयपुर से मुद्रित एवं प्रकाशक प्रेमचन्द जैन, बापू बाजार, जयपुर से प्रकाशित। सम्पादक डॉ. धर्मचन्द जैन।